ज्योतिष और जन्मलग्न



प्रकाशक :
डॉ० चमनलाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब वेदनगर
बरेली २४३००३ (उ० प्र०)
फोन : ७४२४२

□

संशोधित संस्करण
१९८६

□

□

मुद्रक :
कान्ता प्रिंटिंग प्रेस
जनरल गंज, मथुरा

□

मूल्य :
छः रुपये मात्र

दो शब्द

ज्योतिष का विषय गम्भीर भी है और सरल भी। जो लोग इस विषय में जानते हैं, उनके लिए सरल होते हुए भी कभी-कभी सिर-दर्द बन जाता है और वे गणित के चक्कर में पड़कर स्वयं भी कोई सही निर्णय लेने में असफल रह जाते हैं।

यद्यपि गणितज्ञों के लिए गणित का चक्कर अधिक परेशान नहीं कर पाता और वे देर-अबेर सही निष्कर्ष तक पहुँचने में सफल हो जाते हैं तथापि गणित में सभी पारगत नहीं होते और जो जानकर होते भी हैं, वे उसमें माथापच्ची करने से घबराते हैं। इस कारण प्रश्नकर्त्ताओं को समाधान मिलने में बहुत कठिनाई होती है।

आज का युग सरलता पसन्द (ईजी गोइङ्ग) है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसको भाग्य-फल-निर्देश विषयक जानकारी होनी चाहिए परन्तु, वह उसमें न तो अधिक समय देना चाहता है और न ज्योतिषियों के घरों के अधिक चक्कर काटने की ही क्षमता रखता है। फल यह होता है कि उसकी जिज्ञासा अधूरी ही रह जाती है।

उस स्थिति में आवश्यक होता है कि सरलता से जानकारी प्राप्त करने की कोई ऐसी विधि हो जो इस विषय को कम समझने वाले व्यक्तियों के भाग्यफल का ज्ञान सुलभ कर सके और वैसा ज्ञान बिना किसी पुस्तक के कठिन ही है।

प्रस्तुत पुस्तक 'ज्योतिष और जन्म लग्न' का प्रणयन उक्त उद्देश्य के साथ ही हुआ। पाठकों को बहुत समय से माँग थी इस प्रकार की कोई पुस्तक प्रकाशित की जाय। उसे देखते हुए पर्याप्त परिश्रम के पश्चात् इस पुस्तक को पाठकों के समक्ष लाया जा सका है।

नक्षत्रों के द्वारा राशियों का निर्माण होता है। नक्षत्र सत्ताईस हैं जो बारह राशियों को बनाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक राशियों सवा दो नक्षत्रों का समावेश रहता है। लग्न कुण्डली का निर्माण उन बारह राशियों के बारह घर मान कर ही हुआ है, जिन पर नवग्रह अपने प्रभावानुसार अधिकार करने में सफल रहते हैं,इस प्रकार राशियों और ग्रहों के योग मनुष्य के भाग्य को बहुत कुछ अपने अधिकार में रखते हैं।

यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक ग्रह अपने बैंठने के लिए किसी ऐसे ही घर को चुने, जो खाली हो वरन् वह चाहे तो उस में भी बैंठ सकता है, जिसमें अन्य कोई ग्रह बैंठा हो। इस प्रकार ही घर में कई-कई ग्रह एक साथ बैंठ सकते हैं, वे चाहें परस्पर में शत्रु ही क्यों न हों।

यदि एक में दो ऐसे क्रूर ग्रह बैंठे हैं जो परस्पर मित्र हैं तो वे दोनों मिलकर एक जैसा फल प्रकट करेंगे, किन्तु वह फल दो ग्रहों के मिलने से दुगुना शक्तिशाली हो जायगा।

किन्तु एक ही घर में दो ग्रह बैंठे हों जो परस्पर में शत्रु और मित्र हों तो बहुत कठिनाई होगी। उनमें से एक कोई कार्य करेगा, तो दूमरा उस कार्य को नष्ट कर डालेगा। इस प्रकार ऐसे दो ग्रहों का जिनका परस्पर में बैर हो, एक घर में बैंठना अशुभ समझा जाता है।

इस प्रकार की अनेक जानकारियाँ इस पुस्तक में दी गई हैं, जो कि भाग्य का निष्कर्ष निकालने में बहुत आवश्यक होंगी तथा और भी ऐसे तथ्यों का इस पुस्तक में यथा स्थान वर्णन किया गया है, जिनका ज्ञान होने पर सही निष्कर्ष निकालने में कठिनाई नहीं होगी। इसके लेखन कार्य में "कविराज दाऊदयाल गुप्त ने जो सहयोग दिया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। हमें विश्वास है कि पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

विषय-सूची

१—मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण

२—नक्षत्रों और राशियों का योग

३—नक्षत्र विषयक आवश्यक ज्ञान

४—राशि, नक्षत्र और नामानुसार फल

५—लग्नों में शुभाशुभ ग्रहों का ज्ञान

६—ग्रहों के स्थानानुसार प्रभाव

७—सूर्य का शुभाशुभ फल-निर्देश

८—चन्द्रमा का शुभाशुभ फल-निर्देश

९—मंगल का शुभाशुभ फल-निर्देश

१०—बुध का शुभाशुभ फल-निर्देश

११—गुरु का शुभाशुभ फल-निर्देश

१२—शुक्र का शुभाशुभ फल-निर्देश

१३—शनि का शुभाशुभ फल-निर्देश

१४—राहु का शुभाशुभ फल-निर्देश

—•—

ज्योतिष और जन्म लग्न

मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण

मनुष्य जीवन में जन्म लग्न का महत्व सर्वोपरि है। जीवन पर्यन्त जन्म लग्न का प्रभाव बना रहता है। उसी के आधार पर सभी प्रकार के फलादेश निर्भर करते हैं।

जन्म लग्न मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। यदि उसके विषय में सही जानकारी हो तो फलादेश निश्चित करने में सरलता रहती है। सही जानकारी से तात्पर्य उस घड़ी, पल आदि से है, जिसमें जातक का जन्म हुआ।

सही समय से सही फलादेश

यदि घड़ी, पल आदि के विषय में गलत जानकारी रहती है तो फलादेश भी गलत हो सकता है। मान लीजिए कि किसी का जन्म सायंकाल ६ बजे हुआ है और आपको यह ध्यान रहता है कि उसका जन्म पौने छः बजे अथवा सवा छः बजे हुआ है तो वह १५ मिनट का अन्तर ही फलादेश में परिवर्तन ला सकता है।

उसका कारण नक्षत्र का बदल जाना है। उदाहरणार्थ पौने छः बजे चित्रा नक्षत्र था, किन्तु हो सकता है कि वह १०-१५ मिनट में बदलने वाला हो तो ६ बजे स्वाति नक्षत्र हो सकता है।

इसी प्रकार यदि चित्रा नक्षत्र छः बजे बाद तक रहता है तो संभव है कि सवा छः बजे तक वह बदल जाय । इस प्रकार प्रथम स्थिति में जातक का जन्म स्वाति नक्षत्र में होते हुए भी चित्रा नक्षत्र में हुआ मान लिया जाता है तथा दूसरी स्थिति में १५ मिनट बाद जन्म होना मान लेने पर जन्म नक्षत्र चित्रा होते हुए भी स्वाति नक्षत्र समझ लिया जाता है ।

तो ऐसी स्थिति में १५ मिनट का अन्तर जन्म नक्षत्र में परिवर्तन उपस्थित कर सकता है । १५ मिनट को ही क्यों, २-४ मिनट का अन्तर भी फलादेश को बिल्कुल बदल सकता है ।

जन्म और भाग्य लग्न

इस प्रकार सही जन्म लग्न ही जातक की भाग्य लग्न है । जीवन में आने वाले सभी उतार-चढ़ाव, सभी दुःख-सुख जन्म लग्न पर निर्भर करते हैं ।

इस लग्न में वह शक्ति है कि निर्धन परिवार में उत्पन्न हुआ मनुष्य भी अपने जीवन में अत्यन्त वैभवशाली और यशस्वी हो सकता है । जन्म लग्न का कोई भी रोग रंक को राजा और राजा को रंक बनाने में पूर्ण रूप से समर्थ है ।

अनेक व्यक्तियों को देखते हैं जो अत्यन्त सम्पन्न, अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवारों में उत्पन्न हुए किन्तु वयस्क होते-होते अथवा वयस्क होने के बाद कंगाल हो गए । बहुत से व्यक्ति तो ऐसे होते हैं, जिनका जन्म होते ही घर में कंगाली आने लगती है और वह घर ही गरीब हो जाता है।

इसका कारण वह जन्म लग्न ही है, जिसमें वह बालक उत्पन्न हुआ और उसके प्रभाव से हरा-भरा सम्पन्न घर कंगाली के चंगुल में फँसकर बर्बाद हो गया ।

परन्तु, इस कंगाली में अकेले जातक के जन्म लग्न का ही प्रभाव नहीं होता, वरन् घर के उन सभी सदस्यों के जन्म लग्नों का भी प्रभाव होता है, जिनके लग्नानुसार उस-उस आयु में पहुँचने पर उन सबको कंगाली का सामना करना पड़ा ।

बहुत से दम्पत्तियों को देखते हैं कि विवाह होने के बाद ही धनवान् से निर्धन और धनवान् हो गये । उनमें एक के ही जन्म लग्न का दोष नहीं, दोनों के ही जन्म लग्नों का दोष फलित होता है ।

इस प्रकार के मामलों में कन्या के जन्म लग्न में यह प्रभाव निहित होगा कि वह जिस घर में जायगी, वह घर उसके जाने पर निर्धन या धनवान् हो जायगा । इस प्रकार वर के जन्म लग्न में यह प्रभाव होता है कि विवाह के पश्चात् वह निर्धन अथवा धनिक हो जायगा ।

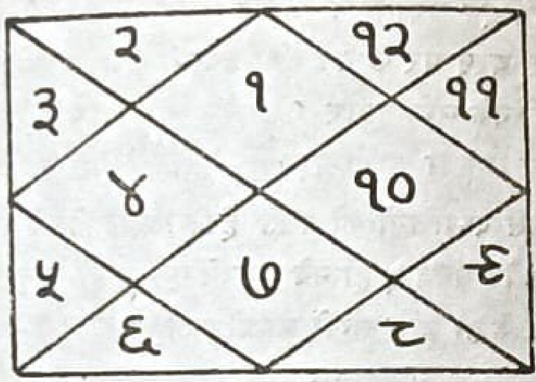
मान-अपमान, भूख-तृप्ति, हानि-लाभ आदि में भी जन्म लग्न का भारी प्रभाव पड़ता है । किसी को किसी अपराध में अर्थदण्ड, कारावास अकाल मृत्यु, दुर्घटना आदि के चक्कर में पड़ना भी जन्म लग्न के प्रभाव से ही होते हैं ।

अनेक विद्वानों की मान्यता है कि मनुष्य की विभिन्न प्रवृत्तियों पर भी जन्म लग्न का पूरा नियन्त्रण रहता है । यदि मनुष्य कोई अपराध करता है तो उस अपराध की प्रवृत्ति का कारण जन्म लग्न ही है ।

जन्म कुण्डली निर्माण और विवेचन

इसी प्रकार शुभ कर्मों की प्रवृत्ति का कारण वही है । परोपकार जन-सेवा,धार्मिक भावना, गृहस्थ जीवन, संन्यास आदि की प्रवृत्ति भी जन्म लग्न के प्रभाव से ही होती है ।

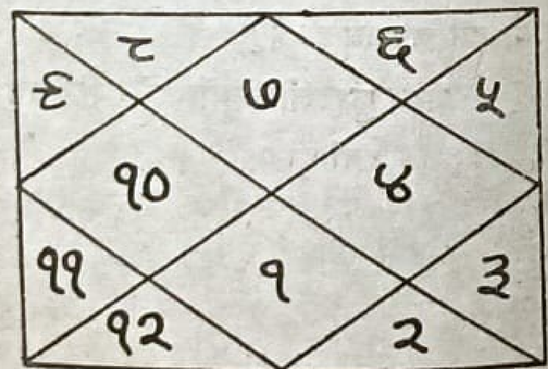
जन्म लग्न बनाने के लिए नक्षत्र आदि अनेक बातों पर ध्यान रखना होता है । सामान्यतः जन्म लग्न का नक्शा इस ढंग से खींचा जाता है—



(चित्र नं० १)

इस नक्शे को जन्म कुण्डली कहते हैं। इससे बारह कोष्ठकों के बारह अंक जन्मानुसार स्थिति व्यक्त करते हैं। एक नम्बर के कोष्ठक में जातक की जन्म राशि का अंक लिखा जायगा और उससे आगे के कोष्ठकों में अगली राशियों के अंक।

इसे इस प्रकार समझिये कि यदि किसी जातक का जन्म सिंह लग्न में हुआ है तो उक्त जन्म कुण्डली में १ के स्थान पर ५ का अंक लिखा जायगा, क्योंकि बारहों राशियों में सिंह राशि पाँचवीं मानी गई। यदि जातक जन्म सिंह लग्न में हुआ है तो जन्म कुण्डली में संख्याओं का अंकन में इस प्रकार होगा—



(चित्र नं० २)

इसका अर्थ यह है कि उक्त कुण्डली में प्रथम स्थान पर ५ लिखा है, अतः जातक का जन्म सिंह लग्न में हुआ है।

इन्हीं कोष्ठकों में लग्न राशि के अनुसार जिस प्रकार की दशा होगी, उसका अंकन भी अंकों के साथ कोष्ठकों के किया जायगा, जैसा कि उक्त कुण्डली में किया गया है।

इस प्रकार जन्म पत्रिका के निर्माण में जन्म सम्वप्र, मास, पक्ष, तिथि, वार, समय, नक्षत्र, सर्वंक्षम, मुक्तर्क्षम्, योग, करण, दिनमान, रात्रिमान, लग्न, राशि, वश, गोत्र, जन्म स्थान आदि का उल्लेख किया जाता है।

ज्योतिष की अंगभूत विद्याएँ

लग्न पत्रिका का अभिप्राय जातक के शुभाशुभ भाग्य तथा उससे होने वाले फल का वर्णन करना है। भाग्यफल का निर्देश करने में अनेक ग्रन्थों से सहायता ली जा सकती है। वे ग्रन्थ ज्योतिष की अंग धूत विद्याओं से सम्बन्धित होते हैं। उन विद्याओं पर विचार करें तो निम्न हो सकती है—

(१) अंक विद्या या अंक ज्योतिष
(२) शकुन विद्या
(३) स्वर विद्या
(४) स्वप्न विद्या
(५) अंग विद्या
(५) भूमि विद्या
(७) देश-काल विद्या
(८) व्यंजन विद्या
(९) आयुर्वेद विद्या
(१०) मन्त्र तंत्र विद्या

इसमें प्रथम विद्या तो ज्योतिष की प्राण है। अंकों के बिना उसका कोई काम चल ही नहीं सकता। राशि लिखनी है तो अंकों में तथा

समय आदि का उल्लेख करना है तो वह भी अंकों में ही किया जायगा ।

दूसरी विद्या शकुन-विचार से सम्बन्धित है । अच्छे शकुन शुभ फल वाले और बुरे शकुन अशुभ फल वाले होते हैं तथा दोनों ही प्रकार के शकुन भाग्य को प्रभावित करते हैं ।

स्वर विद्या वह है जो सामयिक स्वर के अनुसार कार्यों का फलादेश करती हो । नाक में तीन नाड़ियाँ हैं–इड़ा पिंगला और सुषुम्ना, इडा बाँयी नासा में, पिंगला दाँयी नासा में तथा सुषुम्ना दोनों के मध्य में रहती है । यदि बाँया स्वर चले तो इडा की सक्रियता, दांया चले तो पिंगला की और दोनों ही स्वर चलें तो सुषुम्ना की सक्रियता होती है ।

बाँया स्वर सभी शुभ कर्मों में श्रेष्ठ होता है । दाँया स्वर क्रूर कर्मों में हितकर समझा जाता है तथा दोनों स्वर चलें तो वे सभी कार्यों को नष्ट करते हैं अर्थात् दोनों चलें तो समझ लिया जाता है कि कोई कार्य नहीं बनेगा ।

चौथी विद्या स्वप्न से सम्बन्धित है । अच्छे स्वप्न दिखाई दें तो शुभ फल तथा बुरे स्वप्नों का अशुभ फल होता है । उन युक्त विचार करना फलादेश में सहायक होता है ।

अंग विद्या भी बहुत महत्वपूर्ण है । जातक के शरीर के विभिन्न अंगों को देखकर, स्पर्श करके अथवा रेखा आदि का अध्ययन करके जो निष्कर्ष निकाला जाता है, वह भी परिणाम ज्ञान के साधन रूप में निकटतम फलादेश बनता है ।

भूमि विद्या के जानकार भूमि में गड़े धन अथवा भूमि के शुभ अशुभ होने सम्बन्धी ताथ्यों से अवगत कराने में समर्थ होते हैं । जातक किसी भूमि को खरीदे और वह अशुभ हो तो जातक के भाग्य पर उसका भी प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा ।

देश-काल विद्या में देश (स्थान) और काल (समय) के शुभाशुभ होने का ज्ञान रहना है । यह आवश्यक नहीं कि सभी स्थान और समय जातक के अनुकूल या प्रतिकूल रहें । इसलिए उसके सम्बन्ध में जाननने

वालों से अपने अनुकूल देश-काल की जानकारी करनी चाहिए । जो व्यक्ति प्रतिकूल देश, काल में रहते हैं, वे दुःख उठाते और अनुकूल देश काल में रहने वाले व्यक्ति सुखी होते हैं ।

अनुकूल देश-काल का अभिप्राय उससे भी है, जिसमें भय न हो । अकाल, भूकम्प आदि से प्रभावित न हो ।

व्यंजन विद्या का अर्थ कुछ लोग पाकशास्त्र से लगाते हैं । उनके मत में शरीर के अनुकूल रहते वाले आहार का ही सेवन करना सुख का कारण होता है । मिथ्या आहार रोग, दरिद्रता, अल्पायु आदि की प्राप्ति कराता हुआ मनुष्य के भाग्य को प्रभावित करता है ।

परन्तु व्यंजन विद्या का अभिप्राय उस विद्या से है जो जातक के शरीर पर पाये जाने वाले चिन्हों के शुभाशुभ फल का ज्ञान कराती हो यह विद्या सामुद्रिक शास्त्र के अन्तर्गत आती है अथवा अंग विद्या के अन्तर्गत भी मानी जाती है ।

आयुर्वेद विद्या को फलादेश के निर्णय में इसलिए समाविष्ट किया गया है कि जातक के स्वास्थ्य आदि के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके । क्योंकि स्वास्थ्य का भाग्य से बहुत निकट का सम्बन्ध है ।

मन्त्र-तन्त्र विद्या का भी इसमें महत्वपूर्ण योग है । यदि भाग्यफल जातक के प्रतिकूल हो तो इसी विद्या के द्वारा उसे अनुकूल बनाया जा सकता है । क्योंकि मन्त्र-तन्त्रों में भाग्य-परिवर्तन की बहुत ही बड़ी शक्ति मानी जाती है ।

यन्त्र प्रयोग भी इसी विद्या के अन्तर्गत आता है । सिद्ध किए हुए यन्त्र भी जातक के लिए सिद्ध हो सकते हैं ।

इस प्रकार जन्म लग्न भाग्यफल का निर्देश करती है, उसे प्रभावित करती है और भाग्यफल के अनुकूल रूप से परिवर्तन में ज्योतिशास्त्र और उससे सम्बन्धित विविध विद्याएँ सहायक सिद्ध होती हैं । इसलिये उस सभी अंगों से काम लिया जाना अधिक उपयोग होता है ।

भाग्य और कर्म का योग

भाग्य फल बनाने में कर्म का योग भी कम नहीं है। क्योंकि कर्म ही भाग्य का निर्माता है। विभिन्न जन्मों में किए गये कर्म जब संचित और प्रारब्ध कर्मों का रूप धारण करते हैं तब उनके परिणाम से प्राप्त शुभाशुभ लग्न में मनुष्य का जन्म होता है। वह लग्न उसके भाग्य की निर्णायिका मानी जाती है।

परन्तु क्रियमाणु कर्म (इस जन्म में किये जाने वाले कर्म) उस प्रकार के भाग्य को बदलने में योग दे सकते हैं, जो कि जातक के लिए प्रतिकूल ठहरता हो। इसलिए क्रियमाण कर्मों का महत्व कम नहीं है। यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र आदि की साधना, ईश्वर की उपासना, दया, धर्म, परोपकार, सत्य, अहिंसा आदि सभी कर्म क्रियमाण कर्म ही हैं, जो सदैव शुरू परिणाम उत्पन्न करते हैं। उनके द्वारा अशुभ भाग्य को शुभ भाग्य में वदला जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म लग्न निश्चित करने में नक्षत्रों और राशियों को आधार रूप समझना चाहिएं। उनके विषय में आगे प्रकाश डाला जा रहा है।

——

नक्षत्र और राशियों का योग

जन्म लग्न जानने में नक्षत्रों और राशियों का प्रमुख योगदा है। यदि कहें कि जन्म पत्रिका से सम्बन्धित पूरा विज्ञान इन्हीं आधार पर खड़ा है तो यह कुछ अतिश्योक्ति नहीं होगी।

नक्षत्रों का वर्णन

नक्षत्र २– हैं, ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार उनका क्रम इस प्रकार है—

(१) अश्विनी, (२) भरणि, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वा फाल्गुनी, (१२) उत्तरा फाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तराषाढ़ा, (२२) श्रवण, (२३) अभिजित, (२४) धनिष्ठा, (२५) शतभिषा, (२६) पूर्वा भाद्रपदा, (२७) उत्तरा भाद्रपदा, और (२८) रेवती

ग्रहों का वर्णन

उक्त नक्षत्रों के अनुसार उनकी महादशा निश्चित की जाती है। महादशा सम्बन्धित ग्रहों की होती है। ग्रह ९ हैं—(१) सूर्य (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) वृहस्पति, (६) शुक्र, (७) शनि, (८) राहु, और केतु। पाश्चात्य मतानुसार हर्षल और नेपच्यून नामक दो ग्रह और माने जाते हैं।

महादशा और नक्षत्र

इन ग्रहों की महादशा रूप से नक्षत्रों से इस प्रकार सम्बन्ध होता है—

१. सूर्य महादशा—कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।
२. चन्द्र महादशा—रोहिणी, हस्त और श्रवण।
३. मंगल महादशा—मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा।
४. राहु महादशा—आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा।
५. वृहस्पति महादशा—आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा।

६. शनि महादशा—पुष्य, अनुराधा और उत्तरा भाद्रपदा।
७. बुध महादशा—आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती।
८. केतु महादशा—अश्विनी, मघा और शतभिषा।
९. शुक्र महादशा—भरणी, पूर्वा फाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा।

महादशाओं का काल

महादशाओं का प्रसंग आया है, इसलिए बता देना भी उचित होगा कि कौन सी महादशा कितने काल तक चलती है—

सूर्य महादशा	६ वर्ष
चन्द्र महादशा	१० वर्ष
मंगल महादशा	७ वर्ष
राहु महादशा	११ वर्ष
गुरु (बृहस्पति) महादशा	१६ वर्ष
शनि महादशा	१९ वर्ष
बुध महादशा	१७ वर्ष
केतु महादशा	७ वर्ष
शुक्र महादशा	२० वर्ष

ग्रहों की अन्तर्दशाएँ

महादशाओं के साथ अन्तर्दशाएँ भी होती हैं और वे अपने-अपने समयानुसार वर्तमान रहकर एक दूसरे का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। जैसे कि सूर्य की महादशा ६ वर्ष की है तो मेषादि की अन्तर्दशाएँ अपने-अपने समय तक उपस्थित रहेंगी और इस प्रकार सभी अन्तर्दशाएँ मिलकर ६ वर्ष का समय पूरा करेंगी। इन अन्तर्दशाओं का वर्णन इस प्रकार है—

सूर्य महादशा

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
सूर्य	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
मंगल	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०
योग	६	००	००

इस प्रकार यह नव ग्रह सूर्य महादशा के अन्तर्गत अपना-अपना समय देते हैं।

चन्द्र महादशा

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
चन्द्र	०	१०	०
मंगल	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	१	०
केतु	०	७	०
शुक्र	०	८	०
सूर्य	०	६	०
योग	१०	००	००

इस प्रकार अन्तर्दशा रूप उक्त ग्रह अपना-अपना निश्चत समय देते हुए महादशा का दस वर्ष का समय पूरा करते हैं।

मंगल महादशा

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	७	०	०
योग	७	००	००

राहु महादशा

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
सूर्य	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८
योग	१८	००	००

इस प्रकार उक्त अन्तर्दशाएँ अपने-अपने निश्चित समय का योग देकर राहु महादशा के १८ वर्ष पूरे करती हैं।

गुरु (बृहस्पति) महादशा

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
सूर्य	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
मंगल	०	११	६
राहु	२	४	२४
योग	१६	००	००

इस प्रकार उक्त ग्रह अपना-अपना समय देकर गुरु महादशा के १५ वर्ष व्यतीत करते हैं।

शनि महादशा

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
सूर्य	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
मंगल	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	३	१२
योग	१९	००	००

इस प्रकार उक्त अन्तर्दशाएं अपने-अपने निश्चित समय देती हुई शनि महादशा के १९ वर्ष पूरे कराती हैं।

बुध महादशा

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	०	६
चन्द्र	१	५	०
मंगल	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	९
योग	२७	००	००

इस प्रकार बुध महादशा के २७ वर्ष हैं उक्त अन्तर्दशाएं अपना-अपना समय देती हैं।

केतु महादशा

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	०	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
योग	७	००	००

इस प्रकार केतु की महादशा के ७ वर्षों को अपने-अपने योगानुसार उक्त ग्रह पूण करते हैं।

शुक्र महादशा

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
शुक्र	३	४	०
सूर्य	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०
योग	२०	००	०

इस प्रकार उक्त अन्तर्दशाएं शुक्र महादशा के बीस वर्ष पूर्ण करने के अपना-अपना समय देती हैं।

नक्षत्रों और राशियों का समन्वय

सामान्य रूप से नक्षत्र २७ होते हैं। ऊपर जिन २८ नक्षत्रों की चर्चा हुई है, उनमें अभिजित नक्षत्र का वर्णन २३ वें नम्बर पर हुआ है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चौथा पाद और श्रवण की प्रथम चार घड़ी अभिजित् नक्षत्र का भोग काल होता है, इसलिए अभिजित् सहित २८ नक्षत्र माने जाते हैं।

प्रत्येक राशि का निर्माण सवा दो नक्षत्रों के योग से होता है। जैसे कि मेष राशि के निर्माण में अश्विनी और भरणी नक्षत्रों के ४-४ चरण तथा कृत्तिका का एक चरण योग लेता है। इसी प्रकार अन्य राशियों

के विषय में समझिये। निम्न विवरण से यह विषय ठीक प्रकार से समझा जा सकना है—

मेष राशि—अश्विनी और भरणी ४-४ चरण तथा कृत्तिका का १ चरण।

वृषभ राशि—कृत्तिका के ३; रोहिणी के ४ और मृगशिरा के २ चरण।

मिथुन राशि—मृगशिरा के २, आर्दा के ४ और पुनर्वसु ३ चरण।

कर्क राशि—पुनर्वसु का १,पुष्य के ४ और आश्लेषा के ४ चरण।

सिंह राशि—मघा के ४, पूर्वा फाल्गुनी के ४ और उत्तरा फाल्गुनी का १ चरण।

कन्या राशि—उत्तरा फाल्गुनी के ३, हस्त के ४ और चित्रा के २ चरण।

तुला राशि—चित्रा के २, स्वाति के ४ और विशाखा के ३ चरण।

वृश्चिक राशि—विशाखा का १, अनुराधा के ४ और ज्येष्ठा के ४ चरण।

धनु राशि—मूल के ४, पूर्वाषाढ़ा के ४ और उत्तराषाढ़ा का १ चरण।

मकर राशि—उत्तराषाढ़ा के ३, श्रवण के ४ और धनिष्ठा के २ चरण।

कुम्भ राशि—धनिष्ठा के २, शतभिषा के ४ और पूर्वा भाद्रपदा के ३ चरण।

मीन राशि - पूर्वा भाद्रपदा का १, उत्तरा भाद्रपदा के ४ और रेवती के ४ चरण।

बारह राशियाँ और उनके अधिपति ग्रह

यह समस्त संसार १२ राशियों के चक्र पर घूमता है। किन्तु उन सभी राशियों का आधिपत्य सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि, यह सात ग्रह कहते हैं। इनकी स्थिति निम्न प्रकार हैं—

राशि क्रम	अधिपति
१. मेष	मंगल
२. वृषभ	शुक्र
३. मिथुन	बुध
४. कर्क	चन्द्र
५. सिंह	सूर्य
६. कन्या	बुध
७. तुला	शुक्र
८. वृश्चिक	मंगल
९. धनु	वृहस्पति
१०. मकर	शनि
११. कुम्भ	शनि
१२. मीन	वृहस्पति

राशियों की दिशाएँ

बारहों राशियाँ, तीन-तीन के समूह में चार भागों में विभाजित हैं अर्थात् मेष, सिंह और धनु की दिशा पूर्व, वृषभ, कन्या और मकर की दक्षिण, मिथुन, तुला और कुम्भ की पश्चिम तथा कर्क, वृश्चिक और मीन राशियों की दिशा उत्तर मानी गई है।

राशियों के वर्ण

मेष राशि का लाल वर्ण माना गया है। वृषभ का श्वेत, मिथुन का हरा, कर्क का उज्वल लाल, सिंह का धूम्र वर्ण, कन्या का कुछ पीला तुला का विविध (अनेक), वृश्चिक का कृष्ण वण, धनु का स्वर्णिम, मकर का पिंगल, कुम्भ का कुछ चितकबरा-सा, तथा मीन राशि का भूरा वर्ण माना जाता है।

क्रूर और सौम्य राशियों का वर्णन

राशियाँ दो प्रकार की मानी जाती हैं—(१) क्रूर, और (२) सौम्य, मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ क्रूर राशियाँ तथा, वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन सौम्य राशियाँ मानी गई हैं।

ह्रस्व दीर्घ एवं कालानुसार बलवान होने वाली राशियाँ

ह्रस्वादि के भेद से भी राशियों का विभाजन किया गया है, जो कि इस प्रकार है—

ह्रस्व राशियाँ—मेष, वृषभ, कुम्भ और मीन।

मध्य राशियाँ—मिथुन, कर्क, धनु और मकर।

दीर्घ राशियाँ—सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक।

रात्रि में बलवान होने वाली राशियाँ—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क धनु और मकर।

दिन में बलवान होने वाली राशियाँ—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक कुम्भ और मीन।

कालानुसार शून्य राशियाँ

काल विशेष के अनुसार राशियों का प्रभाव भी बदलता रहता है। कुछ विशेष कालों में यह प्रभावहीन (शून्य तथा दग्ध) हो जाती हैं। मासानुसार इनकी प्रभावहीनता इस प्रकार होती है—

मास	राशि
चैत्र	कुम्भ
वैसाख	मीन
ज्येष्ठ	वृषभ
आषाढ़	मिथुन
श्रावण	मेष
भाद्रपद	कन्या

आश्विन	वृश्चिक
कार्तिक	तुला
मार्गशीर्ष	धनु
पौष	कर्क
माघ	मकर
फाल्गुन	सिंह

इस प्रकार जिस मास के आगे जो राशि लिखी गई है, वह उस में प्रभावहीन हो जाती है। इन राशियों के लग्न शुभ कार्यों में ठीक नहीं समझें जाते।

जन्म-राशि का ज्ञान

जन्म राशि वह होती है, जिसमें चन्द्रमा स्थित हो। मान लीजिये कि अपनी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा बारहवीं राशि में लिखा है तो आपकी जन्म राशि मीन होगी। पीछे के पृष्ठों में कुण्डली नं० २ में चन्द्रमा १२ के अंक के साथ लिखा है। इसका अभिप्राय है कि जातक की जन्म राशि बाहरवीं अर्थात् मीन है। इसी प्रकार जन्म कुण्डलियों के विषय में समझिए।

राशियों से सम्बन्धित अक्षर

नीचे उन अक्षरों का उल्लेख किया जाता है, जो मनुष्य के नाम के आरम्भ में आता हो, जैसे लालाराम का प्रथम अक्षर 'ला' है, उससे सम्बन्धित राशि मेष होगी। ज्योतिष के विद्वान् राशि और नामाक्षर से सम्बन्धित ज्ञान को राशिमाला कहते हैं। उसका वर्णन निम्न प्रकार है—

राशि	नाम के आरम्भिक अक्षर
मेष	चू चे चो ला लो लू ले लो आ
वृष	ई उ ऐ औ वा वी व वे वो

मिथुन	का की कू घ ङ छ के को ही
कर्क	ही हू हे हो डा डी डू डे डो
सिंह	मा मी मू मे मो टा टी टू टे
कन्या	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो
तुला	रा री रू रे रो ता ती तू ते
वृश्चिक	तो ना नी नू ने नो या यी यू
धनु	ये यो भा भी भू धा फ ढ भे
मकर	भो जा जी खी खे खू खो गा गी
कुम्भ	गू गे गो सा सी सू से सो दा
मीन	दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

जन्म लग्न के बिना राशि-निर्णय

यदि जातक को अपनी जन्म तिथि आदि का पता न हो तो उसके नाम से राशि का निश्चय करना चाहिए। जैसे किसी का नाम गोवर्धन है तो यह देखिए कि नाम का प्रथम अक्षर 'गो' किस राशि के आगे लिखा है। ऊपर राशिमाला में वह कुम्भ राशि के आगे है, अतः उस जातक की राशि कुम्भ होगी।

●

नक्षत्र विषयक शारीरिक विकास

नक्षत्रों का गुणनानुसार विभाजन

नक्षत्रों में सतोगुणी, रजोगुणी के भेद से विद्वानों ने उनका तीन श्रेणियों में विभाजन किया है। उन-उन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले जातक उन्हीं के समान गुण-स्वभाव के होते हैं।

नक्षत्र की संख्या २७ है, उनमें ६ सात्विक, ९ राजसी तथा १२ तामसी स्वभाव के माने जाते हैं। उनका पृथक्-पृथक् वर्णन निम्न प्रकार है—

सतोगुणी नक्षत्र

१–पुनर्वसु
२–आश्लेषा
३–विशाखा
४–ज्येष्ठा
५–पूर्वाभाद्रपदा
६–रेवती

रजोगुणी नक्षत्र

१–भरणी
२–कृतिका
३–रोहिणी
४–पूर्वा फाल्गुनी
५–उत्तरा फाल्गुनी
६–हस्त
७–पूर्वाषाढ़ा
८–उत्तराषाढ़ा
९–श्रवण

तमोगुणी नक्षत्र

१–अश्विनी
२–मृगशिरा
३–आर्द्रा
४–मघा

६—चित्रा
७—स्वाति
८—अनुराधा
९—मूल
१०—घनिष्ठा
११—शतभिषा
१२—उत्तरा भाद्रपदा

नक्षत्रों का शारीरिक विकास

नक्षत्रों की निम्न तालिका के अनुसार शरीर विकास होता है—

१. अश्विनी—पाँवों का ऊर्ध्व भाग
२. भरणि—पाँवों के तलुये
३. कृतिका—सिर
४. रोहिणी—मस्तक
५. मृगशिरा—भौंहें
६. आर्द्रा—नेत्र
७. पुनर्वसु—नासिका
८. पुष्य–मुख (चेहरा)
९. आश्लेषा—कान
१०. मघा—ओष्ठ
११. पूर्वा फाल्गुनी—दाँया हाथ
१२. उत्तरा फाल्गुनी—बांया हाथ
१३. हस्त—अंगुलियाँ
१४. चित्रा—ग्रीवा
१५. स्वाति—वक्ष स्थल
१६. विशाखा—हृदय
१७. अनुराधा—उदर

१८. ज्येष्ठा—आमाशय
१९. मूल—कुक्षि
२०. पूर्वाषाढ़ा—पीठ
२१. उत्तराषाढ़ा—रीढ़ की अस्थि
२२. श्रवण—कटि
२३. घनिष्ठा—गुदा मार्ग
२४. शताभिषा—दाँयी जांघ
२५. पूर्वा भाद्रपदा—बाँयी जांघ
२६. उत्तरा भाद्रपदा—पिंडली
२७. रेवती—गुल्फ (टखने)

नक्षत्र उनके स्वामी तथा संकेत-संक्षेप

नक्षत्र	स्वामी	साँकेतिक चिन्ह
१. अश्विनी	आश्वि० द्वय	अ०
२. भरणी	काल	भ०
३. कृतिका	अग्नि	कृ०
४. रोहिणी	ब्रह्मा	रो०
५. मृगशिरा	चन्द्रमा	मृ०
६. आर्द्रा	रुद्र	आ०
७. पुनर्वसु	अदिति	पु०
८. पुष्य	गुरु	पु०
९. आश्लेषा	सर्प	आ०
१०. मघा	पितर	म०
११. पूर्वा फाल्गुनी	भग	पू० फा०
१२. उत्तरा फा०	अर्यमा	उ० फा०
१३. हस्त	सूर्य	ह०
१४. चित्रा	विश्वकर्मा	चि०

१५. स्वाति	वायु	स्वा०
१६. विशाखा	शक्राग्नि	वि०
१७. अनुराधा	मित्र	अ०
१८. ज्येष्ठा	इन्द्र	ज्ये०
१९. मूल	निर्ऋति	मू०
२०. पूर्वाषाढ़ा	जल	पू० षा०
२१. उत्तराषाढ़ा	विश्वेदेवा	उ० षा०
२२. श्रवण	विष्णु	श्र०
२३. धनिष्ठा	वसु	ध०
२४. शतभिषा	वरुण	श०
२५. पूर्वा भाद्रपदा	अजैकपाद	पू० भा०
२६. उत्तरा भाद्रपदा	अहिर्बुध्न्य	उ० भा०
२७. रेवती	पूषा	रे०

नोट—एक अभिजित् नक्षत्र और माना जाता है, जो कि उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण और श्रवण के प्रथम चरण से बनता है। इसके स्वामी ब्रह्मा माने गये हैं।

शुभाशुभ नक्षत्रों के अन्य भेद

विद्वानों ने सभी नक्षत्रों को आठ प्रकारों में बाँटकर उनका शुभाशुभ निश्चित किया है उनके भेद इस प्रकार हैं—(१) मूल, (२) ध्रुव, (३) पंचक, (४) चर, (५) मैत्र, (६) मिश्र, (७) दारुण और (८) लघु। इनका पृथक्-पृथक् फल निम्न प्रकार समझने चाहिए।

मूल संज्ञक नक्षत्र

इसमें ६ नक्षत्र आते हैं—आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल, मघा, श्रवण और रेवती। इन पाँचों ही मूल संज्ञा में आते हैं।

यदि इन नक्षत्रों में जन्म होता है तो इनकी शान्ति के लिए ग्रहों की शान्ति का मार्ग कर्म कराया जाता है।

ध्रुव संज्ञक नक्षत्र

इसमें आने वाले नक्षत्र हैं—रोहिणी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपदा और रोहिणी। इन सभी को ध्रुव संज्ञक मानते हैं।

इन नक्षत्रों को अशुभ तथा विघ्न करने वाला समझा जाता है। इसमें शुभ कार्यों का होना अधिक कष्टकारक समझा जाता है।

पंचक संज्ञक नक्षत्र

इसमें आने वाले नक्षत्र क्रमशः अन्तिम होते हैं अर्थात् धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा और रेवती हैं, जिनकी स्थिति पंचक कहलाती है।

यह नक्षत्र शुभ कार्यों में शुभ नहीं माने जाते। किसी प्रकार का नवीन कार्य भी इन नक्षत्रों में नहीं किया जाता।

चर संज्ञक नक्षत्र

इसमें पुनर्वसु, स्वाति, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र होते हैं। इनका फल कर्म के अनुसार शुभ या अशुभ प्राप्त हो सकता है। उक्त चारों नक्षत्र चर संज्ञक माने गये हैं।

मैत्र संज्ञक नक्षत्र

इसमें मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा और रेवती नक्षत्र आते हैं। इन नक्षत्रों को मैत्र संज्ञक माना गया है।

इतना फल सामान्य होता है। कर्मानुसार यह नक्षत्र हितकर सिद्ध हो सकता है।

मिश्र संज्ञक नक्षत्र

इस संज्ञा में कृतिका और विशाखा, यह दो नक्षत्र आते हैं। इनका फल मिश्रित होता है।

यह नक्षत्र शुभाशुभ दोनों प्रकार का फल प्रदर्शित करने वाले माने जाते हैं।

दारुण संज्ञक नक्षत्र

इस संज्ञा में आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र माने जाते हैं। यह नक्षत्र पीड़ा कारक माने जाते हैं। बनती हुई आशा भी नष्ट हो जाती है।

लघु संज्ञक नक्षत्र

इसमें अश्विनी, पुष्य, हस्त और अभिजित् नक्षत्र आते हैं। इन लघु संज्ञक नक्षत्रों को सामान्य समझा जाता है।

कुछ विद्वानों के मत में यह नक्षत्र कर्म के अनुसार शुभ फल प्रदान करते हैं। यह चारों नक्षत्र शुभ हैं।

वारानुसार वर्जित नक्षत्र

कुछ नक्षत्र ऐसे होते हैं, जिनका वारानुसार शुभ या अशुभ फल होता है। विद्वानों के अनुसार अशुभ फल वाले नक्षत्र ७ ही हैं, वह भी किसी वार विशेष द्वेष रहने के कारण केवल उसी वार में अशुभ फल देने वाले होते हैं। इसलिए नीचे जिस वार के आगे जो नक्षत्र लिखा है, उसमें कोई शुभ कार्य अथवा नवीन कार्य का आरम्भ नहीं करना चाहिए।

रविवार—भरणी

चन्द्रवार—चित्रा

मंगलवार—उत्तराषाढ़ा

बुधवार—धनिष्ठा

गुरुवार—उत्तरा फाल्गुनी

शुक्रवार—ज्येष्ठा

शनिवार—रेवती

मासानुसार शून्य नक्षत्र

निम्न नक्षत्र मास के अनुसार शून्य फलकारी होते हैं। जब वे अपने दृष्टि मास में पड़ते हैं तो उनमें प्रारम्भ किया हुआ कोई भी कार्य लाभप्रद रूप से पूर्ण नहीं हो पाता। इसलिए नीचे जिन महीनों के आगे जो नक्षत्र लिखे जाते हैं, उन महीनों में उन नक्षत्रों में किसी शुभ कार्य का आरम्भ न किया जाय—

चैत्र—अश्विनी और रोहिणी

वैशाख—चित्रा और स्वाति

ज्येष्ठ—पुष्य और उत्तराषाढ़ा

आसाढ़—पूर्वा फाल्गुनी और धनिष्ठा

श्रावण—उत्तराषाढ़ा और श्रवण

भाद्रपदा—शतभिषा और रेवती

आश्विनी—पूर्वा भाद्रपदा

कार्तिक—कृत्तिका और मघा

मार्गशीर्ष—चित्रा और विशाखा

पौष—अश्विनी, आर्द्रा और हस्त

माघ—मूल और श्रवण

फाल्गुनी—भरणी और ज्येष्ठ

जन्मानुसार अशुभ मास, तिथि आदि

१-मेष राशि—

मास—कार्तिक

तिथि—१, ६, ११

वार—रविवार

नक्षत्र—कृतिका और मघा

समय—प्रथम प्रहर

२-वृष राशि—
मास–मार्गशीर्ष
तिथि–५, १०, १५
वार–शनिवार
नक्षत्र–हस्त और चित्रा
समय–चतुर्थ प्रहर

३-मिथुन राशि—
मास–आषाढ़
तिथि–१, २, १२
वार–चन्द्रवार
नक्षत्र–स्वाति और शतभिषा
समय–तृतीय प्रहर

४-कर्क राशि—
मास–पौष
तिथि–२, ७, ९
वार–बुधवार
नक्षत्र–मघा और अनुराधा
समय–प्रथम पहर

५-सिंह राशि—
मास–ज्येष्ठ
तिथि–३, ४, १३
वार–शनिवार
नक्षत्र–मूल और धनिष्ठा
समय=प्रथम प्रहर

६-कन्या राशि—
मास–भाद्रपद

तिथि–५, १०, १५
वार–शनिवार
नक्षत्र–आर्द्रा और श्रवण
समय–प्रथम प्रहर

७-तुला राशि—
मास–माघ
तिथि–४, ९, १४
वार–गुरुवार
नक्षत्र–मूल और शतभिषा
समय–चतुर्थ प्रहर

८-वृश्चिक राशि—
मास–आश्विन
तिथि–१, ६, ११
वार–शुक्रवार
नक्षत्र–रोहिणी और रेवती
समय–प्रथम प्रहर

९-धनुराशि—
मास–श्रावण
तिथि–३, ८, १३
वार–शुक्रवार
नक्षत्र–रोहिणी और मघा
समय–प्रथम प्रहर

१०-मकर राशि—
मास–वैशाख
तिथि–४, ९, १४
वार–मंगलवार

नक्षत्र—रोहिणी और मघा
समय—प्रथम प्रहर

११-कुम्भ राशि

मास—चैत
तिथि—३, ८, १३
वार—गुरुवार
नक्षत्र—आर्द्रा और मूल
समय—तृतीय –प्रहर

१२-मीन राशि—

मास—फाल्गुन
तिथि—५, १०, १५
वार—शुक्रवार
नक्षत्र—आश्लेषा और पूर्वा भाद्रपदा
समय—चतुर्थ प्रहर

इस प्रकार उक्त विवरण के अनुसार जातक की राशि का विचार करते हुए उसे उसकी राशि के नीचे लिखे मास की तिथि, वार, नक्षत्र तथा समय में कोई शुभ कार्य के आरम्भ विषय निषेध निर्दिष्टकर ना चाहिए।

राशि, नक्षत्र और नामानुसार फल

पहले बता चुके हैं कि एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण (अक्षर) होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक राशि नौ अक्षरों की होती है, जिनका पूर्ण विवरण दिया जा चुका है। यहाँ राशि

और नक्षत्र के अनुसार नाम भेद से भाग्य-फल का वर्णन किया जा रहा है। यदि आपको अपनी राशि और जन्म नक्षत्र के विषय में सन्देह हो तो निम्न लक्षणों से मिलाकर अनुमान लगावें।

१. मेष राशि का लग्न फल

अश्विनी नक्षत्र के चारों पद (चू चे चो ला)—का फल निम्न प्रकार है—चतुर, मेधावी, यशस्वी, पशु विशेषज्ञ, चापलूसी पसन्द, व्यवहार में खरा, आभूषणों से प्रेम करने वाला, वाहनों का व्यापारी, स्पष्ट वक्ता, धनवान, स्त्री की सहायता से कार्य निकालने वाला, कृश कार्य तथा चरित्र में अच्छा होनां चाहिए।

भरणी नक्षत्र के चारों चरण (ली लू ले लो)—स्वस्थ, सुखी, रोग-रहित, सत्यवादी, भाग्यवादी, अस्थिर चित्त, भोजन में अधिक इच्छा रखने वाला, दुर्बल चरित्र, विदेश गमन में दिलचस्पी युक्त, मुकदमे आदि में विजय पाने वाला, कृतघ्न, किन्तु धनी होगा। सम्भव है किसी अंग-भंग से प्रभावित हो।

कृत्तिका नक्षत्र का प्रथम चरण (आ)—अति भोजी, अस्थिर चित्त, स्वस्थ, आचरण में दुर्बल, अपने मानने वाला तथा चतुर होता है।

२. वृष राशि का लग्न फल

प्रथम कृत्तिका नक्षत्र के तीन चरणों में (ई उ ए का फल)—ऐसा व्यक्ति कृपण, क्रोधी, कृतघ्न, किन्तु आशावादी होना चाहिए। मुकदमों आदि में अधिक दिलचस्पी रखने वाला, चालाक, कामुक, अतिभोजी, शत्रुओं से भयभीत, किन्तु तेजस्वी हो सकता है।

रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण (ओ वा वी वू)—सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व, कलात्मक रुचि, कुशल दस्तकार, बौद्धिक कार्य करने वाला, तीव्र स्मरण शक्ति से सम्पन्न, दुर्बल शरीर, आलसी होने के कारण मोटापा वृद्धि का आरम्भ, मधुर भाषी, धनवान, परस्त्रीगामी तथा स्थिर चित्त और दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिए।

मृगशिरा के दो चरण (वे वो)—ऐसा जातक भीरु स्वभाव का कोमल चित्त, विवेकी, कुशल वक्ता, विद्वान चंचल विचार वाला, उत्साही, भ्रमण प्रिय, अस्वस्थ, धन सन्तान और मित्रों से युक्त होना चाहिए।

३. मिथुन राशि का लग्न फल

मृगशिरा नक्षत्र के दो चरण (का की)—ऐसा जातक साहसी तथा देव-सेवक होना चाहिए। वह कोई सेना में अधिकारी, पुलिस अधिकारी अथवा ऐसे ही किसी प्रशासनिक पद पर होना चाहिए। चिकित्सक आदि भी हो सकता है। शरीर से हृष्ट-पुष्ट, स्वाभिमानी तथा उत्साही और शान्त चित्त होगा।

आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण (कू घ ङ छ)—ऐसे व्यक्ति अहंकारी और दुष्कर्मी होने चाहिए। कम शिक्षित, अस्थिर चित्त, धार्मिक आडम्बर से युक्त, फिटर, ओवरसियर, इन्जीनियर, फोरमैन तथा इसी प्रकार के कार्य करने वाले हो सकते हैं।

पुनर्वसु के तीन चरण (के को हो)—ऐसा जातक सुखी, सन्तुष्ट, धार्मिक, स्वार्थ-रत, कविता प्रेमी, माता-पिता की सेवा करने वाला, अल्प बुद्धि, साहित्य आदि से जीविकोपार्जन करने वाला तथा धनवान होना चाहिए।

४. कर्क राशि का लग्न नक्षत्र फल

पुनर्वसु का एक चरण (ही)—अस्वस्थ, सन्तोषी, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, पढ़ा-लिखा, मूर्ख, काव्य, नाटक, सिनेमा आदि से प्रेम करने वाला स्वार्थ में लगा रहने वाला होना चाहिए।

पुष्य नक्षत्र के चारों चरण (हु हे हो डा)—चतुर सुन्दर, मेधावी, सत्य और अहिंसा में विश्वास रखने वाला, चित्त, कुटुम्बी, उदार हृदय ईश्वर भक्त, नेतृत्व में कुशल, राज सम्मान प्राप्त, कवि, लेखक, पत्रकार वकील, वेद के अध्ययन में दिलचस्पी वाला, प्रशासनिक योग्यता से सम्पन्न धनवान, अध्यापक आदि हो सकता है।

आश्लेषा नक्षत्र के चारों चरण (डी डू डे डो)—मिथ्याचारी, मूर्ख, अतिभोजी, आचरणहीन, निर्लज्ज, कृतघ्न, पशुपालक, कृषक आदि हो सकता है।

५. सिंह राशि का लग्न नक्षत्र फल

मघा नक्षत्र के चारों चरण (मो मी मू मे)—ऐसा जातक उद्यमी होना चाहिए। उद्योगपति, बड़ी योजानएँ चलाने वाला, कामुक. चंचल चित्त, साहसी, अहंकारी, झगड़ालू प्रकृति का, धार्मिकता का ढोंग करने वाला, अस्वस्थ शरीर, व्यर्थ वाद-विवाद करने वाला हो सकता है।

पूर्वा फाल्गुनी के चारों चरण (मो टा टी टू)—सुखी, धन-सन्तान से सम्पन्न, कला-प्रेमी, चंचल चित्त, दानी आकर्षक व्यक्तित्व वाला, स्त्रियों की चापलूसी करने वाला, सफल वक्ता, में अभिरुचि वाला, कामुक, नृत्य-संगीत में रुचि लेने वाला, उग्र स्वभाव, पशु, कृषि आदि का व्यवसायी होना चाहिए।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के तीन चरण (टे)—ऐसा जातक मधुर भाषी, नृत्य-संगीत का प्रेमी, बुद्धिमान, आकर्षक और सुन्दर, अति सन्तान वाला, लोक-प्रिय, स्त्रियों के वश में रहने वाला तथा धनिक होना चाहिए।

६. कन्या राशि का लग्न नक्षत्र फल

उत्तरा फल्गुनी नक्षत्र के तीन चरण (दो पी पी)—ऐसा जातक बुद्धिमान शिक्षाविद, वेदपाठी, चिकित्सक, कलाकार आदि होना चाहिए। संगीत-विद्या के प्रति उसका लगाव हो सकता है। सामान्यतः मधुर-भाषी होने के कारण उसे लोकप्रिय होना चाहिए। धन की सम्पन्नता का भी योग रहता है।

पारिवारिक जीवन में उतार-चढ़ार आ सकते हैं। पत्नी से अनबन,

गृह-कलह मुकदमे आदि की चिन्ता हो सकती है। दूसरों से झगड़ा तथा दण्ड आदि भी भुगतने होते हैं।

ऐसे जातक को कृषि-कर्म, राजकीय सेवा, अध्यापन, साहित्य लेखन, प्रकाशन आदि से आय होनी चाहिए। इनका धन भी कुछ खराब कार्यों में लग सकता है।

हस्त नक्षत्र के चारों चरण (पू ष ण ठ)—ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रभावशाली, प्रशासनिक व्यवस्था में योग्य तथा विद्या में प्रवृद्ध होना चाहिए। इसमें साहस और स्फूर्ति की अधिकता होगी।

सेना का उच्च पद, अनुशासन-प्रियता, विजय, राज-सम्मान, शिकार आदि में दिलचस्पी का योग मिलता है। ऐसे व्यक्ति पाप योग के प्रभाव से क्रूर, अशुभ, कर्मी, चोर, दस्यु, हिंसक आदि भी हो सकते हैं। मद्यपान का इन्हें शौक हो सकता है।

ऐसे जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व के, रौबीले और साहसी होते हैं। उन्हें दूसरों को अनुशासन में रखने की कला याद रहती है। फिर भी इनके साथ झगड़े-झझट आदि लगे रह सकते हैं।

सामान्यतः इनका पारिवारिक जीवन बहुत अच्छा नहीं होता। पत्नी का स्वास्थ्य खराब, पुत्रियों को जन्म देने वाली अथवा अप्रिय जीवन व्यतीत करने वाली हो सकती है। इस कारण गृह-कलह अशांत चितत्ता या अन्य उद्वेग रह सकते हैं।

चित्रा नक्षत्र के दो चरण (पे पो)—ऐसा जातक धार्मिक विचार धारा का तथा उदार हृदय होना चाहिए। दूसरों को संकट में देखकर दयार्द्र हो जाना उसके स्वभाव में होगा। उसे कला में रुचि हो सकती है।

व्यापार से धन कमाने वाला, धातु, रत्न आदि के व्यापार में लगा हुआ तथा आर्थिक दृष्टि से मजबूत होता है। प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ ही अनुशासन क्षमता भी पर्याप्त रहती है।

७. तुला राशि का लग्न नक्षत्र फल

चित्रा नक्षत्र के शेष दो चरण (रा री)—कन्या राशि में वर्णित चित्रा नक्षत्र के जो लक्षण लिखे हैं, वे इनमें भी सम्भव हैं। ऐसा जातक सफल व्यापारी, धन से सम्पन्न तथा बोलचाल में चतुर होगा।

धर्म, दया, उदारता, लज्जा आदि गुणों के साथ उसे चित्रकला से प्रेम होना चाहिये।

कामुक दृष्टि से ऐसे मनुष्य का चरित्र दुर्बल हो सकता है। यदि वह व्यापारी न हो तो चित्रकला, संगीत-कला, काव्य-कला अथवा लेखनकला आदि की आजीविका वाला होगा।

स्वाति नक्षत्र के चारों चरण (रु रे रो ता)—ऐसा व्यापारी भी व्यापार में अधिक रुचि वाला होगा अथवा बौद्धिक व्यवसाय में निपुण होना चाहिए।

बोलचाल में बहुत कोमल, उदार चित्त वाला, लज्जावान, सत्य, धर्म आदि का आचरण करने वाला, प्रसन्न चित्त, ईश्वर में विश्वास रखने वाला होगा।

शिक्षा की कमी या शिक्षित होते हुए भी अल्प बुद्धि हो सकता है। आर्थिक दृष्टि से उसे कोई कष्ट नहीं रहना चाहिए। सामान्यतः ऐसे व्यक्ति लोकप्रिय भी होते हैं।

यदि सरकारी नौकरी में हों तो ओवरसियर, इन्जिनियर आदि हो सकते हैं। किन्तु अधिकतर ईमानदार किस्म के होने चाहिए। उन्हें राज-सम्मान भी मिल सकता है।

परन्तु ऐसे लोग कुछ कामुक विचार के भी हो सकते हैं। स्त्रियों को सन्तुष्ट रखने में समर्थ और भोग-विलास में रुचि लेने तथा धार्मिक कार्यों को भी करते हैं।

परोपकार, दान, साधु-सेवा आदि में उनका योग कम नहीं होता। चाहे वह सब ऊपरी मन से ही करता हो। फिर भी उन्हें प्रशंसा अधिक मिलती है।

विशाखा नक्षत्र के तीन चरण (ती तू ते)—ऐसा व्यक्ति सामान्य बुद्धि वाला होता तथा शस्त्र चलाने, शस्त्र बनाने, शस्त्र बेचने, पशु बेचने या पशु पालने आदि के कार्यों में लगा रहता है।

वह क्रोधी, अहंकारी, लोभी, कामुक विचारधारा का तथा वाचाल होना चाहिए।

दूसरों को दुःखित देखकर प्रसन्न होने वाले, कामुक विचारधारा से युक्त, झगड़े-झंझटों में दिलचस्पी रखने वाले तथा अधिक कलह प्रिय होते हैं।

ऐसे जातक स्त्रियों के वशीभूत रहते और भोग विलास में पड़े रहना पसन्द करते हैं। मद्यपान में भी इनकी रुचि रहती है।

अपना काम निकालने के लिए झूँठ बोलना, प्रपंच रचना, डाँट डपट कर दूसरों को दबा देना, मारपीट करना आदि भी इनके स्वभाव में हो सकते हैं।

धन की प्राप्ति के विषय में ऐसे जातक भाग्यशाली रहते हैं। उन्हें किसी रिश्तेदार से धन की प्राप्ति का योग बनेगा। स्त्री धन भी इनका एक स्रोत हो सकता है।

कन्या-विक्रय आदि में भी ऐसे व्यक्तियों का आन्तरिक योग हो सकता है। ऊपर से यह लोग बहुत सभ्य सम्भ्रांत बने रह सकते हैं।

८. वृश्चिक राशि का लग्न नक्षत्र फल

विशाखा नक्षत्र का शेष एक चरण (तो)—तुला राशि में वर्णित विशाखा नक्षत्र के सभी लक्षण के न्यून रूप में हो सकते हैं। नक्षत्र का अन्तिम चरण होने के कारण यह अगले नक्षत्र (अनुराधा) से अधिक प्रभावित हो सकता है।

फिर भी ऐसे जातक में सामान्य रूप से वाक् पटुता, अहंकार, क्रोध आदि की अधिकता रह सकती है।

ऐसा व्यक्ति कामुक प्रवृत्ति का कुछ चंचल चित्त से युक्त, झगडालू, किन्तु व्यापार आदि आजीविका में अधिक पटु होना चाहिए। उसे पाप-पुन्य से कोई मतलब नहीं, केवल स्वार्थ सिद्धि होनी चाहिए, जो किसी भी प्रकार से हो।

विशाखा नक्षत्र की उग्र स्थिति में एक योग अकाल मृत्यु (हत्या, दुर्घटना आदि) का भी पड़ता है। ऐसे जातक को उसका खतरा सम्भावित होगा। किन्तु वह योग पुण्य-दानादि धर्म कार्यों के द्वारा बहुत कुछ टाला जा सकता है।

ऐसा जातक श्वांस, प्लीहा, अपस्मार, उन्माद प्रभृति रोगों में से किसी एक से पीड़ित हो सकता है।

अनुराधा नक्षत्र के चारों चरण (ना नी नू ने)—ऐसा जातक साहसी, स्वावलम्बी, शक्तिशाली तथा यशस्वी होना चाहिए। उसका शरीर सुन्दर, मुख पर रौबीला व्यक्तित्व तथा स्वास्थ्य भी सामान्य से अधिक अच्छा होगा।

ऐसे व्यक्ति मिठाई आदि पकवानों से अधिक प्रेम करते हैं। उन्हें अपने स्वास्थ्य की अधिक परवाह नहीं होती, इसलिए अधिक भोजन में रुचि रखते हैं। खाना और मनोरंजन में लगे रहना भी किसी पाप ग्रह के कारण सम्भव हो सकता है।

यदि पुण्य अंशों की अधिकता हो, जो कि चरणों के अनुसार सम्भव है तो जातक एकान्त प्रिय, अध्ययनशील, धार्मिक प्रवृत्ति वाला तथा कष्टों के सहने की शक्ति वाला होता है।

दान, पुण्य, तीर्थयात्रा, भगवद दर्शन, वेदाध्ययन आदि में इसकी अधिक रुचि हो सकती है।

अपनी उक्त रुचि के कारण ही ऐसे व्यक्ति अधिक प्रशंसित और सम्मानित रहते हैं।

इनके पास पैसे की कमी नहीं रहती। अनेक कार्यों में सहयोग के कारण मित्रों का प्रेम भी प्राप्त होता रहता है।

इनकी प्रकृति में घुमक्कड़पन रहता है। यह विदेश यात्रा में भी दिलचस्पी लेते हैं।

परन्तु, जब अपने स्वार्थ का विषय होता है, तब यह किसी से भी नहीं चूकते। इनके चित्त में अस्थिरता भी इतनी होती है कि एक निश्चय पर दृढ़ कभी नहीं रह पाते। स्वार्थ की सिद्धि के लिए छल-प्रपंच या शक्ति से काम लेना पड़े तो वैसा ही करते हैं।

फिर भी ऐसा जातक सामान्य से कुछ विशिष्ट होकर लोक हितैषी ही सिद्ध हो सकता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र के चारों चरण (नो या यी यू)—ऐसा जातक कुछ न्याय प्रिय किस्म का, धर्म में रुचि रखने वाला तथा सन्तोषी होता है।

किन्तु आवश्यक होने पर उसकी रुचि किसी षड्यन्त्र में भी हो सकती है। उसका वह षड्यन्त्र सफल रह सकता है।

उसका व्यक्तित्व निखरा हुआ और सुन्दर होता है। वह अपने अच्छे कार्यों के कारण राज सम्मान भी प्राप्त कर लेता है। किन्तु उसके उन अच्छे कार्यों में वास्तविकता कम और ढोंग अधिक होता है।

सन्तान की दृष्टि से ऐसे व्यक्ति अधिक भाग्यशाली रहते हैं। उन्हें अति सन्तान का योग प्राप्त है।

गृहस्थ जीवन सामान्य रहना चाहिए। कभी-कभी पत्नी से अनबन आदि सामान्य व्यवधान उपस्थित हो सकते हैं।

ऐसे जातक कवि, लेखक, पत्रकार, साहित्यकार, कहानीकार, प्रशासक, निरीक्षक, सुपरवाइजर, टैक्सेशन के वकील चार्टड एकाउन्टेंट आदि में से भी कोई हो सकते हैं।

व्यवसाय में असफल रहने के अधिक चान्स रहते हैं। इस कारण जातक अपने व्यवसाय-परिवर्तन के लिए विवश हो सकता है।

कुछ सन्तोषी स्वभाव का होने के कारण ऐसे जातक को बहुत परेशानी नहीं होती।

९. धनुराशि का लग्न नक्षत्र फल

मूल नक्षत्र के चारों चरण (ये यो भा भी)—ऐसा जातक किसान, माली, व्यापारी, सरकारी नौकर, प्रशासक, इंजिनियर, जलपोत का अधिकारी, वायुयान चालक, रेल ड्राईवर आदि में से कुछ हो सकता है।

यह मनुष्य चिकित्सा व्यवसाय में भी दिलचस्पी ले सकता है। यदि दिलचस्पी लेता है तो उसे सफल हो जाना चाहिए।

इसे प्राकृतिक दृश्यों आदि से बड़ा लगाव रह सकता है। पेड़-पौधों के प्रति अधिक दिलचस्पी होती हैं।

ऐसे व्यक्ति अहंकारी बहुत होते हैं। अपने सामने किसी को कुछ भी नहीं समझते।

उनमें चालाकी भी बहुत होती है। विश्वासघात करने से भी नहीं चूकते। छल-कपट से इन्हें कोई परहेज नहीं होता।

ईर्ष्याभाव की भी अधिकता रह सकती है। कृतघ्न इतने कि उपकार करने वाले का कोई कार्य पड़े तो साफ इन्कार कर दें। अपना स्वार्थ सर्वोपरि मानना इनका स्वभाव है।

परन्तु, यह लोग वाचाल बहुत होते हैं। उसके कारण दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेना इनका स्वाभाविक गुण होता है। यही कारण है कि यह लोकप्रिय भी हो जाते हैं।

हिंसा से यह बहुत दूर भागते हैं, यदि क्रोध भी आता है तो बहुत कम। अधिकतर झंझटों को टालना ही उचित समझते हैं।

धार्मिक आडम्बर भी इनका एक योग है। दान, धर्म, लोकसेवा, साधु-सेवा आदि कार्यों में धन और समय व्यय करते बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं।

ऐसे जातक को अपमृत्यु का शिकार भी होना पड़ सकता है। हत्या, दुर्घटना, जल में डूबना आदि इसके कारण हो सकते हैं।

सामान्यतः यह लोग स्वस्थ रहते हैं। रोग घेरता है तो उन्माद प्रभृति व्याधि लग सकती है। परन्तु चिकित्सा से वह शीघ्र साध्य हो जाती है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चारों चरण (भू धा फ ढ)—ऐसा जातक सामान्य जीवन से युक्त होता है। उसमें कुछ उदारता और परोपकार के भाव भी रहते हैं।

किन्तु इनमें अभिमान की मात्रा भी कम नहीं होती। कार्य लेते हैं तो कड़ाई से। अनुशासन इतना कि सामने सिर उठाने का साहस किसी को नहीं होता। शत्रु तो सदैव भयभीत और शंकित रहते हैं तथा हर समय कन्नी काटते रहते हैं।

यह लोग सामान्यतः भाग्यशाली होते हैं। धन अधिक न होते हुए भी इनका कोई कार्य कभी रुकता नहीं।

ईश्वर में इनका अटूट विश्वास होता है। कठोर परिश्रम से घबराते नहीं, सदा कार्य में लगे रहते हैं।

मित्रों का इन्हें अच्छा सहयोग प्राप्त रहता है। इनके मित्र तथा सम्बन्धी प्रायः धोखेबाज नहीं होते।

गृहस्थ जीवन भी सुखी होता है। पत्नी सुन्दर और चतुर मिलती है। वह पति से प्रेम करने वाली तथा मधुर भाषिणी होती है। वह कभी झगड़ा झंझट पसन्द नहीं करती।

उत्तराषाढ़ा का एक चरण (भे)—ऐसा जातक कुछ धार्मिक विचार धारा का, विनम्र तथा मधुर भाषी होता है।

उत्तराषाढ़ा का प्रथम चरण प्रायः पूर्वाषाढ़ा के लक्षणों से अधिक प्रभावित रहता है, इसलिए उसके बहुत से लक्षण उस जातक में विद्यमान रहते हैं।

ऐसा जातक शांत प्रकृति का होता हुआ भी धन आदि के मामले में अधिक व्यस्त रहता है।

हो सकता है उसे अपना खर्च चलाने के लिए सट्टेबाजी अथवा तस्करी करनी पड़े।

ऐसा जातक अपना अपमान नहीं सह सकता तथा आवश्यक होने पर हिंसात्मक रुख से काम लेता है।

१०—मकर राशि लग्न नक्षत्र फल

उत्तराषाढ़ा के तीन चरण (भो जा जी)—इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक विनयी, ऊपर से शान्त किन्तु आन्तरिक रूप से अशान्त हो सकते हैं।

इनमें आचरण की दुर्बलता हो सकती है। कामुकता का आधिक्य, वैश्या आदि से प्रेम, मद्य-पान तथा हिंसात्मक विचारों से युक्त हो सकते हैं।

इन्हें धन, सन्तान आदि की सम्पन्नता प्राप्त रहती है। सामान्यतः प्रतिष्ठा भी मिलती है।

परन्तु, इनकी संगति अच्छी नहीं होती। फिर भी मित्रों की संख्या अधिक होती है। मित्रों से इन्हें सहयोग अधिक प्राप्त रहता है। इसलिए बिगड़ते हुए कार्य बन सकते हैं।

शरीर से दुर्बल, स्वास्थ्य सामान्य चेहरा सुन्दर और आकर्षक चाहिए।

ऐसे जातक की प्रवृत्ति सामान्य स्थिति में धार्मिक तथा विद्वानों का आदर करने वाली होगी।

कभी-कभी अशुभ योग के कारण जातक आर्थिक दृष्टि से कमजोर रह सकता है। किन्तु अनायास धन की प्राप्ति का शुभ योग भी उसके पक्ष में सम्भव है।

श्रवण नक्षत्र के चारों चरण (खी खू खे खो)—ऐसा जातक विवेकी, विद्वान, उदार चेता तथा उच्च विचारों का होना चाहिए।

परोपकार में उसका चित्त होगा। धर्म, शुभ कर्म, साधु संगीत आदि में मन लगेगा।

वाक् शक्ति प्रखर होगी। उसके भाषण से सभी वर्ग के व्यक्ति प्रसन्न रह सकते हैं।

उसके अनुयायियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ेगी। सम्भव है कि वह कोई उच्च पद प्राप्त कर ले।

ऐसे जातक प्रशासनिक सेवा में भी उच्च स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

उनमें अनुशासन-प्रियता अधिक होगी। आवश्यकता होने पर कड़ाई से कार्य लेने का साहस होगा।

इनमें कलात्मक अभिरुचि भी हो सकती है। चित्रकला और मूर्ति कला से लगाव सम्भव है।

ऐसे व्यक्ति कविता, संगीत, सिनेमा आदि में भी दिलचस्पी ले सकते हैं।

यदि शुभ ग्रह की प्रबलता हुई तो शुभ कर्मों में ही अधिक चित्त लगेगा। ऐसे व्यक्ति व्याख्यानदाता, लेखक तथा कवि आदि भी हो सकते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र के दो चरण (गा गी)—ऐसा जातक भी धार्मिक विचारधारा के होना चाहिए। उसमें श्रवण नक्षत्र के गुणों की अधिकता रहती है। प्रथम चरण 'गा' में जन्म लेने वाले जातक तो प्रायः उन्हीं गुणों से प्रभावित रहते हैं।

इनके लिए धन की कमी नहीं रहनी चाहिए। यदि किसी कारण-

वश कोई अर्थ संकट का समय आ भी जाय तो वह शीघ्र ही दूर हो जाता है।

साहस की इस जातक में अधिकता रहती है तथा वह परिश्रमशील होता है।

चित्त का उदार होता है। उसके गुणों के कारण समाज प्रतिष्ठा भी करता है।

परन्तु वासना की दृष्टि से ऐसे व्यक्ति दुर्बल प्रवृत्ति के हो सकते हैं। कामुकता की अधिकता के कारण स्त्रियों से झुकने की आदत बन जाती हैं।

पत्नी के प्रति तो और भी अधिक दब्बूपन हो सकता है। कभी-कभी तो पत्नी हाथ उठा दे तो यह उसे भी चुपचाप बर्दास्त कर लेते हैं। क्योंकि वे सैक्सी जीवन को अधिक महत्त्व देते हैं।

ऐसा जातक साहित्य से भी प्रेम करता है। वह कवि, लेखक आदि में से कुछ हो सकता है। इसके कारण सम्भव है कि वह प्रकाशन व्यवसाय अपना ले।

अन्य व्यापारों में भी दिलचस्पी हो सकती है। व्यवसायों में सफलता का योग होते हुए भी सम्भव है कि कभी बहुत अधिक घाटे की स्थिति उपस्थित हो जाय।

ऐसा जातक सामान्य योग में स्वाभाविक मृत्यु से मरता है। किन्तु क्रूर योग आने पर हिंसा या दुर्घटना का शिकार हो सकता है। अथवा धन या विषय भोग की अधिकता हत्या का कारण बन सकती है। उसे अपनी स्त्री के प्रति भी सतर्क रहना चाहिए।

ऐसे लोग राज-सम्मान के अधिकारी भी हो सकते हैं। सम्भव है वे अपनी योग्यता के आधार पर कोई अच्छा पुरस्कार भी प्राप्त कर लें

धनिष्ठा के प्रारम्भिक दो चरण सन्तान योग का अभाव उत्पन्न करते हैं। यदि किसी शुभ ग्रह की प्रबलता न हो तो वह योग ही प्रबल रहता है।

११. कुम्भ राशि का लग्न नक्षत्र फल

धनिष्टा के दो चरण (गू गे)— ऐसे जातक में मकर राशि में वर्णित धनिष्ठा के लक्षणों का प्रभाव अधिक रहता है।

ऐसा व्यक्ति धार्मिक विचारधारा का होते हुए भी अधिक विलास पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

ऐसा मनुष्य साहसी भी होना चाहिए, किन्तु उसका साहस संकरी वातावरण के कारण दब जाता है।

शुभ योग की प्रबलता वाले ऐसे जातक पुण्यकर्मी, दान और परोपकार में चित्त वाले, प्राचीन शास्त्रों के अध्येता तथा संगीत आदि में रुचि लेने वाले हो सकते हैं।

उन्हें भोग-विलास में अरुचि रहती है, इसलिए स्त्रियों के जाल में कठिनता से ही पड़ पाते हैं।

अध्ययन में रुचि के कारण विद्या में उनका अभ्यास बढ़ा-चढ़ा रहता है। चाहे डिग्री प्राप्त न की हो तो भी अनुभव उन्हें अधिक शिक्षित बना देती है।

सामान्य रूप से धन भी इतना रहता है कि कोई कार्य रुकने न पाये।

शतभिषा नक्षत्र के चारों चरण (गो सा सी सू)—ऐसा जातक सुखी, शान्त, बुद्धिमान, विवेकी तथा वाक् पटु होना चाहिए।

उसमें साहस, निर्भयता, स्वभाव में कठोरता, अनुशासन प्रेम आदि का भी समावेश रह सकता है।

ऐसे व्यक्ति के पाप ग्रह प्रबल होने पर उपर्युक्त लक्षणों में विपरीतता आ जाती है और झगडालू प्रवृत्ति, मुकदमेबाजी आदि के भाव उदय हो जाते हैं।

यदि व्यापारी, व्यवसायी, मामूली पदाधिकारी, उद्यमी, किसी नौकरी पर नियुक्त ओवरसियर, गणक, निरीक्षक, क्लर्क, पत्रकार या कुरुचि पूर्ण साहित्य के लेखक आदि हो सकते हैं।

व्याध वृत्ति, माँस-अण्डे आदि के विक्रय में संलग्न तथा तस्करी आदि से आजीविका कमाने वाला हो सकता है।

ऐसे व्यक्तियों की दृष्टि पैसे में सदा लगी रहती। एक-एक पैसे की बचत में तत्पर तथा पराया धन गड़पने की इच्छा के कारण अपनी प्रतिष्ठा खो बैठते हैं।

किन्तु किसी शुभ ग्रह के योग से यह नक्षत्र सात्विक भाव उत्पन्न कर सकता है। उसी स्थिति में ऐसा जातक पूर्ण रूप से ईमानदार सच्चरित्र रहना चाहिये।

पूर्वा भाद्रपदा के तीन चरण (से सो दा)—ऐसा जातक व्यवहार कुशल, अनेक कार्यों में चतुर तथा विद्वान हो सकता है।

साहस, स्फूर्ति, कार्य क्षमता आदि की अधिकता उसे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करा सकती है।

स्वभाव में रूखापन, शीघ्र क्रोधावेग, सहन शक्ति की कमी हो सकती है।

ऐसा मनुष्य हृदय से दुर्बल तथा डरपोक तबियत का होना चाहिए। परन्तु वह अपनी उस कमजोरी को छुपाये रखना और साहसी बनने का प्रयत्न करता है।

लोभी और कंजूस प्रवृत्ति का होने के कारण धन संचय में पीछे नहीं रहता।

फिर भी आर्थिक कष्ट से व्यथित हो सकता है। यह सम्भव है कि उसे किसी स्रोत से धन प्राप्त होता रहे।

विचारों में कामुकता रह सकती है। यह भी सम्भव है कि किसी स्त्री से ही धोखा हो।

दुर्बल मनोवृत्ति के कारण ऐसे जातक को अपनी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने पड़ सकते हैं।

ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा। सन्तान की अधिकता हो सकती है।

चित्त में अस्थिरता कभी-कभी हानिकारक बन सकती है। उससे बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं।

ऐसे व्यक्तियों की पत्नी चंचल चित्त की हो सकती है। उसके स्वभाव में उग्रता होगी।

पाप योग के कारण ऐसे जातक प्रेम आदि के झंझटों में प्राण दे सकते हैं।

किसी दुर्घटना में मृत्यु होने अथवा हत्या किये जाने की सम्भावना भी हो सकती है।

१२—मीन राशि का लग्न नक्षत्र फल

पूर्वा भाद्रपदा एक चरण (दी)—सामान्यतः कुम्भ राशि वर्णित पूर्वाभाद्रपदा के लक्षणों की इस जातक में अधिकता होगी।

वह धनवान और स्त्री आदि से सम्पन्न होने पर भी मानसिक रूप से सुखी कम ही होगा।

पाप योग के कारण उसकी प्रवृत्ति अच्छे कर्मों से हट सकती है।

यदि शुभ योग हो ऐसा व्यक्ति चतुर, धार्मिक, पूजा-पाठ आदि में रुचि रखने वाला हो सकता है।

ऐसे जातक को धन की कमी खलनी नहीं चाहिए। उसे किसी स्रोत से अनायास ही धन मिल सकता है।

सन्तान का योग कम होगा। शारीरिक स्वास्थ्य भी दुर्बल हो सकता है। यदि शुभ योग हुआ तो सन्तान का बाहुल्य सम्भव है।

गृहस्थ जीवन सामान्य, किन्तु कभी-कभी पत्नी से अनबन की सम्भावना होगी।

पत्नी चंचल चित्त की, उग्र स्वभाव की तथा पितृ पक्ष (पीहर) की पचने वाली हो सकती है।

उत्तरा भाद्रपदा के चारों चरण (दू थ झ ञ)—ऐसा जातक धार्मिक विचारधारा का होना चाहिये। उदार चेता और परोपकारी भी होगा।

सब प्रकार से सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, धन-सन्तान से युक्त रहेगा।

विद्वता में बढ़ा हुआ, अध्ययनशील, शास्त्रों में अभिरुचि रखने वाला, कवि, लेखक, पत्रकार, संगीतज्ञ, भक्त तथा उच्च साहित्य का प्रणेता होना चाहिए।

वाक्-पटु किन्तु कम बोलने वाला तथा उचित अवसर पर बोलने वाला होगा।

उदार हृदय, परोपकारी तथा धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला होना चाहिए।

ऐसा जातक सदैव कार्य में लगा रहता तथा व्यर्थ की बातों को पसन्द नहीं करता।

जिस कार्य को प्रारम्भ करता है उसे पूरा करके छोड़ना चाहता है। इसलिये वह सफल भी रहता है।

यह मनुष्य सफल गृहस्थ जीवन वाला होना चाहिए। पत्नी मिष्ट भाषिणी और सुन्दरी होगी। किन्तु अपना अपमान सहने में असमर्थ रहने के कारण विद्रोहिणी भी बन सकती है।

इस जातक की पत्नी भोग-विलास में अधिक दिलचस्पी लेने वाली होगी। परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि उसका आचरण दुर्बल हो सकता है।

ऐसा व्यक्ति जल यात्रा में अधिक दिलचस्पी लेगा। विदेश जानेकी इच्छा वाला यह जातक वहां से धन का लाभ भी प्राप्त कर सकता है।

यह भी सम्भव है कि ऐसा जातक धर्म प्रचार के लिए विदेश यात्रा करे। उसे मान-प्रतिष्ठा भी मिलनी चाहिये।

यदि स्वाभाविक मृत्यु न हो तो भूख हड़ताल, हत्या अथवा गलत उपचार या विष आदि के द्वारा मृत्यु का होना सम्भव होगा।

रेवती नक्षत्र के चारों चरण (दे दो चा चो)—ऐसा जातक मेधावी और विद्वान होना चाहिए। उसका व्यवसाय भी शिक्षा आदि से सम्बन्धित हो सकता है।

बुद्धजीवी होने के अधिक योग हैं। वकील, अध्यापक, कवि, लेखक पत्रकार, निबन्धकार उपन्यासकार, नाटककार आदि में से कुछ हो सकता है।

स्वभाव में सौम्यता, किन्तु स्थिरता। जिस बात का निश्चय कर लिया उससे हटने का कोई कार्य नहीं। ऐसा जातक प्रारम्भ से जिस कार्य को करता है, उसी को अन्त तक करता रहता है। उसमें नफा हो अथवा नुकसान।

धन के मामले में भी वह सम्पन्न होना चाहिए। अधिक धनिक न हो, तब भी उसे आवश्यकता के अनुसार धन तो किसी न किसी स्रोत से मिलता ही रहता है।

ऐसा जातक जहाँ उदार हृदय, परोपकार रत तथा सामान्य जनता को अपने वश में रखने का गुण रखता है, वहाँ साहसी और परिश्रमी भी होता है।

वह दूसरों के बड़े-बड़े कार्य निकालता है। मित्रों को भी अनेक प्रकार से सहायता देता रहता है। किन्तु ऐसे जातक के मित्र स्वार्थी अधिक होते हैं और वे जातक के किए हुए उपकारों की ओर ध्यान न रखता हुआ अपने ही मतलब को प्राथमिकता देता है।

ऐसा जातक जन-सेवा में पीछे नहीं रहता, इसलिए उसके अनुयायियों की संख्या भी तेजी से बढ़ने लगती है।

यदि यह कहा जाय कि ऐसा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न, प्रतिभाशाली और चतुर होता है तो यह कुछ अनुचित नहीं होगा।

ऐसा व्यक्ति प्रेमी स्वभाव का होता है। ईश्वर में विश्वास रखने वाला होने के कारण विद्वानों, आयु वृद्धों, समाज में मान्य पुरुषों तथा साधु-सन्तों को आदर की दृष्टि देखता है।

ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर, सच्चरित्र, मधुर भाषिणी तथा गृह कार्यों में योग्य होगी। इस प्रकार दाम्पत्य जीवन प्रायः सुखी रहेगा।

सन्तान के मामले में भी ऐसा जातक अधिक सौभाग्यशाली होता है। उसकी अधिक सन्तानें होती हैं, जो कि अधिकांशतः योग्य और प्रगतिशील समझी जाती हैं।

परन्तु, किसी पाप के फलस्वरूप परिणाम में विपरीतता हो सकती है। यदि ऐसा हो तो जातक रक्त सम्बन्धी विकार, हृद्रोग, जुकाम, खाँसी आदि से पीड़ित हो सकता है।

पाप योग के कारण ऐसे जातक की अकाल मृत्यु भी हो सकती है। कुछ अर्थों में उस अकाल मृत्यु का कारण स्त्री पुत्र आदि भी हो सकते हैं।

शुभ योग वाला ऐसा जातक, जो रेवती नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो, सब प्रकार से सौभाग्यशाली, सुखी, यशस्वी तथा जनता को अपने वश में रखने वाला होगा।

इस प्रकार उक्त वर्णन जातक को अपने जन्म नक्षत्र आदि के विषय में पूर्ण जानकारी देता है, जिसका उपयोग महत्वपूर्ण होगा।

लग्नों में शुभाशुभ ग्रहों का ज्ञान

लग्न में कौन-सा ग्रह शुभ है और कौन-सा अशुभ, इसका ज्ञान बहुत आवश्यक होता है। कुण्डली में जो ग्रह जिस कोष्ठक में बैठा हो उसमें वह शुभ है अथवा अशुभ, इसे जानने के लिए निम्न प्रकार विचार आवश्यक होगा—

मेष लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थिति ग्रह शुभ होंगे—

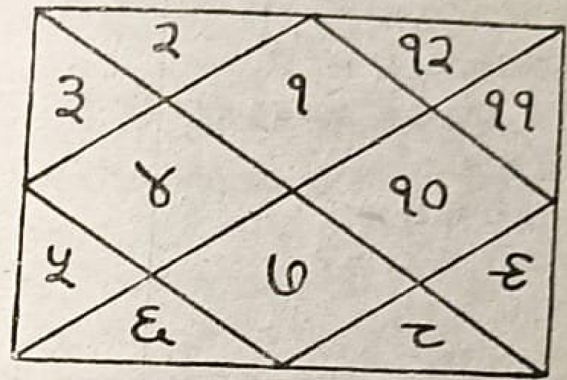
सूर्य—१, २, ३, ४, ५, ९, १०, ११,
चन्द्र—१, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११,
मंगल—१, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११; शुभ तथा आठवें कोष्ठक में शुभाशुभ दोनों।
बुध—१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११,
गुरु—१, २, ३, ४, ५, ७, ९, ११, १२.
शुक्र—१, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११, १२,
शनि—२, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११,
राहु—२, ६, ११, १२,
केतु—७, ९, ११, १२,

निम्न नम्बर कोष्ठकों में स्थिति ग्रह अशुभ होते हैं—

सूर्य—६, ७, ८, १२,
चन्द्र—६, ८, १२,
मंगल—१, ४, १२,
बुध—८, १२,
गुरु—६, ८, १०,
शुक्र—६, ८,

शनि—१, ६, ८, १२,
राहु—१, २, ४, ५, ८, ९, १०,
केतु—१, २, ३, ४, ५, ८, १०,

मेष लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ३)

उक्त कुण्डली मेष लग्न में उत्पन्न जातक की है। यदि इसमें लिखे १ नम्बर वाले कोष्ठक में सूर्य (सू) भी लिखा हो तो शुभ है। इसी प्रकार ऊपर बताये गये किसी भी शुभ कोष्ठक में 'सूर्य' लिखा हो शुभ होगा। इसके विपरीत ६, ७, ८, १२ नम्बर के कोष्ठकों में वह शुभ नहीं माना जाता।

वृष लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बर के कोष्ठकों में स्थित ग्रह शुभ होते हैं—

सूर्य—१, नम्बर पर शुभाशुभ तथा २, ३, ४, ५, ६, ८, १०; ११ १२, पर शुभ।
चन्द्र—२, ३, ४, ५, ६, ११, १२,
मंगल—१ नम्बर पर शुभाशुभ तथा २, ५, ८, १०, १२ पर शुभ
बुध—२, ३; ४; ५, ६; ८, १०; १२,

गुरु—२, ३, ४, ५, ६, ८, १२ पर शुभ तथा ६, १० पर शुभाशुभ।

शुक्र—२, ३, ४, ५, ८, १०, ११, १२,

शनि—२, ३, ४, ६, ७, ८, १०, ११, १२,

राहु—१, ३, ४, ६, ७, १०, ११,

केतु—१, ४, ६, ७, ६, १०, ११,

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होते हैं—

सूर्य—७, ६,

चन्द्र—१, ७, ८, ६,

मंगल—३, ४, ५, ६, ७, ६,

बुध—१, ७, ६, ११,

गुरु—१, ७, १०,

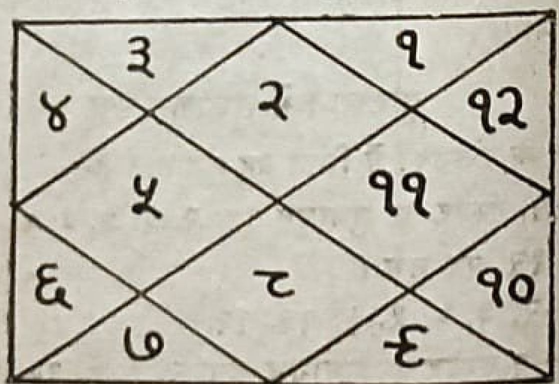
शुक्र—१, ६, ७, ६,

शनि—१, ५, ६,

राहु—२, ५, ८, ६, ११,

केतु—२, ३, ५, ८, ११,

वृष लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ४)

उक्त कुण्डली मेष लग्नोत्पन्न व्यक्ति की है। यदि इसमें २ नम्बर लिखे कोष्ठक में 'सू' (सूर्य, हो तो शुभ है। इसी प्रकार ऊपर अन्य शुभ नम्बरों के साथ सूर्य का होना शुभ, १ नम्बर के साथ हो तो शुभ भी और अशुभ भी, किन्तु ७ और ६ नम्बर के साथ 'सू' हो तो अशुभ समझिये। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का शुभाशुभ फल निश्चित करना चाहिए।

मिथुन लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रहों को शुभ समझें—

सूर्य—१, ३, ४, ५, ६, ८, ६, ११, १२,

चन्द्र—१, ३, ४, ५, ६, ७, ६, ११, १२,

मंगल—१, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२,

बुध—१, ४, ५, ६, ७, १२,

गुरु—१, ३, ४, ५, ६: ७, ६, ११, १२,

शुक्र—१, ३, ५, ७, ६, ११, १२,

शनि—१, ३, ४, ५, ६, ७, ६, ११, १२,

राहु—१, २, ३, ५, ७, ८, ११,

केतु—१, २, ५, ८, ६, ११,

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होंगे—

सूर्य—२, ७, १०,

चन्द्र—२, ८, १०,

मंगल—२, ४, ६,

बुध—२, ३, १०, ११

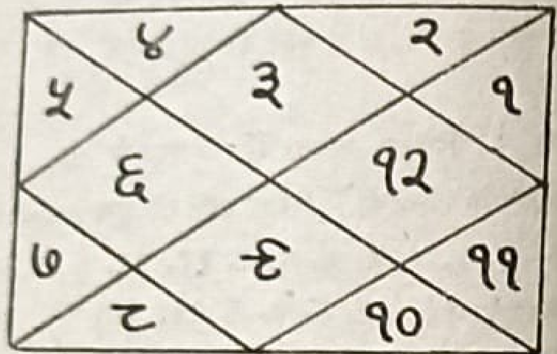
गुरु—२, ८, १०;

शुक्र—२, ४, ६, ८; १०

शनि—२, ८, १०,

राहु—४, ६, ९, १०, १२,
केतु—३, ४, ६, ७, १०, १२

मिथुन लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ५)

उक्त कुण्डली मिथुनोत्पन्न जातक की है। इसमें जिन कोष्ठक लिखे शुभ अंकों के साथ 'सू' लिखा हो वह शुभ और अशुभ अंक साथ 'सू' लिखा हो वह अशूभ होता है।

कर्क लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रहों को शुभ समझिये—

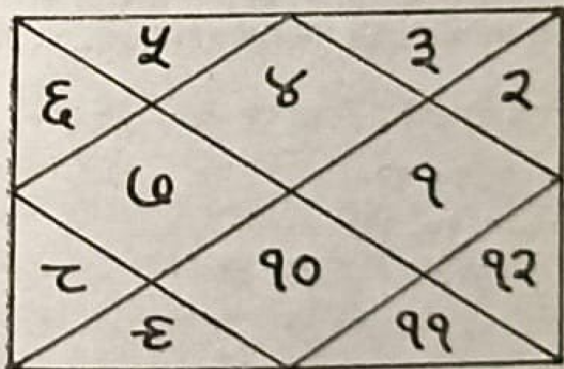
सूर्य—१, २, ४, ५, ६, ८, १२,
चन्द्र—१, २, ४, ५, ६, ७, १०, १२,
मंगल—१, २, ५, ६, ७, ८, १०, १२,
बुध—१, २, ४, ६, ७, ८, १०,
गुरु—१, २, ४, ५, ६, ७, ८, १२ पर शुभ तथा १० पर शुभा- शुभ।
शुक्र—१, २, ४, ५, ७, ८, १०, १२,
शनि—२, , ६, ७, ८, १०, १२ पर शुभ तथा ९ पर सामान्य

राहु—२, ३, ६, १२,
केतु—२, ६, ९, १२,

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होंगे—

सूर्य—३, ७, ९, १०, ११,
चन्द्र—३, ८, ९, ११,
मंगल—३, ४. ९, ११,
बुध—३, ५, ९, ११,
गुरु—३, ९, ११,
शुक्र—३, ६, ९, ११,
शनि—१, ३, ५, १२,
राहु—१, ४, ५, ७, ९, १०, ११,
केतु—१, ३, ४, ७, ८, १०, ११,

कर्क लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ६)

उक्त कुण्डली में, १, २, ४, ५, ६, ८, १२ अंकों में से किसी के साथ 'सू' शुभ तथा अन्य अंकों के साथ अशुभ माना जाता है। इसी कार अन्य ग्रहों के विषय में समझिए।

सिंह लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह शुभ होते हैं—

सूर्य—१, २, ३, ५, ६, ८, ९, ११,

चन्द्र—१, ५, ९ पर शुभाशुभ तथा २, ३, ४, ७, ११ पर शुभ।

मंगल—१, २, ३, ५, ६, ७, ८, ९, १०,

बुध—१, २, ३, ५, ६, ७, ८, ९, ११,

गुरु—१, २, ३, ५, ७, ८ ९, १२ पर शुभ ६ पर शुभाशुभ, ४ पर मोक्ष तथा ११ पर सामान्य।

शुक्र—१, २, ३, ५, ७, ८, ९, ११ पर शुभ तथा १२ पर शुभाशुभ।

शनि—२, ३, ५, ८, ९, ११ पर शुभ तथा १० पर शुभाशुभ तथा ७ नम्बर पर फल वाला होता है।

राहु—१, ३, ४, ७, १० पर शुभ तथा १२ पर सामान्य।

केतु—१, ४, ७, ९, १० पर शुभ तथा २, ६, १२ पर सामान्य।

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होते हैं—

सूर्य—४, ७, १०, १२,

चन्द्र—६, ८, १०, १२,

मंगल—४, १२,

बुध—४, १०, १२,

गुरु—१०,

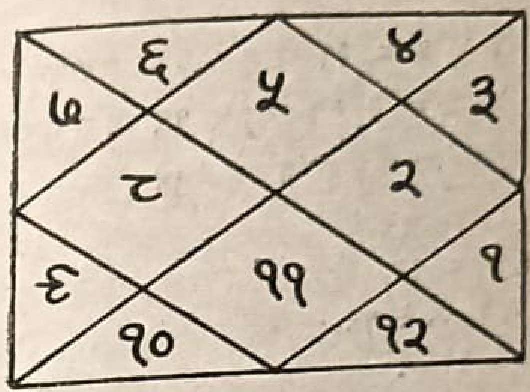
शुक्र—४, ६, १०,

शनि—१, ४, ६, १२,

राहु—२, ५, ६, ८, ९, ११.

केतु—५, ६, ८, ११,

सिंह लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ७)

उक्त कुण्डली में सूर्य का १, २, ३, ५, ६, ८, ९, ११ नम्बर के साथ स्थित रहना सिंह लग्न वाले जातक के लिए शुभ होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में समझें। अशुभ बताये गये अंक के साथ ग्रहों का स्थित रहना अशुभ फलदायक समझा जाता है।

कन्या लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रहों को शुभ समझिये—

सूर्य—१, ४, ५, ८, ११ पर शुभ २, ६, ९ पर शुभाशुभ।

चन्द्र—१, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११.

मंगल—१, २, ३, ६, ८, १०, ११.

बुध—२, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०.

गुरु—२, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १२.

शुक्र—१, ३, ४, ७, ८, ९, १०, १२ पर शुभ तथा ६ पर शुभाशुभ।

शनि—२, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०, ११, पर शुभ तथा १२ पर अशुभ।

राहु—२, ३, ४, ५, ८, ११ पर शुभ, ६ पर शुभाशुभ।

केतु—२, ४, ५, ८, ९, ११ पर शुभ, १२ पर शुभाशुभ।

निम्न नम्बरों वाले कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होंगे—

सूर्य—३, ७, १०, १२,

चन्द्र—२, ४, ८, १२,

मंगल—४, ५, ७, ९' १२,

बुध—१, ५, ११, १२,

गुरू—१, ५, १०, ११,

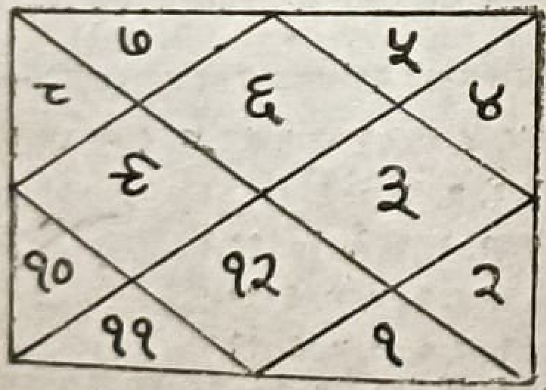
शुक्र—२, ३, ११,

शनि—१, ५,

राहु—१, ७; ९, १२,

केतु—१, ३, ६, ७, १०,

कन्या लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ८)

उक्त कुण्डली कन्या लग्नोत्पन्न जातक की है। यदि इसमें एक नम्बर अंकित कोष्ठक में सूर्य हो तो शुभ है। इसी प्रकार ४, ५, ८, ११, नम्बर अङ्कित कोष्ठक में सूर्य ही को भी शुभ समझें। इसके विपरीत अशुभ। अन्य ग्रहों का अनुमान भी इसी विधि से करें।

तुला लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थिति ग्रहों को शुभ समझें—

सूर्य—१, ३, ४, ५, ८, ९, १०, ११.

चन्द्र—१, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११.

मंगल—१, ३, ५, ७, ८, ९, १०, ११.

बुध—१, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११.

गुरु—१, ३, ४, ५, ७, ८, ९, ११, १२.

शुक्र—१, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १०, ११, १२

शनि—३, ४, ५, ७, ८, ९, १०, ११.

राहु—१, २, ३, ५, ६, ७, ११.

केतु—५, ६, ९, १२.

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रहों को अशुभ समझिए—

सूर्य—२, ६, ७, १२,

चन्द्र—२, ६, ८, १२,

मंगल—२, ४, ६, १२,

बुध—२, १२,

गुरु—२, ६, १०,

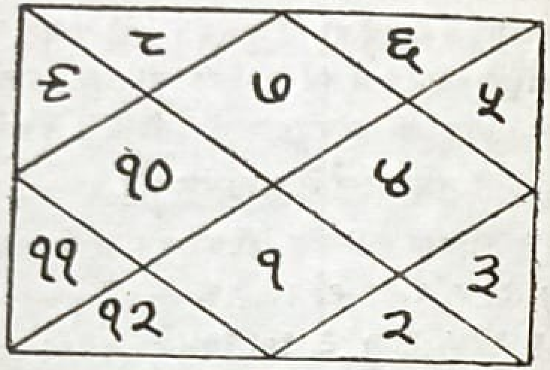
शुक्र—२, ६,

शनि—१, २, ६, १२,

राहु— ४, ७, ८, ९, १०, १२,

केतु—१, २, ३,४, ७, ८, १०, ११,

तुला लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ९)

तुला लग्नोत्पन्न जातक की उक्त कुण्डली में, १, ३, ४, ५, ८, ९, १०, ११, अंकों वाले कोष्ठकों में से किसी एक कोष्ठक में यदि अंक के साथ 'सू' भी हो तो सूर्य ग्रह की प्रतीक यह अक्षर शुभ होना व्यक्त करता है, इसके विपरीत अंक के कोष्ठक में हो तो अशुभ है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में शुभाशुभ का वर्णन किया जायगा।

वृश्चिक लग्न में शुभाशुभ ग्रह

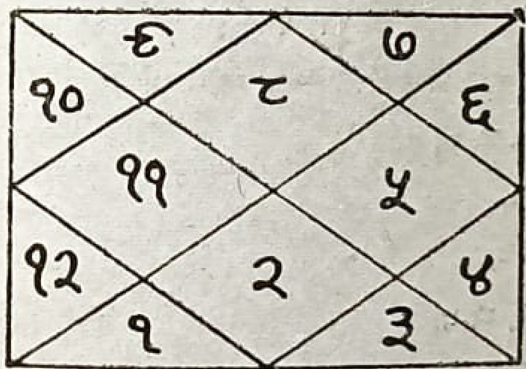
निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थिति ग्रह शुभ हैं—

सूर्य–१, २, ४, ५, ६, ८, ९. १०, १२,
चन्द्र–२, ४, ५, ६, ९, १०, ११, १२,
मंगल–१, २, ५, ८, ८, १०, ११, १२,
बुध–२, ३, ४, ५, ६, ८, ९, १०, ११,
गुरु–२, ४, ५, ६, ८, ९, ११, १२,
शुक्र–२, ४, ५, ८, १०, ११, १२,
शनि–२, ४, ६, ८, ९, १०, ११, १२,
राहु–१, ३, ६, ७, १०, १२,
केतु–१, ६, ७, ९, १०,

निम्न नम्बर के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ है—

सूर्य—३, ७, ११
चन्द्र—१, ३, ७, ८
मंगल—३, ४, ७, ९
बुध—१, ७, १२
गुरु—१, ३, ७, १०
शुक्र—१, ३, ६, ७
शनि—१, ३, ५, ७
राहु—२, ५, ८, ९, ११
केतु—२, ३, ५, ८, ११, १२

वृश्चिक लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० १०)

वृश्चिक लग्नोत्पन्न जातक की उक्त कुण्डली में १, २, ४, ५, ६, ८ ९, १०, १२ अंकों के साथ जिस कोष्ठक में सूर्य हो वह शुभ है। उसके विपरीत अशुभ होता है, अन्य ग्रहों के विषय में भी इसी प्रकार समझना चाहिए।

धनु लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों वाले कोष्ठकों में स्थिति ग्रह शुभ होते हैं—

सूर्य—१, ३, ५, ६, ९, १०, ११, १२,

चन्द्र—१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२,

मंगल—१, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२, पर शुभ तथा २, ८ पर शुभाशुभ ।

बुध—१, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२,

गुरु—१, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ११, १२

शुक्र—१, ३, ५, ७, ९, १०, ११, १२, पर शुभ तथा २ पर शुभाशुभ ।

शनि—३, ५, ६, ७, ९, १०, ११, १२,

राहु—२, ३, ५, ६, ७, ८, १२,

केतु—२, ५, ७, ८, ९, ११, १२,

निम्न नम्बरों वाले कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ हैं—

सूर्य—२, ४, ७, ८,

चन्द्र—८,

मंगल—४,

बुध—२, ४, ८,

गुरु—२, ८, १०,

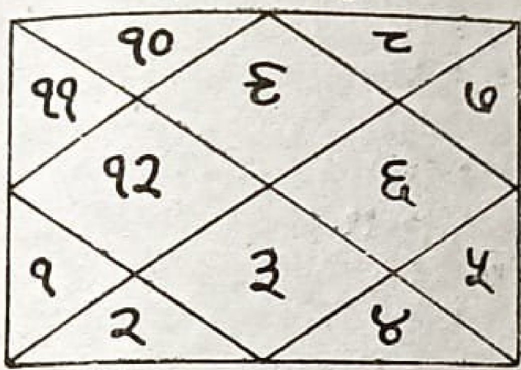
शुक्र—४, ६, ८,

शनि—१, २, ४, ८,

राहु—१, ४, ९, १०, ११,

केतु—१, ३, ४, ६, १०,

धनु लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० ११)

उक्त लग्न कुण्डली धनु लग्न में उत्पन्न जातक की है। इसके १, ३, ५, ६, ९, १०, ११, १२ नम्बर लिखे हुए कोष्ठक में से किसी एक कोष्ठक में नम्बर के साथ 'सू' भी लिखा हो तो शुभ होगा तथा इनसे भिन्न कोष्ठक में लिखा (सू) अशुभ फलकारी होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों विषय में अनुमान करें।

मकर लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह शुभ होते हैं—

सूर्य—१, २, ३, १२, पर शुभ, ५, ६, पर सामान्य

चन्द्र—१, २, ४, ६, ७, १०, ११, १२,

मंगल—१, २, ६, ७, ८, १०, ११, १२,

बुध—१, २, ६, ७, ८, १०, ११ पर शुभ, ४ पर सामान्य

गुरु—१, २, ४, ६, ७, ८, १२,

शुक्र—१, २, ४, ७, ८, १०, ११, १२,

शनि—२, ४, ६, ८, १०, ११, १२, पर शुभ ७ पर सामान्य

राहु—२, ३, ६, ८, १२,

केतु—२, ६, ८, ९, १२,

निम्न नम्बरों वाले कोष्ठकों में स्थिति ग्रह अशुभ हैं—

सूर्य—४, ७, ६, ११,

चन्द्र—३, ५, ८, ६,

मंगल—३, ४, ५, ६,

बुध—३, ५, ६, १२,

गुरु—३, ५ ६, १०, ११,

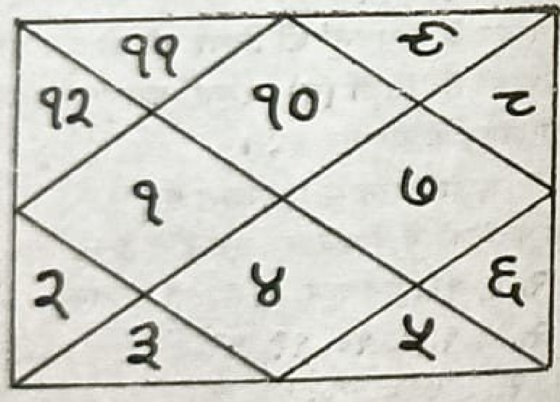
शुक्र—३, ५, ६, ६,

शनि—१, ३, ५, ६,

राहु—१, ४, ५, ७, ६, १०, ११,

केतु—१, ४, ५, ७, १०, ११,

मकर लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० १२)

मकर लग्नोद्भूत जातक की उक्त लग्न कुण्डली में यदि १, २, ३, ८, १२, अंक में से किसी भी अंक में से किसी भी अंक के कोष्ठक में सूर्य भी है तो वह शुभ होगा।

इसके विपरीत ४, ७, ६, ११ अंक लिखे कोष्ठक में सूर्य का अंकन अशुभ फल देने वाला होगा।

इस प्रकार उक्त निर्देशों को देखकर अन्य ग्रहों के शुभ अथवा अशुभ होने का निर्णय किया जा सकता है। जिन अंकों के साथ शुभाशुभ वाले ग्रहों का अंकन हो तो उसे पुण्य योग में शुभ और पाप में अशुभ समझें।

कुम्भ लग्न में शुभाशुभ

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह शुभ होते हैं—

सूर्य—१, २, ३, ५, ८, ६, ११, १२

चन्द्र—१, २, ३, ४, ५, ७, ६, ११, १२,

मंगल—१, २, ३, ५, ७, ८, ६, ११, १२,

बुध—१, २, ३, ५, ७, ८, ६, ११,

गुरु—१, ३, ४, ५, ७, ८, ६, ११, १२, पर शुभ तथा ६ पर शुभाशुभ।

शुक्र—१, २, ३, ४, ७, ८, ६, ११, १२,

शनि—२, ३, ५, ७, ८, ६, ११, पर तथा १० पर शुभाशुभ।

राहु—१, ३, ४, ७, १० पर शुभ तथा ६ पर शुभाशुभ।

केतु—१, ४, ७, ६, १० पर शुभ तथा १२ पर शुभाशुभ।

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होंगे—

सूर्य—४, ६, ७, १०,

चन्द्र—६, ८, १०, १२,

मंगल—३, ४. ६. १०,

बुध—४, १०, १२,

गुरु—२, १०,

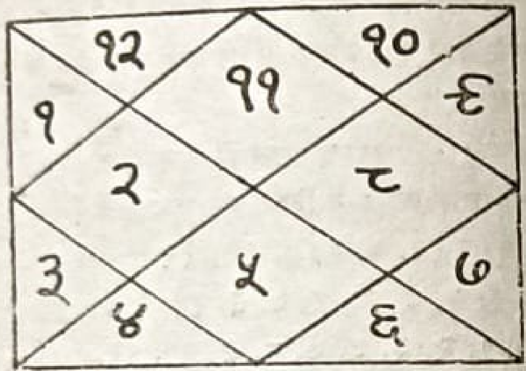
शुक्र—५, ६, १२,

शनि—१, ४, ६, १२,

राहु—२, ५, ८, ६, ११, १२,

केतु—२, ३, ५, ६, ८, ११,

कुम्भ लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० १३)

उक्त कुण्डली कुम्भ लग्नोद्भूत जातक की है। इसमें जिस कोष्ठक में १, २, ३, ५, ८, ९, ११, या १२ के अंक के साथ 'सू' (सूर्य) भी अंकित हो तो वह शुभ सूचक है।

यदि ४, ६, ७ या १० के साथ 'सू' अंकित होता हो तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के अंकन के द्वारा शुभ या अशुभ ग्रह अनुमान होगा।

मीन लग्न में शुभाशुभ ग्रह

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह शुभ होते हैं—

सूर्य—१, २, ३, ४, ५, ६, ८, ९, १०, १२.

चन्द्र—१, २, ३, ४, ६, ९, १०, १२.

मंगल—१, २, ३, ६, ८, ९, १०, १२.

बुध—१, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०.

गुरु—१, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०, १२.

शुक्र—१, २, ३, ४, ८, ९, १०, १२.

शनि—२, ३, ४, ६, ७, ८, १०, १२.

राहु—२, ३, ४, ८, १०, ११, पर शुभ तथा ६ पर शुभाशुभ।

केतु—२, ५, ८, ९, १०, ११.

निम्न नम्बरों के कोष्ठकों में स्थित ग्रह अशुभ होते हैं—

सूर्य—७, ११.

चन्द्र—५, ७, ८, ११.

मंगल—४, ५, ७, ११.

बुध—५, ७, ११, १२.

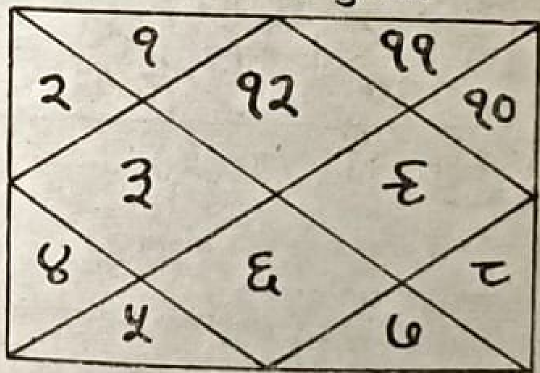
गुरु—५, ७, ११.

शुक्र—५, ६, ७, ११.

राहु—१, ४, ७, ९, १२.

केतु—१, ३, ४, ६, ७, १२.

मीन लग्न की कुण्डली



(चित्र नं० १४)

उक्त कुण्डली मीन लग्न में उत्पन्न जातक की है। इसमें यदि जन्म लग्न के साथ सूर्य हो (अर्थात्) सूर्य १२ के कोष्ठक में हो तो बहुत शुभ होता है। यदि ७ या ११ नम्बर के कोष्ठकों को छोड़ कर (जिनमें वह अशुभ होता है) शेष कोष्ठकों में भी सूर्य का स्थित होना शुभ ही है।

इसी प्रकार यदि गुरु ५, ७ या ११ नम्बर अंकित कोष्ठक में पड़ा है तो वह अशुभ होगा। जबकि १, २, ३, ४, ६, ८, ९, १० या १२ नम्बर के साथ पड़ा हुआ गुरु शुभ होगा।

अन्य ग्रहों के शुभाशुभ निर्णय विषयक नियम भी यही है। इसी विधि से निश्चय करना चाहिए।

ग्रहों का शुभाशुभ जानने सम्बन्धी एक उदाहरण—

नीचे एक कुण्डली दी जाती है, जो कि छत्रपति शिवाजी की है। उसे आलोचनात्मक दृष्टि से देखकर शुभाशुभ विषय निश्चय कीजिए—



(चित्र नं० १५)

उक्त कुण्डली में—

सूर्य ११ वें नम्बर के कोष्ठक पर होने से शुभ है।

चन्द्रमा ६ वें नम्बर के साथ अशुभ है।

मंगल ३ सरे नम्बर के साथ शुभ है।

बुध १२ वें नम्बर के साथ अशुभ है।

गुरु १ वें नम्बर के साथ सामान्य है।

शुक्र प्रथम नम्बर के साथ सामान्य है।

शनि वें नम्बर के साथ क्रूर फल वाला है।

राहु ३ वें नम्बर के साथ शुभ है।

केतु ९ वें नम्बर के साथ शुभ है।

उक्त कुण्डली में शनि का पूर्ण प्रभाव है। सिंह लग्न की कुण्डली में सातवें नम्बर का कोष्ठक जन्म लग्न से तीसरे भाव में माना जाता है। यदि इसमें शनि बैठा है तो वह अपने जातक को अत्यन्त क्रोधी और दुःसाहसी बनाकर संघर्षों में फँसाये रखता है। ऐसा जातक किसी भी दुःसाहस भरे भीषण कर्म करने में भी पीछे नहीं रहता।

परन्तु मंगल, राहु केतु, सूर्य आदि के शुभ होने के कारण वह अपने जीवन को संकट से उबार लेता है। उसे अत्यन्त परिश्रम और धैर्य से काम लेना होता है, तब कहीं अपनी योजनाओं की सफलता के लिए अवसर प्राप्त कर पाता है।

ऐसा जातक चरित्र की दृष्टि से बहुत आदर्श होता है। वह राष्ट्र, समाज, धर्म आदि के प्रति अपने कर्तव्य में सजग रहता हुआ प्राणों की बाजी लगाने से भी नहीं हिचकता। छत्रपति शिवाजी में तो आदर्श चरित्र, निःस्वार्थता, देश-भक्ति, धर्म-निष्ठा आदि थी, वे सब उक्त ग्रहों के शुभाशुभ फल के रूप में ही थीं।

ग्रहों के स्थानानुसार प्रभाव

ग्रहों का बलवान रहना

कौन ग्रह किस स्थान में स्थित रहकर बलवान होता है यह ज्ञान फल-निर्देश के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिये नीचे यह बताया जाता है कि कौन सा ग्रह किस कोष्ठक में हो तो वह बलवान रहता है—

सूर्य—सातवें कोष्ठक (भाव) में

चन्द्र—चौथे कोष्ठक में

मंगल—तीसरे और छठे में

बुध—पाँचवें कोष्ठक में

गुरु—लग्न के कोष्ठक में

शुक्र—बारहवें कोष्ठक में
शनि—सातवें कोष्ठक में

□

सूर्य का शुभाशुभ फल-निर्देश

सूर्य को सब ग्रहों में अत्यधिक प्रभावकारी मानते हैं। जिस जातक की जन्म कुण्डली में सूर्य शुभ स्थान में हो तो वह उसे उच्च विचार का, परोपकारी, शुभकर्मी, तेजस्वी, वीर, साहसी आदि बना देता है। किन्तु, सूर्य के शुभ होने का अर्थ जातक का हठी और क्रोधी प्रवृत्ति का भी बना देना है।

अशुभ स्थान में पड़ा हुआ सूर्य अस्वास्थ्यकर होता है। ऐसा रोगी दुर्बल, भीरु, खिन्न चित्त का, कायर तथा नेत्र रोग आदि से पीड़ित हो सकता है। ऐसा जातक मानसिक रूप से अधिक व्यस्त, चिन्तित भयातुर अथवा अन्य प्रकार से दुःखित रह सकता है। स्थानानुसार निम्न प्रभाव होना चाहिए—

प्रथम घर के सूर्य का प्रभाव

प्रथम कोष्ठक (घर) में सूर्य वाला जातक दुबले-पतले शरीर का ऊँचे माथे और उच्च नासिका आदि से युक्त तथा लम्बे कद का होगा। चित्त से चंचल, पारिवारिक कलह के कारण खिन्न चित्त, क्रोधी तथा स्वाभिमान को अधिक महत्व देने वाला होगा।

ऐसे जातक की पत्नी, माता या भाई को रोगादि कष्ट, स्वयं को सिर दर्द, नेत्र-दर्द आदि से पीड़ा हो सकती है। किन्तु जातक धैर्यवान, साहसी और वीर होता है, इसलिए पीड़ा की चिन्ता न करता हुआ अपना समय यापन करता है।

इस जातक में विदेश यात्रा की इच्छा तीव्र होती है घुमक्कड़ स्वभाव का और प्राकृतिक दृश्यों में अधिक दिलचस्पी रखने वाला होता है। धन के विषय में कष्ट नहीं उठाना पड़ता तथा गृहस्थ जीवन सम्बन्धी मामलों में भाग्यशाली समझा जाता है।

दूसरे घर के सूर्य का प्रभाव

यदि सूर्य दूसरे घर में पड़ा हो तो यह जातक को बहुत भाग्यशाली बनाता है। उसे धन, सन्तान, स्त्री आदि का पूरा सुख प्राप्त होता है। राज्य से सम्मान तथा धन-प्राप्ति का अनायास योग हो सकता है। परन्तु, स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य, कान, नेत्र अथवा कंठ रोग से पीड़ित, बांधवों और रिश्तेदारों से पत्नी के कारण विरोधी भी सम्भव है।

तीसरे घर के सूर्य का प्रभाव

यदि सूर्य तृतीय घर में है तो भी सौभाग्य का सूचक है। ऐसा जातक शूरवीर, साहसी, भय रहित, प्रतापी तथा यशस्वी होना चाहिए उसका प्रखर व्यक्तित्व होगा।

ऐसे व्यक्ति धार्मिक विचारधारा के होते हैं। दान, धर्म, तीर्थ-यात्रा मन्दिर, धर्मशाला के निर्माण आदि में तत्पर रहता है। उसे मित्रों का सहयोग सभी कार्यों में मिल जाता है। छोटे भाई उसकी अनुज्ञा में तत्पर रहते हैं।

चौथे घर के सूर्य का प्रभाव

यदि सूर्य चतुर्थ घर में पड़ा है तो यह शुभ लक्षण नहीं है। ऐसा जातक धन, स्वास्थ्य, मान-प्रतिष्ठा आदि के मामलों में सुखी नहीं रह पाता।

सूर्य ग्रह की यह स्थिति जातक को मातृ-सुख से वंचित करती है। उसके शत्रुओं को प्रबल कराके जातक को पराजय का सामना कराना भी इसी स्थिति का प्रभाव है।

राज्य से हानि, अर्थ-दण्ड आदि, धन की अधिक कमी तथा विदेश में ही रहने लगे।

पाँचवें घर के सूर्य का प्रभाव

यदि सूर्य पाँचवें घर में बैठा हो तो विद्या बल को प्रदर्शित करता है। ऐसा जातक उच्च शिक्षा-प्राप्त, मेधावी, अध्ययनशील तथा तर्क शक्ति में प्रबल हो सकता है।

किन्तु, क्रोधी अधिक होगा। उदर-रोग से पीड़ित और खिन्नचित्त संतान की दृष्टि से भी परेशान तथा धनाभाव से दुःखित होना चाहिए।

छठे घर के सूर्य का प्रभाव

छठे घर में विद्यमान सूर्य जातक को साहसी, निर्भय तथा परिश्रमी बनाता है। ऐसा जातक स्वस्थ, रोग-रहित, वीर्यवान, कुलीन तथा रोबदार होना चाहिए।

उसे शत्रु या मित्र कोई दबा नहीं सकता। किन्तु झगड़े झंझट लग सकते हैं। किसी अधिक प्रभावशाली व्यक्ति से अथवा राज्य से विवाद चल सकता है।

ऐसे व्यक्ति न्यायवान होते हैं और न्याय के पीछे संघर्ष करते रहते हैं, उन्हें किसी दुर्घटना में सामान्य चोट आ सकती है। यह भी सम्भव है कि कोई पशु ही चोट मारकर घायल कर दे।

छठे घर का सूर्य जातक के मातृ कुल के लिए हानिकारक माना जाता है। उसके जन्म के बाद, कुछ ही दिनों में, नाना, मामा आदि में से किसी की मृत्यु हो सकती है।

सातवें घर के सूर्य का प्रभाव

सातवें घर में सूर्य बैठा हो तो यह जातक को दुबले-पतले शरीर का होना व्यक्त करता है। उसका स्वास्थ्य भी दुर्बल हो सकता है। ऐसा जातक क्रोधी भी होना चाहिए।

माता-पिता को रोग होना सम्भव है। इस जातक के विवाह एक सेअधिक हो सकते हैं। प्रथम पत्नी अधिक समय तक किसी गंभीर रोग से रोगिणी रह सकती है अथवा मर सकती है। परन्तु जातक का दूसरा विवाह शीघ्र हो सकता है।

यदि जातक व्यापारी है तो व्यापार में हानि और किसी नौकरी में है तो अवनति अथवा नौकरी छूटने आदि के कारण चिन्ताग्रस्त रह सकता है। किसी कारणवश राजदण्ड भी चिन्ता का एक कारण हो सकता है। ऐसा जातक उतार-चढ़ाव में पड़ा रहता है।

आठवें घर के सूर्य का प्रभाव

आठवें स्थान का सूर्य मनुष्य को क्रोधी और लापरवाह स्वभाव का बनाता है। किसी भी कार्य में उसमें धैर्य का अभाव रहना चाहिए। इस कारण कार्य बिगड़ना भी सम्भव है।

ऐसे जातक को चिन्ताएँ भी लगी रहती हैं। इसलिए वह मादक द्रव्यों के सेवन का आदी हो सकता है। सैक्स के मामले में भी कुछ उच्छृंखल प्रवृत्ति हो सकती है। इस कारण उसे वीर्य दोषों का शिकार बनना पड़ सकता है।

ऐसे जातक का स्वयं का स्वास्थ्य आन्तरिक तौर पर बहुत अच्छा नहीं होता। माता-पिता भी रोग-पीड़ित रह सकते हैं। किन्तु भाइयों को कष्ट नहीं होना चाहिये। वे सुखी रहते हैं।

नवें घर के सूर्य का प्रभाव

नवें घर में बैठा सूर्य जातक को सब प्रकार सम्पन्न और सुखी प्रकट करता है। उसके घर में धन की कमी नहीं होनी चाहिये। वाहन तथा नौकर-चाकर भी हो सकते हैं।

ऐसा जातक स्वयं स्वस्थ रहता है। उसके माता-पिता भी बहुत समय तक स्वस्थ तथा सुखी रहते हैं। परन्तु, बड़े भाई का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

नवें घर का सूर्य जातक के स्वभाव में क्रोध, वासना, स्वार्थ-चिन्तन आदि की प्रवृत्ति उत्पन्न कर देता है। इस कारण सम्भव है कि उसकी रुचि दान, धर्म, तीर्थ यात्रा आदि तथा मोक्ष प्राप्ति के प्रतिकूल रहे।

दसवें घर के सूर्य का प्रभाव

दसवें घर में बैठा हुआ सूर्य मनुष्य को अत्यन्त सौभाग्यशाली बनता है। ऐसा व्यक्ति कोई राजा, राष्ट्राध्यक्ष, सेनापति, अमात्य आदि में से कोई उच्च पद प्राप्त हो सकता है।

धन, सम्पत्ति, नौकर-चाकर वाहन आदि की भी उसे कोई कमं नहीं होती। यदि कोई उद्योगपति है तो राज-सम्मान प्राप्त, समाज में प्रतिष्ठित और यशस्वो होगा।

स्वयं का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक होगा। परन्तु जन्म के बाद शीघ्र या कुछ दिनों में माता की मृत्यु हो सकती है।

ग्यारहवें घर के सूर्य का प्रभाव

ग्यारहवें घर में बैठा हुआ सूर्य मनुष्य को शुभाशुभ फलों से युक्त बनाता है ऐसा जातक धनादि से सम्पन्न होगा तो स्वास्थ्य की दृष्टि से उदर व्याधि से पीड़ित भो हो सकता है।

ऐसे व्याधि को मातृ सुख प्राप्त रहता है। भाई दुबले-पतले या अस्वस्थ हो सकते हैं। ज्येष्ठ पुत्र किसी गम्भीर रोग से पीड़ित रह सकता है।

सामान्य रूप से देखें तो ऐसा जातक सन्तान की ओर से परेशान रह सकता है। राज-कार्य उसकी आजीविका के स्रोत हो सकते हैं। व्यापार करता है तो उसमें भी सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ होता है।

बारहवें घर के सूर्य का प्रभाव

बारहवें घर में बैठा हुआ सूर्य बहुत शुभ नहीं होता है। उसके

प्रभाव से जातक शूर, वीर और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला तो हो सकता है किन्तु स्वास्थ्य को खराब रखता है।

ऐसा जातक मस्तिष्क से दुर्बल तथा नेत्र विकारों से पीड़ित रह सकता है। साथ ही स्वार्थ तथा नेत्र-विकारों से पीड़ित रह सकता है। साथ ही स्वार्थ की मात्रा अधिक होने के कारण मित्रों से विरोध सम्भव है।

सूर्य ग्रह का ः ामान्य फल-निर्देश

यदि सूर्य मेष, सिंह, वृश्चिक अथवा धनु राशि पर है तो वह शुभ अधिक और अशुभ कम होगा। किन्तु, मकर अथवा कुम्भ राशि में स्थित सूर्य अशुभ अधिक और शुभ कम होगा। शेष राशि (वृष, मिथुन कर्क, कन्या, तुला, मीन) में उसकी स्थिति सामान्य फल वाली समझनी चाहिये।

●

चन्द्रमा का शुभाशुभ फल-निर्देश

चन्द्रमा भी एक प्रमुख ग्रह है और अपना प्रभाव व्यक्त करने में भी पूर्ण समर्थ। यह किस घर में बैठा है, इसका विचार करते हुए शुभाशुभ निर्देश में बहुत कुछ सरलता रहती है। बारह राशियों पर चन्द्रमा का योग यहाँ पृथक् पृथक् कहा जाता है—

प्रथम घर के चन्द्रमा का प्रभाव

प्रथम घर में स्थिति चन्द्रमा बली होने पर शुभ और निर्बल होने पर अशुभ होता है।

बली से अभिप्राय शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा से है। यदि वह मेष, वृष,

कर्क, तुला या मीन राशि के जातक को धन से सम्पन्न, रोग-रहित, स्वस्थ तथा सुखी बनाता है।

ऐसे व्यक्ति तेजस्वी, कान्ति युक्त श्रेष्ठ विचाराधारा के अध्यापनशील और ज्ञानवान होने चाहिये। उनमें संगीत तथा काव्य आदि साहित्य से लगाव हो सकता है।

मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर या कुम्भ का निर्बल चन्द्रमा हो तो उसके फलस्वरूप जातक अवस्वस्थ, चिन्तित, दु:खित, रोगी तथा धनहीन हो सकता है।

दूसरे घर के चन्द्रमा का प्रभाव

दूसरे घर में बैठा हुआ चन्द्रमा अत्यन्त सौभाग्य का सूचक है। ऐसे जातक के पास अपार धन होना चाहिए। यदि वह अधिक पैसे वाला नहीं है तो उसे कहीं से सहसा धन की प्राप्ति होनी चाहिए। हो सकता है कि कोई लाटरी ही फल जाय।

इस जातक का आकर्षक व्यक्तित्व और व्यापारी-प्रतिभा होनी चाहिए। चेहरा सुन्दर, बड़े नेत्र, सुघड़ नासिका आदि से युक्त ऐसा मनुष्य भोग-विलास प्रिय भी हो सकता है।

तीसरे घर के चन्द्रमा का प्रभाव

यदि चन्द्रमा तीसरे घर में बैठा हो तो ऐसा व्यक्ति सुशील और चरित्रवान होता है। उसकी रुचि, धर्म, शास्त्राध्ययन, तीर्थ यात्रा, भजन, कीर्तन आदि में हो सकती है।

ऐसा जातक मधुर भाषी, दूसरों का आदर करने वाला, साथ ही अपना काम निकालने में कुशल होता है।

इस जातक में स्वावलम्बन की मात्रा अधिक होती है। यह अपने परिश्रम से भी पर्याप्त धन अर्जित कर लेता है।

अच्छे भरे परिवार से सम्पन्न यह मनुष्य अपने भाई-बहिनों का स्नेह प्राप्त करने में भी सफल रहता है।

पांचवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

यदि चन्द्रमा पाँचवें घर में बैठा हो तो वह जातक को सुखी बनाता है।

वह या तो कोई सफल व्यापारी या उच्च पद प्राप्त अधिकारी होना चाहिए।

जवाहिरात के व्यापार से लाभ की सम्भावना अधिक रहेगी। यदि सरकारी अधिकारी है तो उसके हाथ में रुपये के आवागमन से सम्बन्धित कोई पद होना चाहिए। सम्भव है कि वह कोषागार (ट्रेजरी आफिसर) हो।

पाँचवाँ चन्द्रमा सन्तान पक्ष में कन्या का योग बनाता है। अथवा कन्याएँ अधिक और पुत्र कम होने चाहिए। गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा।

छठे घर के चन्द्रमा का प्रभाव

यदि चन्द्रमा बलबान हो और वह छठे घर में बैठा हो तो ऐसा जातक शूरवीर तथा झगड़े-मुकदमे आदि में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

ऐसा जातक जन-जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त करता हुआ राज-सम्मान प्राप्त करने में भी सफल रहता है।

किन्तु क्षीण चन्द्रमा इससे विपरीत फलाकारी होता है। उसके फलस्वरूप जातक दुर्बल और अस्वस्थ रहता है।

ऐसा जातक किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हो सकता है। उसके शत्रु प्रबल हो सकते हैं। किन्तु संघर्ष रत रहकर भी जातक उनसे परास्त नहीं हो पाता।

सातवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

यदि चन्द्रमा सातवें घर में बैठा हो तो जातक को नेतृत्व शक्ति प्रदान करता है।

ऐसा जातक अपने व्यवहार से अनुयायियों की संख्या बढ़ा लेने में सफल हो जाता है।

ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। वाणी में ओज और वाक्यों में लोकहित की भावना रहती है।

ऐसा व्यक्ति कोई बुद्धिजीवी होना चाहिए। वकील, प्राध्यापक, प्राचार्य, धर्म गुरु, जन-नेता मन्त्री आदि हो सकता है।

ऐसे व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुखी रहता है। पत्नी सुशील, सुन्दरी और शिक्षिता मिलती है।

आठवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

यदि चन्द्रमा आठवें घर में बैठा है तो वह अधिक शुभ नहीं माना जाता है।

उसके प्रभाव से जातक अस्वस्थ, रोगी, दुर्बल, खिन्न चित्त वाला तथा दुःखित बना रहता है।

वह कफ विकार श्वास, कास, उदर रोग, प्रमेह, हृदोग आदि से पीड़ित रह सकता है।

सामान्य रूप से इस स्थिति का चन्द्रमा जातक की आयु को कम करता है।

वह अपनी अवनति देखकर दूसरों की वृद्धि को ईर्ष्या की दृष्टि से देखने लगता है।

उसमें स्वाभिमान की मात्रा अधिक होती है, इसलिए किसी से दबना नहीं जानता।

नवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

नवें घर में बैठा हुआ चन्द्रमा जातक को अत्यन्त सौभाग्यशाली बनाता है।

उसे धन-सम्पत्ति की कमी नहीं रहती। वरन् अनायास धन की प्राप्ति सम्भव होगी।

ऐसा व्यक्ति उदार चेता, परोपकार-भावना से युक्त, दयालु स्वभाव का तथा धर्मात्मा होता है।

वह पराये दुःखों को देखकर शीघ्र ही द्रवित हो जाता और सहायता के लिए स्वयं तैयार रहता है। इस कारण समाज में उसकी बहुत मान-प्रतिष्ठा होती है।

उसका परिवार भरा पूरा होता, किन्तु बहिनें अधिक और भाइयों की संख्या कम होती है।

दसवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

यदि चन्द्रमा दसवें घर में बैठा है तो वह अत्यन्त सौभाग्य का सूचक होगा।

ऐसा व्यक्ति उदार चेता, परोपकारी, धर्म में रुचि रखने वाला तथा सत्य अहिंसा आदि का मानने वाला हो सकता है।

दान, पति साधना शास्त्राध्ययन तथा मन्दिर आदि के निर्माण में इसकी रुचि हो सकती है।

ऐसा जातक धन के विषय में पूर्ण सम्पन्न, उद्योगपति या बड़ा व्यापारी हो सकता है।

दसवें घर में स्थित चन्द्रमा जातक को ऐश्वर्यशाली बनाता है ऐसा जातक कोई बड़ा वकील, डाक्टर या ऊँचा साहित्यकार भी बन सकता है।

सम्भव है कि इस स्थिति से प्रभावित जातक कोई उच्च पदस्थ, नेता संसद सदस्य या मन्त्री आदि में से कुछ बन जाय। अथवा किसी बड़े आश्रम का महन्त भी हो सकता है।

ग्यारहवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

ग्यारहवें घर को बैठा हुआ चन्द्रमा भी अपने जातक की सुख-समृद्धि और सम्पन्नता कारण होता है।

उसे धन की कोई कमी नहीं होती। ऐश्वर्य से सम्पन्न तथा वाहनादि से भरा-पूरा होता है।

उसके पास सेवक भी बहुत होते हैं। अनुयायियों की संख्या तो इतनी कि प्रशंसा का पात्र बना देती है।

यदि वह व्यापारी है तो श्वेत वस्तुओं का व्यापार करने वाला हो सकता है। कुछ विद्वान इसका अर्थ यह भी लगाते हैं कि ग्यारहवे घर का चन्द्रमा जातक को ईमानदार बनाता है तो वह काला धन संचित नहीं करता।

ऐसे जातक को राज-सम्मान की भी प्राप्ति होती है। अनायास धन प्राप्ति का योग भी हो सकता है।

बारहवें घर के चन्द्रमा का प्रभाव

ऐसा जातक स्वभाव और आचरण की दृष्टि से अधिक धार्मिक, दानशील और संयमी होना चाहिए। क्योंकि बारहवें घर में बैठे हुए चन्द्रमा का यह विशेष गुण है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य, किन्तु किसी नेत्र रोग से पीड़ित होना चाहिए।

ऐसे जातक को माता का सुख कम मिल पाता है, किन्तु अन्य परिवारीजनों का सामान्य सुख मिलता है।

इसके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, इस प्रकार चिन्ता अधिक रहती है।

किसी कार्य में चित्त नहीं लगता और अन्त में असफलता हाथ लगती है।

——

मंगल का शुभाशुभ फल-निर्देश

मंगल बहुत महत्वपूर्ण ग्रह है। किन्तु यह सौम्य न होकर उग्र होता है। उससे प्रभावित जातक शूरवीर, साहसी, पराक्रमी और परिश्रमी भी होता है।

ऐसा जातक स्वभाव से उग्र, भय-रहित, निरर्थक दयामाया से रहित तथा क्रोधी होना चाहिए। यदि मंगल शुभ हो तो उस जातक का स्वभाव अच्छे कार्य करने का होगा। ऐसा जातक सेना या पुलिस में अच्छी स्थिति प्राप्त कर लेता है युद्ध के मोर्चे पर वह कभी पीछे नहीं हटता अथवा डाकुओं से मुकाबला होने पर भी वह उन्हें काबू में करके ही चैन लेता है।

यदि अशुभ मंगल हो तो उक्त से भिन्न फल दिखाई देगा। उसके प्रभाव से जातक बुरे कार्यों की ओर प्रवृत्त होता है। सम्भव है कि वह चोर, डाकू अथवा गुण्डे का रूप धारण कर ले। किसी से टक्कर होने पर वह हिंसा तक से नहीं घबराता।

प्रथम घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल प्रथम घर में बैठा हो तो वह जातक के स्वभाव में अधिक उग्रता उत्पन्न करता है। ऐसा मनुष्य क्रूर तथा साहसी होना चाहिए।

क्रोधी स्वभाव के कारण उसका सभी से मतभेद रहता है। इस कारण घर के सभी व्यक्तियों, यहाँ तक कि पत्नी अथवा पुत्र तक से अनबन हो सकती है।

ऐसे मनुष्य को अग्नि से अथवा लोहे (हथियार आदि) से भय हो सकता है। वह प्रमेहादि रोगों से पीड़ित होना चाहिए। अन्य प्रकार से स्वास्थ्य सामान्य, माता रोग से पीड़ित तथा स्वयं भी परेशान रह सकता है।

यदि मंगल प्रथम घर में है तो उस जातक को मंगली कहते हैं।

विवाह आदि में इसका अधिक महत्व समझा जाता है। वर कन्या दोनों ही मंगली हों तभी परस्पर विवाह करना शुभ होता है।

दूसरे घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल दूसरे घर में पड़ा हो तो वह भी जातक को कठोर स्वभाव का बनाता है।

ऐसा जातक क्रोधी स्वभाव का, कटुभाषी तथा झगड़ालू स्वभाव का होता है। वह मुकदमेबाजी में भी अधिक दिलचस्पी लेता और किसी प्रकार भी झुकने को तैयार नहीं होता।

परन्तु ऐसे जातक को अपने खर्चीले स्वभाव के कारण आर्थिक संकट का भी समाना करना होता है।

ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। यदि ऐसा होता है तो मुख रोग अथवा नेत्र रोग से पीड़ित होना चाहिए। किन्तु, मंगल शुभ हो तो स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

तीसरे घर के मंगल का प्रभाव

तीसरे घर में बैठा हुआ मंगल प्रायः अधिक अच्छा परिणाम व्यक्त नहीं करता।

ऐसा जातक जीवन में बहुत परेशान रहता है। रोग, गृह-कलह भाई को कष्ट आदि की सम्भावना रहती है।

अशुभ मंगल जातक को मिष्टभाषी नहीं रहने देता। वह रूखे और क्रोधी स्वभाव का हो जाता है।

उसे आर्थिक संकट भी उठाना पड़ता है। आय के साधन बहुत कम होते हैं। व्यय अधिक होने से पैसे की तंगी हर समय सताती है।

परन्तु तीसरे घर में बैठा हुआ मंगल यदि शुभ हो तो जातक को साहसी और शूरवीर बनाती है। ऐसा जातक परिश्रमी होता है और अपने परिश्रम के बल पर ही सब संकटों से पार हो जाता है।

चौथे घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल चौथे घर में बैठा हो तो शुभ होना चाहिए। किन्तु चौथे घर का मंगल जातक को मंगली बनाता है और उसका विवाह मंगली कन्या से ही होना उचित समझा जाता है।

यदि जातक नौकरी पेशा हो तो उसे उच्च सरकारी नौकरी प्राप्त हो सकती है।

किन्तु धन के स्रोत कमजोर रहते हैं, फिर वाहन आदि का अल्प सुख प्राप्त हो सकता है।

भूमि आदि की सम्पन्नता के अवसर ऐसे जातक को कम ही रहते हैं। फिर भी मंगल शुभ हो तो प्राप्ति हो सकती है।

ऐसे जातक को मातृ सुख कम प्राप्त होता है। स्वयं का स्वास्थ्य सामान्य रहना चाहिए।

पाँचवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल पाँचवें घर में बैठा हो तो बहुत उग्र प्रभाव डालेगा ऐसा जातक अत्यन्त क्रोधी होता है।

उसके उग्र स्वभाव के कारण मित्र भी विरोधी बन जाते हैं। घर के व्यक्ति भी रुष्ट रहते हैं।

परिवार में इसी कारण प्रायः अनबन बनी रहती है तथा दाम्पत्य जीवन भी उससे प्रभावित होता है।

पत्नी को गर्भ स्राव का रोग लग जाता है। आरम्भ के दो-तीन गर्भों से नष्ट होने के बाद, फिर कहीं सन्तान की आशा हो सकती है।

पाँचवें घर का मंगल जातक को क्रूर बना देता है, इसलिए वह हिंसा करने से भी नहीं घबराता।

इस प्रकार अशुभ मंगल जातक को हिंसादि पाप कर्मों की ओर प्रेरित करता है, जबकि शुभ मंगल जातक को उदार, मृदु और ईमानदार बना सकता है।

छठे घर के मंगल का प्रभाव

छठे घर में बैठा हुआ मंगल शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के परिणाम उपस्थित करता है।

ऐसा जातक आर्थिक मामलों में मजबूत रहता है, उसे धन की कोई कमी नहीं होती।

व्यय की दृष्टि से भी ऐसा जातक आगे रहता है। वह धन के अपव्यय की भी कोई चिन्ता नहीं होती।

ऐसा मनुष्य अस्वस्थ रहता है तो उसे उदर-विकार अथवा चर्म रोग हो सकते हैं।

मातृ पक्ष के व्यक्तियों के लिए शुभ नहीं होता। इसके प्रभाव से जातक के मामा की मृत्यु हो सकती है।

इस जातक में मुकदमेबाजी की प्रवृत्ति हो सकती है तथा वह विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में सफल रहता है।

सातवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल सातवें घर में हो तो बह अधिक अच्छे परिणाम व्यक्त नहीं करता। ऐसा सामान्य रूप से मंगली होगा।

इस जातक में बुद्धि की कमी होती है तथा अर्थ की दृष्टि से भी कमजोर रहता है। कभी-कभी धन के अभाव में आवश्यक कार्य भी रुक जाते हैं।

जीविका के साधन सीमित होते हैं। व्यापारी हुआ तो छोटे व्यवसाय में लगा रहता है। नौकरी करता है तो भी वह चपरासी, क्लर्क, मुनीम आदि हो सकता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी परेशान रह सकता है। उसे वातरोग या चर्म रोग आदि हो सकते हैं। पत्नी के लिए भी इस घर का मंगल घातक बन सकता है।

ऐसा जातक रूखे स्वभाव का तथा कठोर वचन कहने वाला होता है। उसे क्रोध शीघ्र आता है।

आठवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मगल आठवें घर में स्थित हो तो यह जातक को मंगली बनाता है। उसका विवाह मंगली कन्या से ही होना उचित तथा प्रशस्त रहता है।

स्वभाव में रूखा होने के कारण इष्ट, मित्र, यहाँ तक कि पारिवारी-जन भी रुष्ट रहते हैं।

धन के मामले में संकट ग्रस्त रहना हो सकता है। व्यापार में हानि नौकरी हुई तो सामान्य और कलाकारी में भी पीछे रहने वाला होगा।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी कष्ट उठाता है। उसे नेत्र-रोग, चर्म रोग आदि हो सकते हैं।

यह भी सम्भव है कि ऐसा जातक किसी व्यसन का आदि हो, जैसे कि भाँग, अफीम, चरस आदि।

नवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल नवें घर में हो तो जातक को सौभाग्यशाली बना देता है। उसे आर्थिक मामलों में कष्ट नहीं उठाना पड़ता सभी कार्य सरलता से पूरे हो जाते हैं।

यदि नौकरी करता है तो शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर सकता है। व्यवसायी होगा तो उसे बहुत लाभ प्राप्त होगा। कोई नया कार्य करेगा तो उसमें भी सफलता मिलेगी।

ऐसे जातक में नेतृत्व का भी गुण होगा। जनता उसके प्रति सम्मान के भाव रखेगी।

किन्तु ऐसे जातक का भाइयों से विरोध होगा। यह अपने अहङ्कारी स्वभाव के कारण किसी का आदर नहीं करेगा।

इस जातक में क्रोधी की मात्रा भी कम नहीं होगी तथा धर्म-बुद्धि का भी अभाव होगा।

दसवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल दसवें घर में बैठा हो तो अधिक शुभ परिणाम व्यक्त करता है। ऐसा जातक धन और प्रतिष्ठा के मामले में अधिक भाग्यशाली होगा।

यदि नौकरी करेगा तो अधिक ऊँचा पद प्राप्त कर लेगा। पुलिस अथवा सेना में कोई अत्युच्चपद मिल सकता है।

यह भी सम्भव है कि ऐसा जातक जन नेता हो और मन्त्री स्तर तक पहुँच जाय। यदि व्यापारी होगा तो अपने व्यापक में ही प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

यदि कवि, लेखक आदि हुआ तो उसे भी प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है। दसवें घर में स्थित, मंगल जातक को राज सम्मान प्राप्त कराने में भी बहुत सहायक होता है।

ऐसे जातक मातृ-सुख अल्प मिलेगा। सन्तान का भी कष्ट रह सकता है।

ग्यारहवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल ग्याहरवें स्थान में है तो यह भी शुभ लक्षण है। किन्तु अशुभ योग में हानिकारक भी बहुत हो सकता है।

ऐसा जातक साहसी और भय-रहित होता। उसके स्वभाव में झगड़ालूपन और बात-बात पर गर्म हो जाने की प्रवृति रहती है। उसे क्रोध शीघ्र आता है।

परन्तु, यह अन्याय का पक्ष कभी नहीं लेता। धर्म कार्यों के प्रति उसकी रुचि रहती है। साधु-सन्तों और गुरुजनों का यथोचित आदर सत्कार करना उसके स्वभाव में होता है।

' साधन व्यापार, सरकारी, ठेका आदि तथा सकती है। यह भी सम्भव है कि वह कृषि-कर्म व्यापार करें।

ने प्रारम्भ में सुख, किन्तु अधिक आयु में सकती है। क्योंकि सन्तान अवज्ञा ालू स्वभाव की हो सकती है।

स्थ्य की दृष्टि से भी निर्बल रहना चाहिए। उसे उदर सम्बन्धी कोई रोग भी हो सकता है।

बारहवें घर के मंगल का प्रभाव

यदि मंगल बारहवें घर में बैठा हो तो जातक को मंगली बनाता है। उसका विवाह मंगली कन्या से किया जाना चाहिए।

यह जातक कष्ट में रहता है। धनाभाव के कारण भी कुछ चिन्ता हो सकती है।

दाम्पत्य जीवन भी सुखमय नहीं हो पाता। प्रथम पत्नी की लम्बी बीमारी अथवा मृत्यु तथा दूसरी पत्नी से अनबन रहने के कारण चित्त में खिन्नता रह सकती है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ऐसा जातक सुखी नहीं रह पाता। उसे उदर रोग अथवा नेत्र रोग की सम्भावना हो सकती है।

स्वभाव में रूखापन रहने के कारण ऐसा जातक चाहे जिससे झगड़ पड़ता है। उसलिए विरोधियों की संख्या बढ़ जाती है।

धनाभाव तो रहता ही है पास में कुछ होता भी है उसे चोर आदि चुरा सकते हैं। यह भी सम्भव है कि जातक को अकारण ही निन्दा का भागी होना पड़ा।

राशियों के अनुसार मंगल का शुभाशुभ फल

मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु, मकर और मीन मंगल शुभ अधिक अशुभ कम होता है। मिथुन तथा कन्या का मंगल अशुभ अधिक और

शुभ फल माना जाता है। क्योंकि मिथुन और कन्या का अधिपति बुध है, जिससे मंगल का घोर विरोध है।

उक्त राशियों के अतिरिक्त वृषभ, तुला और कुम्भ राशियों का फल सामान्य होता है।

●

बुध का शुभाशुभ फल-निर्देश

प्रभावशाली ग्रह

बुध भी अत्यन्त प्रभावशाली ग्रह है। यह मिथुन और कन्या राशियों का स्वामी है। यह जातक को विवेक ज्ञान में तत्पर करता है। इसलिए इससे प्रभावित जातक अध्ययनशील, विद्वान और तार्किक हो सकता है। उसे वेद, पुराण, दर्शन, उपनिषद् आदि के अध्ययन में रुचि हो सकती है तथा विज्ञान विषय में भी रुचि रहने के कारण कृषि, शिल्प, चित्रकला, काव्य, गद्य, ज्योतिष, न्याय आदि में भी दिलचस्पी रख सकता है। इस ग्रह का प्रभाव जातक की गर्दन तथा कन्धे आदि पर अधिक पड़ता है।

अब बुध ग्रह का स्थानानुसार विवेचन किया जाना उचित होगा—

प्रथम घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध प्रथम घर में बैठा हो तो वह जातक को अधिक विद्वान् बनाता है। ऐसा जातक वेद-शास्त्रादि में पारंगत, गणित में कुशल तथा नीति-शास्त्र का ज्ञाता होना चाहिए।

उसके चित्त में उदारता और परोपकार की भावना रहती है। किसी को संकट में पड़ा देखकर उसकी सहायता के लिए तत्पर रहना वह अपना कर्त्तव्य समझता है।

हँसमुख स्वभाव के कारण उसके मित्र अधिक बन जाते हैं। यह अपने विनोदी स्वभाव के कारण कठोर व्यक्ति से काम निकाल लेने में सफल रहता है।

इनकी दिनचर्या सुव्यवस्थित रहती है। खान-पान में सन्तुलन रखने के कारण स्वस्थ तथा दीर्घायुष्य होता है। दाम्पत्य जीवन में भी उसे अधिक असफल नहीं कह सकते।

दूसरे घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध दूसरे घर में बैठा हो तो यह वाणी और बुद्धि के विकास में अधिक सहायक होता है।

ऐसा जातक बुद्धिजीवी होना चाहिए। इस कोटि में वकील, अध्यापक, साहित्यकार, पत्रकार आदि आते हैं।

संगीत में भी इसकी रुचि हो सकती है। सम्भव है कि यह कोई अच्छा संगीतकार बनकर उसी से आजीविका प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहे।

इस जातक की वाणी में ओज होने के कारण जन-नेतृत्व में भी सफलता मिल सकती है। किन्तु ग्रह के अधिक शुभ न होने के फल-स्वरूप वाणी की वाचालता उसे दलाली आदि के कार्य में अधिक बना सकती है।

यदि बुध अधिक शुभ हो तो जातक को बड़ा व्यापारी, उद्योगपति तथा धन से सम्पन्न बना सकता है।

तीसरे घर के बुध का प्रभाव

तीसरे कोष्ठक में विद्यमान बुध कुछ शांत रहता
जातक को बहुत नम्र, उदार तथा परोपकार की
य रूप से शुभ
बना देता है।

ऐसा जातक अच्छा साहित्यकार हो सकत कर सकता है।
निबन्ध नाटक आदि की रचना द्वारा जीविकोपाज
उसके लिए सरल कार्य होगा।

व्यापार व्यवसाय में किसी संस्थान में साझेदारी भी हो सकती है। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण उद्योग में भी असफलता का कोई कारण नहीं हो सकता।

ऐसे मनुष्य मन के चंचल, भोग-विलास प्रिय, कला, संगीत, साहित्य तथा ज्योतिष आदि से प्रेम रखने वाले तथा विदेश यात्रा आदि में अधिक रुचि लेने वाले होते हैं।

तीसरे घर का बुध जातक के स्वास्थ्य को सामान्य तथा भाइयों का कम होना बताता है।

चौथे घर के बुध का प्रभाव

चौथे घर में स्थित बुध जातक को अधिक भाग्यवान बनाता है। उसे किसी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए।

परन्तु, पितृ धन की प्राप्ति उसे हो सकती और उस स्थिति में माता का प्यार ही उसे सब प्रकार का सहारा देगा।

ऐसा जातक स्वावलम्बी होकर धनार्जन में जुट जाता है। उस स्थिति में वह ऐश्वर्यशाली, भूमि, भवन, बाग, वाहन आदि का स्वामी भी हो सकता है।

अपने उदार और मिलनसार स्वभाव के कारण उसे दिनोंदिन उन्नति के अवसर मिलते जाते हैं। समाज में प्रतिष्ठा तथा राज सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है।

बनाता है। ऐसा जन की दृष्टि से सुखी, परिवारीजनों से प्रेम और सौहार्द्र तथा नीति-शास्त्र का अपने अनुयायियों की वृद्धि कर लेना आदि इसकी

उसके चित्त में ती है।

किसी को संकट में पक अथवा सामान्य रहना चाहिए। ऐसा जातक वह अपना कर्त्तव्य स है।

पाँचवें घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध पाँचवें घर में बैठा है तो सामान्य फल वाला होता है। फिर भी वह अपने कार्यों को अपनी बुद्धिमानी से निकालने में सफल हो जाता है।

ऐसा जातक बुद्धिजीवी या व्यापारी हो सकता है। उसे गद्य-पद्य लेखन से प्रेम, ज्योतिष आदि के प्रति रुचि एवं विश्वास तथा उच्च शिक्षा प्राप्त होना चाहिए।

दाम्पत्य जीवन आरम्भ में सुखी किन्तु बाद में कष्ट कर हो सकता है। उसके कारण सन्तान का न होना भी होगा।

ऐसे जातक को भाइयों का अभाव रह सकता है।

छठे घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध छठे घर में बैठा हो तो वह अधिक शुभ फल वाला नहीं होता। वह अपना अशुभ या सामान्य प्रभाव दिखाता है।

उसके कारण जातक अशिक्षित, मूर्ख तथा तर्क वितर्क की शक्ति विवेक बुद्धि से शून्य रह जाता है।

उसका स्वभाव भी रूखा होता है। क्रोध के कारण घर के सदस्यों तक से अनबन हो सकती है।

अर्थ की दृष्टि से भी ऐसा जातक बहुत परेशान रहता है। धनाभाव से उसके कार्य रुके रह सकते हैं।

सैक्स की दृष्टि से इसका चरित्र अधिक अच्छा नहीं समझा जा सकता। किन्तु दाम्पत्य जीवन में सुखी रह सकता है।

सातवें घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध सातवें घर में स्थिति है तो सामान्य रूप से शुभ समझा जाता है। ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है। वह उदार चित्त का तथा दया भाव से युक्त होता है।

ऐसे व्यक्ति में बुद्धि की प्रखरता रहनी चाहिए। इस कारण वह कवि, लेखक, पत्रकार तथा कुशल व्यापारी हो सकता है।

ऐसा जातक यदि अध्यापन कार्य अथवा वकालत करे तो भी उसे सफलता मिल सकती है।

दाम्पत्य जीवन की दृष्टि से भी उसे असफल नहीं कहा जा सकता। क्योंकि ऐसे जातक की पत्नी भी योग्य, विदुषी तथा उसके व्यावसायिक कार्यों में योग देने वाली हो सकती है।

यह भी सम्भव है कि उसकी पत्नी अध्यापिका या किसी कार्यालय क्लर्क, टाइपिस्ट आदि होकर उपार्जन करने लगे।

आठवें घर के बुध का प्रभाव

आठवें घर में बैठा हुआ जातक को दीर्घायुष्य बनाता है तथा उसे स्वस्थ और प्रसन्न रखता है।

ऐसा जातक विवेक बुद्धि वाला, पढ़ा-लिखा, तर्क शक्ति से सम्पन्न तथा परिश्रमी होता है। वह कभी किसी कार्य में आलस्य अथवा उपेक्षा नहीं करना चाहता।

यदि उसके सहायक रूप से कार्य करने वाले व्यक्ति आलस्य दिखाते या अपना कार्य पूरा नहीं करते तो वह उसे सहन नहीं करता तथा उन्हें कार्यों के लिए बराबर उकसाता रहता है।

ऐसा व्यक्ति भोग विलास प्रिय भी हो सकता है। उसका दाम्पत्य जीवन भी सुखी-सन्तुष्ट रहता है।

ऐसा जातक बुद्धिजीवी होना चाहिए। वकील, न्यायाधीश, अध्यापक चिकित्सक आदि हो सकता है।

यह भी सम्भव है कि वह किसी व्यापार को आजीविका का साधन बनाये और उसमें सफलता प्राप्त कर सके।

नवें घर के बुध का प्रभाव

नवें घर में विद्यमान बुध अपने शुभ प्रभाव से जातक को भाग्यवान बना देता है।

ऐसा व्यक्ति धन से सम्पन्न, ऐश्वर्य आदि से युक्त तथा सन्तान एवं पत्नी आदि से भी सुखी रह सकता है।

उसमें उदारता और परोपकार भावना का समावेश रहने के कारण दूसरों की सहायता के भाव रहते हैं और वह सभी के संकट में काम आता रहता है।

उसे धर्म, न्याय, शास्त्र आदि में विद्वान् भगवद्भक्त तथा तीर्थयात्रा दान, पुण्य, आदि में रुचि रखने वाला भी होना चाहिए।

ऐसा जातक धर्मोपदेशक भी हो सकता है सम्भव है कि वह किसी आश्रम की स्थापना करने में भी सफल हो जाय।

दसवें घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध दसवें घर में विराजमान है तो वह अधिक शुभ फल प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

ऐसा व्यक्ति शिक्षित, समझदार, जनप्रिय तथा राज सम्मान को प्राप्त करने वाला हो सकता है।

उसे जन-सम्पर्क में रुचि रहने के कारण जनता की श्रद्धा प्राप्त होती है और वह नेता, विधायक, मन्त्री या राज्यपाल आदि में से किसी उच्च पद पर आसीन हो सकता है।

ग्रह की सामान्य स्थिति उसे कुशल व्यापारी बना सकती है और उसे अपने व्यवसाय में ही पूर्ण सफलता मिलनी चाहिए।

वह अनुभवी चिकित्सक भी हो सकता है। उसके अनुभव और मीठे व्यवहार के कारण रोगियों की संख्या बढ़ सकती है।

यह भी सम्भव है कि वह कोई कुशल विधि प्रवक्ता अथवा ईमानदार न्यायधीश का स्थान प्राप्त कर ले।

ऐसे व्यक्ति कवि, लेखक, पत्रकार तथा प्रवचनकर्त्ता आदि भी हो सकते हैं।

ग्यारहवें घर के बुध का प्रभाव

यदि बुध की स्थिति ग्यारहवें घर में है तो वह बहुत शुभ होगी तथा जातक को अत्यन्त सौभाग्यशाली बना देगी।

ऐसा व्यक्ति प्रेम के मामले में भी सफल रहता है। उसका विवाह उच्च कुल की किसी अधिक सुन्दरी कन्या से होना चाहिए। वह विवेकशील और मृदु भाषिणी भी होगी।

विवेक बुद्धि की ऐसे जातक में अधिकता रहती है। वह अपनी प्रखर मस्तिष्क शक्ति के कारण कोई अच्छा साहित्यकार या कोई अच्छा वकील, अध्यापक, पत्रकार आदि हो सकता है।

धन की दृष्टि से ऐसा व्यक्ति अधिक सम्पन्न है। यदि आरम्भिक समय में निर्धन रहा हो तो उसे किसी भी स्रोत से अनायास हो पर्याप्त धन की प्राप्ति हो सकती है।

ऐसा जातक न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठा और ईश्वर भक्त होना चाहिए। उसकी वाणी में ओज होने के कारण समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी अनुयायी बन जाते हैं। यह भी सम्भव है कि उसमें नेतृत्व शक्ति का उदय हो और वह सफलता भी प्राप्त करले।

सन्तान-पक्ष में भी ऐसा मनुष्य सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

बारहवें घर के बुध का प्रभाव

बारहवें घर में स्थित बुध भी कुछ कम सौभाग्य देने वाला नहीं होता।

ऐसे जातक भी शिक्षित, बुद्धिजीवी, ऐश्वर्यशाली तथा प्रतिष्ठित हो सकते हैं।

आचरण की दृष्टि से उत्तम कोटि का होगा। गुरुजनों के प्रति श्रद्धा और ईश्वर में निष्ठा रखेगा।

गृहस्थ जीवन सफल, सन्तान पढ़ी-लिखी पत्नी सुशील तथा कर्त्तव्य का निर्वाह करने वाली होगी।

आर्थिक दृष्टि से भी ऐसा जातक निश्चिन्त रहता है। उसका कोई कार्य धन के अभाव में कभी रुकता नहीं।

बुध का राशि के अनुसार शुभाशुभ फल

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या और तुला राशि का बुध शुभ अधिक तथा अशुभ कम होता है। शेष राशियों (मेष, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन) का बुध सामान्य फल दिखाता है।

—

गुरु का शुभाशुभ फल निर्देश

बुध पर प्रभाव डालने वाला ग्रह

गुरु (वृहस्पति) एक अत्यन्त प्रभावशाली ग्रह है। यह जातक की बुद्धि पर सीधा प्रभाव डालता है। इसके द्वारा विद्या, सुयश, पत्नी, सन्तान, राज सम्मान आदि की प्राप्ति में बड़ा सहयोग मिलता है। यदि गुरु शुभ हो तो जातक अत्यन्त मेधावी, ज्ञानी तथा विचारशील हो सकता है।

यदि गुरु शुभ नहीं हो तो जातक दुःखित रहता है। सर्व प्रथम तो उसमें विवेक का ही अभाव रहता है, इस कारण वह किसी भी अच्छे या बुरे समय में कोई सही निर्णय लेने में असमर्थ रहता है। इस ग्रह का मूत्राशय पर अधिक अधिकार रहता है, इसलिए सन्तान पक्ष भी अधिक प्रभावित होता है।

अब यहाँ गुरु के प्रभाव का वर्णन उसके स्थानानुसार करना अधिक उचित होगा।

प्रथम घर के गुरु का प्रभाव

यदि गुरु प्रथम घर में बैठा हो तो बहुत शुभ समझा जाता है। वह जातक को विवेक से सम्पन्न, दानशील, धर्म कार्यों में रुचि वाला तथा कार्यक्षम बनाता है।

ऐसा जातक तीर्थयात्रा, भगवत् प्रेम, साधु-संग आदि में अधिक रुचि लेता है। उसका चित्त संयमित रहता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहता है। शरीर में शक्ति और चेहरे पर तेज रहता है। उसे दीर्घ आयु प्राप्त होती है।

समाज में प्रतिष्ठा, राज में सम्मान, धन की सम्पन्नता आदि से लाभान्वित रहता हुआ ऐसा व्यक्ति जनता का हृदय जीतने में भी सफल हो सकता है।

ऐसे व्यक्ति बुद्धिजीवी हो सकते हैं। अध्यापक, वकील, न्यायाधीश, चिकित्सक, साहित्यकार, पत्रकार आदि के रूप में अत्यन्त प्रतिष्ठा का सुयोग रहता है।

यह एक सिद्धान्त की बात है कि लग्न में (प्रथम घर) में पड़ा हुआ यह ग्रह सर्वाधिक बलवान होता है।

दूसरे घर के गुरु का प्रभाव

यदि गुरु द्वितीय घर में हो तो वह जातक का भाग्यशाली होना व्यक्त करेगा।

ऐसा जातक विद्या के क्षेत्र में बढ़ा-चढ़ा तथा धार्मिक अभिरुचि का होगा।

वह संयमित जीवन व्यतीत करेगा। दाम्पत्य जीवन में सुखी तथा अर्थ की दृष्टि से आत्म-निर्भर रहेगा।

कभी उस जातक को अर्थ संकट परेशान नहीं करेगा। वह अपनी आय के प्रति निश्चिन्त होगा, किन्तु आय से अधिक व्यय होने के कारण संचित धन भी बचेगा नहीं।

तीसरे घर के गुरु का प्रभाव

यदि गुरु तीसरे घर बैठा हो तो बहुत शुभ नहीं माना जाता। क्योंकि वह जातक के आचरण को प्रभावित करता है तथा उसके कारण जातक की प्रवृत्ति में निम्न स्तर के विचार, आचरण हीनता तथा अनेक दोषों की उत्पत्ति हो जाती है।

ऐसे व्यक्ति में कामुकता भी बढ़ जाती है। उस स्थिति में उसमें लज्जा का भी अभाव हो जाता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ऐसा जातक दुर्बल होता है। वह अग्नि-मांद्य, अजीर्ण तथा उदर रोगों से पीड़ित हो सकता है। दृष्टिमांद्य आदि नेत्र रोग भी परेशान कर सकते हैं।

उसके मित्रों की संख्या अधिक होती है। संकट काल में मित्र सहायक भी होते हैं।

गृहस्थ जीवन सामान्य रूप से सुखी रहता है। जातक के भाई आदि भी सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

चौथे घर के गुरु का प्रभाव

चौथे घर में बैठा हुआ गुरु जातक को अधिक सबल बना सकता है। ऐसा जातक धनी हो सकता है। उसके पास मकान-जायदाद, दुकान आदि भी होनी चाहिए।

वह मनुष्य परिश्रमशील और उद्योगी होता है। माता-पिता के प्रति उसके मन में श्रद्धा होती है। अन्य बड़े-बूढ़ों को भी वह सम्मान से देखता है।

कौटुम्बिक स्वास्थ्य की दृष्टि से माता-पिता स्वस्थ रहते हैं। अन्य परिवारीजन तथा स्वयं भी निरोग रहता है।

जातक की कार्य क्षमता के प्रति सभी प्रभावित रहते हैं। उसके शत्रु भी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते। समाज में मान प्रतिष्ठा भी बहुत रहती है।

धनोपार्जन में चतुर होता है। पर्याप्त आय होते हुए भी उसे सन्तोष नहीं होता है।

पाँचवें घर के गुरु का प्रभाव

यदि पांचवें घर में गुरु स्थित हो तो यह लक्षण बहुत अच्छा है। इस घर को गुरु अपनी सम्पूर्ण दृष्टि से देखता है।

ऐसा जातक अत्यन्त विद्वान, मेधावी, शिक्षित तथा विवेक बुद्धि से सम्पन्न रहता है। उसमें धार्मिक विचारधारा के साथ ईश्वर के प्रति निष्ठा भावना रहती है।

ऐसा जातक कवि, साहित्यकार, चिकित्सक, अध्यापक, ज्योतिषी पुरोहित आदि में से कुछ हो सकता है।

इसे सट्टे या लाटरी आदि का शौक होगा तथा उससे धन भी प्राप्त हो सकता है।

छठे घर के गुरु का प्रभाव

यदि जातक छठे घर में बैठा हो तो उसका परिणाम शुभाशुभ दोनों प्रकार का अथवा सामान्य हो सकता है।

इस जातक का स्वास्थ्य खराब होने का अवसर रहेगा। उसे उदर रोग का शिकार होना पड़ सकता है।

माता के लिए कष्ट, कोई रोग तथा मामा के लिए कोई घातक परिस्थिति बुद्धमान होना चाहिए। वह अध्यापक, वकील, लेखक आदि में से कुछ हो सकता है। उसके पास धन की कमी भी नहीं होगी। आवश्यक होने पर धन कहीं से स्वतः प्राप्त हो जाता है।

यदि किसी से विवाद हो जाता है तो उसमें जातक की जीत होती है। इस प्रकार छठे ग्रह शुभ अधिक होती है।

सातवें घर के गुरु का प्रभाव

सातवें घर में बृहस्पति बैठा हो तो वह शुभ होता है तथा जातक के लिए लाभकारी हो जाता है।

ऐसा जातक पढ़ा-लिखा, बुद्धिजीवी हो सकता है। वह कहीं प्रवक्ता अध्यापक या पत्रकार हो सकता है।

चित्रकारी में भी उसकी दिलचस्पी होनी चाहिए। अन्य कलाओं के प्रति भी उसकी रुचि होगी।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह ग्रह अशुभ नहीं है। जातक स्वयं तो निरोग रहेगा ही, उसकी पत्नी भी स्वस्थ, सुन्दर और रोग-रहित तथा मृदु भाषिणी होगी।

सैक्स के पक्ष में भी ऐसा जातक कुछ खुले दिल का हो सकता है। विद्वानों के विचार में ऐसा व्यक्ति कामुक अधिक होना चाहिए। फिर भी वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने का बराबर प्रयत्न करता रहेगा।

आठवें घर के गुरु का प्रभाव

आठवें घर में विद्यमान गुरु शुभ अधिक और अशुभ कम होता है। इस कारण उससे प्रभावित जातक दुःख की अपेक्षा सुख अधिक प्राप्त कर सकेगा।

विद्या के क्षेत्र में ऐसा जातक अधिक सफल रहता है। वह विवेक बुद्धि में प्रवृद्ध तथा शान्त स्वभाव का एवं उदार चित्त वाला होता है। उसकी धर्म में भी बहुत रुचि होती।

ऐसे व्यक्ति लेखक, कवि धर्म गुरु आदि हो सकते हैं। नेतृत्व शक्ति की प्रखरता भी इसका एक फल होगा।

ऐसा जातक धन के मामले में कष्ट नहीं उठायेगा। यह कंजूस भी इतना होगा कि अपना पैसा व्यय नहीं करना चाहेगा। बरन् यह प्रयत्न करता रहेगा कि दूसरों का ही व्यय हो।

स्वास्थ्य की दृष्टि से मूत्राशय के विकार से पीड़ित हो सकता है। परन्तु वह विकार शीघ्र ही दूर हो जायगा तथा जातक निरोग और दीर्घायुष्य रहेगा।

नवें घर के गुरु का प्रभाव

यदि गुरु नवें स्थान में बैठा हो तो वह जातक पर शुभ प्रभाव डालता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः भाग्यशाली और सुखी होता है।

विद्या के क्षेत्र में वह अधिक शिक्षित, अधिक विद्वान्, वेद-पुराण, साधन तथा ज्योतिष आदि में पारंगत होता है और आजीविका के साधन भी इन्हीं को बनाता है।

ऐसा जातक चिकित्सक भी हो सकता है। उसके अनुभवी होने के कारण रोगियों को रोग-मुक्त होने का विश्वास रहता है तथा अनुयायियों की संख्या बढ़ती जाती है।

भूमि आदि के मामले में भी सम्पन्न होता है। निजि घर अथवा खेत आदि हो सकते हैं। पैसे की दृष्टि से भी यह जातक सम्पन्न समझा जाता है।

परन्तु, परिश्रम से बचने का प्रयत्न करता है और आलस्य के कारण आरम्भ किये हुये कार्यों को भी पूरे नहीं कर पाता। इस कारण धन हानि भी उठानी होता है।

दसवें घर के गुरु का प्रभाव

यदि गुरु दसवें घर में बैठा हो तो अधिक सौभाग्यशाली होता है। उसे विद्वान्, धर्मज्ञ, संयमी, सदाचारी, सुशिक्षित और ईश्वर के प्रति निष्ठावान् होना चाहिए।

वेद, शास्त्र, पुराण, दर्शन, इतिहास आदि का ज्ञाता यह जातक कहीं प्राचार्य या उच्च पदाधिकारी होना चाहिए। यह भी सम्भव है कि वह कोई धर्म गुरु, महन्त योगी, व्याख्यानदाता, उपदेशक आदि में से कुछ हो जाय।

ऐसा जातक अपने लिए भव्य भवन की योजना करता है, जो कि शीघ्र ही सफल हो जाता है।

ऐसे व्यक्ति का गृहस्थ जीवन आरम्भ में सुखी किन्तु बाद में पुत्रों के अयोग्य होने के कारण दुःखी हो जाता है।

ग्यारहवें घर के गुरु का प्रभाव

यदि ग्यारहवें घर में गुरु का वास है तो यह बहुत भाग्यवान होने का लक्षण है।

ऐसा जातक उदार चेता और परोपकारी तथा दूसरों के दुःखों को देखकर द्रवित होने वाला हो सकता है।

यह ग्रन्थ लेखक, प्रकाशक, सम्पादक आदि भी हो सकता है। सम्भव है कि वह अपनी किसी रचना पर कोई अच्छा पुरस्कार भी प्राप्त कर ले।

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह जातक सबल होता है। परिवार के सब व्यक्ति, भाई, बहिन, सन्तान आदि सब सुखी होते हैं। सन्तान चार या जितनी भी हों शिक्षित होती हैं।

ऐसा जातक अपनी माता-पिता की प्रथम सन्तान होनी चाहिए। इसमें छोटे चार-पाँच भाई और हो सकते हैं, जो जातक का आदर करेंगे।

बारहवें घर के गुरु का प्रभाव

यदि गुरु बारहवें घर में बैठा है तो वह शुभ और अशुभ, दोनों प्रकार का परिणाम व्यक्त करता है।

ऐसा जातक शिक्षित, स्थिर स्वभाव का तथा परिश्रमशील होता है। यदि किसी कार्य को आरम्भ कर देता है तो उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ता।

विद्वता में अपनी धाक रखता है। वेद, पुराण आदि का ज्ञाता और प्रवचनकर्ता भी हो सकता है।

वह लेखक और पत्रकार भी हो सकता है। योगाभ्यास की ओर रुचि होने के कारण संयमी भी होता है।

परन्तु, धन के मामले में इसके स्वभाव में कृपणता होती है। यह पैसे के व्यय में हाथ भींच लेता है। परन्तु अधिक धन प्राप्ति की भी इच्छा नहीं करता।

स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य, किन्तु मस्तिष्क के किसी विकार से पीड़ित हो सकता है। कुल मिला कर बारहवें घर का गुरु सदैव शुभकारी समझा जाता है।

गुरु का राशियों के अनुसार शुभाशुभ ज्ञान

मेष, कर्क, सिंह कन्या, वृश्चिक, धनु और मीन राशियों का वृहस्पति शुभ अधिक होता है, अशुभ कम। जबकि वृष, मिथुन, तुला और मकर राशियों में अशुभ अधिक और शुभ कम होता है। किन्तु कुम्भ राशि का गुरु सामन्य फल दिखाता है।

□

शुक्र का शुभाशुभ फल-निर्देश

शक्तिशाली बनाने वाला ग्रह

शुक्र ग्रह अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है। इसका प्रभाव जातक के प्रजनन अंगों पर पड़ता है और उसी प्रभाव से मनुष्य वीर्यवान बनता है।

यदि शुक्र ग्रह शुभ है तो जातक अत्यन्त पराक्रमी, पुष्ट वीर्य आना तथा सन्तानवान बनता है। उसका प्रभाव अन्न पर भी पड़ता है। अन्न की विविध परिपाक क्रियाओं (रासायनिक परिवर्तनों) के बाद शुक्र का

अधिक या अपेक्षित मात्रा में बनना आदि सभी कुछ शुक्र ग्रह के आधीन समझा जाता है।

विवाह, प्रेम, दाम्पत्य जीवन, सन्तान आदि सभी कुछ शुक्र ग्रह के अधीन है। वीर्य ही जीवन है और वीर्य का पर्याय शुक्र है, इसलिए शुक्र ही प्राणियों के जीवन तथा प्राणादि की स्थिरता का विधान करता है।

प्रथम घर के शुक्र का प्रभाव

प्रथम घर में बैठा हुआ शुक्र शुभ होता है। उससे प्रभावित जातक सुन्दर, सुपुष्ट तथा वीर्यवान होता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि में निरोग तथा प्रजनन में समर्थ होता है। विवाह आदि के मामलों में उसे पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त होती है। स्त्रियाँ उसे पसन्द करती हैं।

दाम्पत्य प्रेम की दृष्टि से ऐसा जातक पूर्ण सुखी रखता है सन्तान आदि के विषय में सौभाग्यशाली होता है।

ऐसा जातक सफाई पसन्द, मधुर भाषी, सुशिक्षित, विद्वान् तथा व्यापार आदि के मामलों में चतुर होता है। उसे श्वेत वस्तुओं के व्यापार से अधिक लाभ होता है।

द्वितीय घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र दूसरे घर में वास करता है तो अधिक शुभ समझा जाता है। उसका जातक अधिक भाग्यवान होता है।

धन की दृष्टि से वह किसी प्रकार कम नहीं होता। भूमि, घर, बगीचा, नौकर-चाकर, वाहन आदि भी पर्याप्त होते हैं। ऐसा जातक जवाहरात आदि से अधिक प्रेम करता है। इस प्रकार के जेवर उसके यहाँ बहुत होते हैं।

दाम्पत्य जीवन भी सुखी रहता है। गौर वर्ण की स्त्रियों से प्रेम में दिलचस्पी लेता है। उसे अपने पिता के धन की प्राप्ति का योग तो होता ही है, अन्य स्रोत से भी अनायास धन प्राप्त हो सकता है।

दूसरे घर का शुक्र अति सन्तान का योग प्रस्तुत करता है। उसके प्रभाव स्वरूप पुत्र अधिक उत्पन्न होने चाहिए।

तीसरे घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र का तीसरे घर में वास हो तो ऐसा जातक साहसी, स्फूर्तिवान और परिश्रमशील होता है। परन्तु, किसी चिन्ताप्रद स्थिति की बात सुनकर शीघ्र भयभीत हो जाता है।

ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन अधिक सुखी होता है, क्योंकि वह अपनी पत्नी से अधिक प्रेम करता है तथा वह भी उसे बहुत चाहती है। सन्तानादि की दृष्टि से भी सफल रहता है।

विद्वता की दृष्टि से भी यह अधिक योग्य होता है। व्यापार की दृष्टि से भी उसे सफल कह सकते हैं। ऐसा जातक श्वेत वस्तुओं के व्यापार में अधिक रुचि लेता है।

ऐसे जातक का परिवार भी भरा-पूरा होता है, किन्तु बहनों की संख्या अधिक और भाइयों की कम होती है।

चौथे घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र चौथे घर में हो तो वह जातक को पराक्रमी बनाता है। उसका पिता भी शक्तिशाली होना चाहिए।

ऐसा जातक धनवान तथा सुखी,सन्तुष्ट होता है। उसके पास भूमि भवन वाहन, नौकर आदि भी पर्याप्त रहते हैं। अर्थ के मामले में ग्रस्त होने का कभी अवसर नहीं आता।

मित्रों की संख्या भी पर्याप्त होती है। मिष्टभाषी होने के कारण अनेक व्यक्ति आकर्षित रहते हैं। महिलाएँ भी ऐसे जातक को अधिक चाहने लगती हैं।

धनोपार्जन के मामले में आत्म निर्भर होता है। सभी परिवारीजन उसी अकेले की आय पर निर्भर रहते हैं।

पांचवें घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र पांचवें घर में बैठा हो तो वह जातक को विद्वान और शक्तिशाली बनाता है। ऐसा जातक शत्रुओं से झगड़ा होने पर विजय प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति बुद्धि व्यवसायी भी हो सकता है। काव्यादि के लेखन तथा साहित्यिक गति विधियों में दिलचस्पी लेने वाला होगा। पत्र सम्पादक, ज्योतिषी, वैद्य आदि भी हो सकता है।

यदि व्यापारी होगा तो चाँदी चीनी या श्वेत वस्त्र आदि के व्यापार में लाभ उठायेगा। उसमें कामुकता भी अधिक हो सकती है तथा अनेक सुन्दरियों का स्नेह प्राप्त कर सकता है।

छठे घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र छठे घर में बैठा हो तो उसे शुभ नहीं समझते। उससे प्रभावित जातक वीर्य-दोषों से पीड़ित अस्वस्थ, रक्ताल्पता से क्षीणत्व को प्राप्त, तथा प्रसङ्ग आदि के मामलों में असमर्थ रहने वाला हो सकता है।

ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन सफल नहीं होता पत्नी से अनबन रहती है, क्योंकि वह सन्तुष्ट नहीं रहती। इस कारण सन्तान का भी अभाव रह सकता है। यह भी सम्भव है कि पत्नी असन्तुष्ट रहने के कारण तलाक ही दे दे।

ऐसा मनुष्य अशिक्षित, अविवेकी, अकर्मण्य तथा आलसी होता है। उसके बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं। मित्रों तथा परिवार के अन्य व्यक्तियों से विरोध हो सकता है।

यह भी सम्भव है कि ऐसे जातक को पितृ सुख से वंचित रहना पड़े अथवा पिता का अल्प सुख प्राप्त हो। मुकदमे आदि में भी पराजय का सामना करना पड़ सकता है।

सातवें घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र सातवे घर में है तो शुभ समझा जायगा। उसके प्रभाव से जातक सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व तथा भोग-विलास में दिलचस्पी लेने वाला होगा।

उसका विवाह कम उम्र में हो जाना चाहिए। पत्नी सर्व सुन्दरी और प्रिय भाषिणी होगी। उसका घर में आना भी भाग्योदय का परम कारण होगा। धन, सन्तान आदि से पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त होगी तथा घर भरा-पूरा हो जायगा।

परन्तु, ऐसा जातक कामुक भी हो सकता है। सम्भव है कि वह अनाचार में प्रवृत्त होकर मद्यपान भी करने लगे।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अधिक निश्चिन्त नहीं होगा। उसे वीर्य रोग तथा शीघ्र पतन आदि की व्याधि रह सकती है। माता-पिता का सुख दीर्घ काल तक नहीं मिल पाता।

आठवें घर के शुक्र का प्रभाव

आठवें घर में प्रतिष्ठित शुक्र अधिक शुभ नहीं माना जाता। इससे प्रभावित जातक और अनेक उतार-चढ़ावों में फँसा रहता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से दुर्बल, प्रमेह, शीघ्र क्षरण, स्वप्नदोष आदि से पीड़ित रह सकता है। फिर भी कामुक प्रवृत्ति के कारण स्त्रियों में रुझान रहता और चित्त में खिन्नता भरी रहती है।

स्वभाव में चिड़चिड़ापन की अधिकता के कारण घर में अशान्ति रहती है। क्रोध की मात्रा अधिक होने से मित्र तथा परिवारीजन भी द्वेष करने लगते हैं।

परन्तु, आर्थिक दृष्टि से ऐसा जातक सुदृढ़ रहना चाहिए। उसे भूमि घर, वाहनादि की भी सम्पन्नता हो सकती है।

नव घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र की स्थिति नवें घर में है तो बहुत शुभ है। इसके कारण जातक अधिक सौभाग्यशाली बनता है।

उसके स्वभाव में नम्रता और उदारता अधिक होगी, इसलिए विद्वानों और गुरुजनों के आदर में तत्पर रहेगा।

शिक्षा उच्च या सामान्य भी हो सकती है। किन्तु विवेक बुद्धि अधिकता के कारण वह मेधावी होगा और उसकी रुचि शास्त्रादि के अध्ययन में अधिक होगी।

कूप बावड़ी, मन्दिर धर्मशाला आदि के निर्माण में भी रुचि रहेगी। तीर्थ-यात्रा, साधु सेवा, ईश्वर-भक्ति, दान-धर्म आदि में भी उसका ध्यान रहता है।

सन्तान तथा गार्हस्थ्य जीवन में भी उसे सफलता मिलनी चाहिए। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान होता है।

दसवें घर के शुक्र का प्रभाव

यदि दसवें घर शुक्र बैठा हो तो वह भी सौभाग्यशाली होने के लक्षण है। ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

वह जातक स्वावलम्बी और परिश्रमी होता है। उसे दूसरों के कार्यों पर भरोसा नहीं होता। मस्तिष्क में शक्कीपन अधिक होने के कारण भी वह दूसरों पर भरोसा नहीं कर पाता।

धनोपार्जन में भी पीछे नही रहता। परन्तु, कृपणता के कारण अपने सुख पर भी धन का व्यय नहीं करना चाहता।

भोग-विलास में भी यह अधिक रुचि लेता है। अनेक स्त्रियों के प्रति आकर्षण के कारण पत्नी से अनबन हो सकती है। ऐसा जातक सन्तानहीन अथवा अल्प सन्तान वाला होता है।

ग्यारहवें घर के शुक्र का प्रभाव

यदि शुक्र ग्यारहवें स्थान में बैठा हो तो वह अत्यधिक शुभ समझा जाता है। उसके प्रभाव से जातक अत्यन्त भाग्यशाली और पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत करता है।

ऐसा जातक सभी क्षेत्रों में लाभान्वित रहता है। जीविकोपार्जन, समाज और राजनैतिक कार्य तथा धार्मिक संस्थाओं में भी समान रूप से दिलचस्पी लेता और सभी में सफलता प्राप्त करता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से सुन्दर, सबल, हृष्ट-पुष्ट तथा पराक्रमी होता है। उसकी प्रजनन सामर्थ्य अपेक्षित मात्रा में रहती है। चेहरा भी सुन्दर और आकर्षक होता है।

दाम्पत्य जीवन सुखी और सफल रहता है। पत्नी सुन्दर, कोमल स्वभाव की उदार तथा व्यवहार कुशल होती है। वह जातक के प्रति अत्यन्त प्रेम रखती है।

सन्तान की दृष्टि से भी कोई असफलता नहीं रहती। किन्तु पुत्र कम और पुत्रियां अधिक होती हैं।

यदि ऐसा जातक व्यापारी है तो मोती, हीरे, चाँदी आदि के व्यापार में असफलता प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति सफल प्रशासक, कवि, पत्रकार, प्रवचन कर्त्ता तथा नेता आदि भी हो सकता है। उसे राजयोग भी होने के कारण किसी उच्च पद की प्राप्ति हो सकती है।

बारहवें घर के शुक्र का प्रभाव

शुक्र यदि बारहवें स्थान पर है तो जातक को पूर्ण रूप से प्रभावित किये रहता है। उस जातक में शुक्र के सभी गुणों का समावेश रहना एक विशेषता है।

धन के मामले में ऐसा जातक पूर्ण सम्पन्न रहता है। वह कभी आर्थिक संकट से प्रभावित नहीं होता। हो सकता है कि कभी आर्थिक संकट उपस्थित होने पर उसे अनायास ही किसी स्रोत से धन प्राप्त हो जाय। व्यय के मामले में कंजूसी से कार्य लेता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट और स्थूल शरीर का होता है। इस कारण उसमें आलस्य की मात्रा अधिक होती है।

वाणी में ओज और सामयिक विचारधारा के कारण वह जन-प्रिय भी हो जाता है। अपने इस गुण के कारण जन-नेतृत्व में सफलता प्राप्त करता हुआ यह जातक मन्त्री स्तर तक पहुँच सकता है।

ऐसा जातक सफल व्यापारी तथा प्रशासक आदि भी हो सकता है। साहित्य, संस्कृति और धर्म के प्रति उसकी अभिरुचि होनी चाहिए गुरुजनों का आदर और ईश्वर में विश्वास रखना भी उसका एक गुण है।

उसे शिक्षित भी होना चाहिए। विवेक बुद्धि के कारण सभी क्षेत्रों में सफलता मिलती है।

शुक्र का राशियों के अनुसार शुभाशुभ ज्ञान

वृष, तुला, धनु और मकर राशियों का शुक्र शुभ अधिक और अशुभ कम होता है। कर्क और सिंह राशियों पर हो तो अशुभ समझा जाता है। मिथुन और राशि पर स्थित शुक्र को योग कारक समझिये। इसका अधिक प्रभाव मुख मण्डल और शुक्राशय पर पड़ता है।

●

शनि का शुभाशुभ फल निर्देश

क्रूर, किन्तु शुभ भी

शनि को क्रूर ग्रह मानते हैं। यह रुष्ट होता है तो विनाशकारी बन जाता है। उससे प्रभावित जातक अनेक कुपरिणामों को भोगता हुआ परेशान रहता है।

किन्तु शनि शुभ हो तो वह अपनी क्रूरता छोड़कर शुभ फलकारी बन जाता है। उस स्थिति में जातक किसी भी कष्ट को नहीं समझता और सुखी जीवन व्यतीत करता है। अभिप्राय यह है कि शनि कृपा करता है तो भाग्योदय भी कर सकता है।

अब, शनि का ग्रहोनुसार शुभाशुभ फल कथन करना अनुपयुक्त नहीं होगा।

प्रथम घर के शनि का प्रभाव

यदि शनि प्रथम घर में बैठा हो तो शुभ और अशुभ दोनों ही प्रकार के परिणामों को व्यक्त करता है। किन्तु प्रथम घर में भी शुभ राशि पर हो तो शुभ फल दिखाता है।

ऐसा जातक स्थूल शरीर का हो सकता है अथवा आलसी अधिक होना चाहिए। परिश्रम से बचने वाला तथा दूसरों पर निर्भर रहने वाला भी होता है।

आलसी प्रवृत्ति के कारण ही वह अधिक साफ-सुथरा नहीं रह पाता स्वास्थ्य की दृष्टि से निर्बल, किसी रोग से पीड़ित तथा धीमी चाल वाला हो सकता है।

धन के पक्ष में वह सफल होता है। बड़े से बड़ा कार्य क्यों न हों अर्थ संकट से कभी प्रभावित नहीं होता। घर भी अपना होता है तथा, सेवक आदि भी हो सकते हैं।

पारिवारिक रूप से सुख की कमी रहती है। पत्नी आदि का स्वास्थ्य खराब रह सकता है, भाई या मित्र को कोई गम्भीर रोग अथवा प्राणहानि की सम्भावना रह सकती है।

ऐसा जातक साहसी और क्रोधी भी होता है, उससे सभी व्यक्ति डरते और सामने आने का साहस नहीं करते।

दूसरे घर के शनि का प्रभाव

यदि शनि की स्थिति दूसरे घर में है तो अशुभ होना चाहिए। उसके प्रभाव से जातक दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

माता पिता के सुख की दृष्टि से उसे भाग्यहीन रहना होता है। माता की मृत्यु शीघ्र हो सकती है तथा पिता के धन को चोर चुरा लें या व्यापार में घाटा हो जाय।

आर्थिक दृष्टि से बाल्यकाल से ही कष्टमय स्थिति तथा स्वावलम्बी होने पर व्यवसाय में हानि, यह जातक को आर्थिक परेशानी में रखने वाली स्थितियाँ हैं।

दाम्पत्य जीवन सामान्य रूप से सुखी हो सकता है। पत्नी उदार, मृदु भाषिणी तथा सब कार्यों में सहयोग देने वाली होगी। सन्तान प्रयत्न करने पर पढ़ने से जी चुरायेगी।

परन्तु दूसरे घर में बैठे हुए शनि के साथ कोई शुभ राशि हो तो वह शुभ फलकारी हो सकता है।

तीसरे घर के शनि का प्रभाव

शनि का तीसरे घर में निवास अधिक शुभ समझा जाता है। उसके प्रभाव से जातक को सुखी और दुःखी दोनों प्रकार का जीवन व्यतीत करना होता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐसा जातक सबल, रोग-रहित और प्रसन्न चित्त रहेगा। वह किसी भी परेशानी में घबराता नहीं, वरन् लोगों को अपने व्यवहार से वश में रखता है। शत्रु उनसे घबराते हैं।

ऐसा जातक मल्ल विद्या में निपुण, शास्त्रधारी, विवेकी, धर्मशील, आचारवान तथा धार्मिक अभिरुचि का होगा। उसे ईश्वर में विश्वास तथा गुरुजनों में श्रद्धा रहेगी।

आय की दृष्टि से कुछ परेशान रहेगा। व्यय अधिक होने के कारण

चिन्ता-वृद्धि, पुत्र को कोई प्राणघातक रोग तथा ऐसे ही अन्य कष्टकारी परिणाम सामने आता है।

चौथे घर के शनि का प्रभाव

यदि शनि का निवास चौथे घर में हो तो शुभ नहीं होगा। वह जातक को अशुभ कर्मों की ओर प्रेरित कर सकता है।

ऐसा जातक मूर्ख, क्रोधी तथा छल-प्रपंच का व्यवहार करने वाला हो सकता है। सामान्यत: वह विभिन्न विषयों के प्रति उदासीन रहता है, तो भी उसे अपयश ही हाथ लगता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि मे बलहीन, रोगी तथा चितातुर रह सकता है। उसकी चिन्ता भी रोग का कारण होती है।

दाम्पत्य जीवन भी अधिक अच्छा नहीं रहता। स्त्री बीमार रही आती है अथवा शीघ्र ही साथ छोड़ देती है।

ऐसा जातक गुरुजनों का आदर नहीं करता तथा माता-पिता के लिए भी दुखदायी होता है।

पाँचवें घर के शनि का प्रभाव

यदि शनि पाँचवें घर में बैठा हो तो वह भी अशुभ समझा जाता है ऐसा जातक परेशानी में जीवन व्यतीत कर सकता है।

ऐसे मनुष्य को धर्म और ईश्वर के प्रति विश्वास नहीं होता। गुरुजन आदि का निरादर करने में भी उसे संकोच नहीं होता।

स्वास्थ्य सामान्य, शरीर में स्फूर्ति की कमी और आलस्य की अधिकता के कारण कार्यों में असफलता मिलती है। उदर रोग से पीड़ित रह सकता है।

सन्तान की दृष्टि से भी पांचवें घर का शनि शुभ नहीं होता। वह सन्तान की कमी अथवा अभाव का कारण बन सकता है।

दाम्पत्य जीवन भी अधिक सुखी नहीं रह पाता। स्त्री लम्बे समय तक बीमार रहे अथवा उसकी मृत्यु हो जाए और पुनः विवाह न हो।

मित्रों और सुपरिचितों से विरोध हो सकता है। धनाभाव की स्थिति परेशानी का अधिक कारण बन सकती है।

छठे घर के शनि का प्रभाव

यदि शनि छठे घर में बैठा हो तो जातक को साहसी और बलवान बनाता है। सामान्य रूप से स्वास्थ्य ठीक रखता और दीर्घायुष्य करता है।

ऐसा जातक किसी से दबता नहीं, वरन् शनि के प्रबल प्रताप से शत्रुओं को दबाने या नष्ट करने में सफल रहता है।

धन के पक्ष में भी वह असफल नहीं होता। उसे भरण-पोषणार्थ धन तो मिलता ही रहता है। साथ ही किसी न किसी स्रोत से धन की प्राप्ति अनायास भी हो जाती है।

यदि शनि किसी अशुभ योग के साथ हो तो श्वास, खाँसी, जुकाम प्रभृति रोग हो सकते हैं। भाई ही विरोधी बन कर अन्त में शत्रु भाव रखने लगता है।

सातवें घर के शनि का प्रभाव

शनि ग्रह का सातवें कोष्ठक में स्थित रहना जातक को शक्ति प्रदान करता है। उसके फलस्वरूप वह अधिक परिश्रमी, साहसी तथा बलवान होना चाहिए।

दाम्पत्य जीवन आरम्भ में सुखी, बाद में स्त्री के दुष्ट स्वभाव के कारण दुखी हो जाता है। फिर भी वह स्त्री के प्रेम में दीवाना बना रहकर अपमानित होता रहता है।

सन्तान पक्ष में भी प्रारम्भ में प्रसन्न और बाद में पुत्र आदि के अयोग्य होने के कारण दुःखित हो सकता है।

शिक्षा से प्रेम करने वाला और सिद्धि की इच्छा वाला होने के कारण ऐसा जातक भूत, प्रेत, पिशाच आदि की क्षुद्र सिद्धि में सफल

हो सकता है। अथवा कोई चिकित्सक, पुजारी या पाठ करने वाला हो तो भी सम्भव है।

स्वभाव में उग्रता और रूखापन होता है। धन तो होता ही है, इसलिए उसके मद में किसी को कुछ भी नहीं समझता।

आठवें घर के शनि का प्रभाव

यदि शनि का निवास आठवें घर में हो तो जातक को उदार हृदय का तथा परोपकार में लगा रहने वाला बनाता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से स्थूल शरीर का, आलसी, परिश्रम से बचने वाला तथा निर्बल होता है। वह इतना कायर होता है कि जरा-जरा सी बात पर घबरा जाता है।

ऐसा जातक राजभय से दबा हुआ रहता तथा कानून से अपने को बचाये रखता है।

ऐसे जातक के पिता अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। उसके बाद बटवारे आदि के प्रश्न पर भाइयों में झगड़ा भी रह सकता है। इसके फलस्वरूप आय कम और व्यय अधिक होता है।

नवें घन के शनि का प्रभाव

यदि शनि नवें घर में हो तो सामान्य अथवा कुछ शुभ फलकारी रहेगा। वह जातक को सुखी और भाग्यवान बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

आर्थिक दृष्टि से ऐसा जातक सबल होता है। उसके पास धन की कमी कभी नहीं होती।

परिवार भरा पूरा होना। कई भाई-बहन हो सकते हैं। परन्तु सामान्य रूप से मन मुटाव भी हो सकता है।

पत्नी सुशील हो सकती है। किन्तु यह सम्भव है कि जातक का उससे भी मन मुटाव हो जाय।

ऐसा जातक शान्ति प्रिय होता है। उसे झगड़े-झंझट पसन्द नहीं होते। चित्त में वैराग्य की भावना भी उत्पन्न हो सकती है।

दसवें घर के शनि का प्रभाव

दसवें घर में शनि का वास होना भी सुख-दुःख दोनों का ही कारण होता है। ऐसा जातक माता-पिता का सुख अधिक समय तक प्राप्त नहीं कर पाता।

ऐसे जातक को आवश्यकतानुसार धन की प्राप्ति होती रहती है तथा व्यय कम होता है, इसलिये धन की कोई समस्या परेशान नहीं करती।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ठीक रहता है। किन्तु स्त्री को कोई रोग सताये रखेगा।

आजीविका की दृष्टि से भी सबल रहेगा। कोई अच्छा व्यापारी, उच्च अधिकारी या प्रशासक आदि होना चाहिए। बुद्धिजीवी (वकील, अध्यापक, साहित्यकार, पत्रकार आदि) भी हो सकता है। अपनी योग्यता और उदारता के बल पर उन्नति करता रहेगा।

परन्तु, अहंकार की मात्रा भी अधिक हो सकती है। स्वभाव में क्रोध, रूखापन आदि कुछ नीचा गिराता है। परन्तु बाद में शत्रुओं पर विजय पाने का भी योग है।

ग्यारहवें घर के शनि का प्रभाव

ग्यारहवें स्थान में निवास करता हुआ शनि अनेक अर्थों में शुभ होता है और जातक पर अच्छा प्रभाव डालता है।

ऐसे जातक को माता-पिता का सुख कम मिलता है। फिर भी उनके सुखी जीवन द्वारा पालित-पोषित होने के कारण बाल्यकाल और किशोरावस्था सुख पूर्वक निकलती है।

धन के विषय में निश्चिन्तता रहती है। माता-पिता द्वारा छोड़े हुए धन को तो सुरक्षित रखता ही है, स्वयं भी धनोपार्जन करता हुआ

अपने को अधिक वैभवशाली बना लेता है।

ऐसा जातक कोई अच्छा व्यापारी हो सकता है और उसके लाभ का स्रोत कोयला, लोहा या मशीनरी आदि का व्यापार होना चाहिए। सम्भव है कि वह कोई मशीनी निर्माता हो जाय।

यदि नौकरी पेशा है तो किसी कोयले या लोहे की खान का अधिकारी, किसी कारखाने का इन्जीनियर, किसी वर्कशाप का व्यवस्थापक आदि हो सकता है।

यह भी सम्भव है कि वह रेलवे के किसी अच्छे पद पर रहे अथवा कम से कम ड्राइवर, फोरमैन आदि तो हो ही सकता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोर तथा अल्पायु अथवा किसी शुभ राशि के योग से सबल और दीर्घायुष्य भी हो सकता है।

बारहवें घर के शनि का प्रभाव

बारहवें स्थान में बैठा हुआ शनि शुभ नहीं समझा जाता। वह अधिक कष्टकारी और परेशान करने वाला होता है।

धन के मामले में ऐसा जातक भाग्यहीन रहता है। पिता द्वारा प्राप्त धन भी सुरक्षित नहीं रख पाता। स्वयं जो कुछ उपार्जन करता है, यह भी व्यय अधिक होने के कारण नहीं टिकता।

धन का जो व्यय होता है वह भी सुकार्य में नहीं, खराब कार्यों में होता है। इसके फलस्वरूप खुशामदियों की संख्या भी बढ़ती है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्यतया ठीक, किन्तु मस्तिष्क में दुर्बलता अथवा मस्तिष्क विकार हो सकता है। मामा को इस जातक से कष्ट मिलने का योग बनता है।

ऐसा जातक क्रोधी, कटुभाषी और अनुदार भी होता है। शत्रुओं से घबराता नहीं और संघर्ष में टिका रहता है।

इस जातक को घर पर रहना नहीं सुहाता। वह भ्रमण में अधिक दिलचस्पी लेता है। विदेश यात्रा के लिए अधिक प्रयत्नशील होता है।

शनि का राशियों के अनुसार शुभाशुभ फल

वृष, मिथुन, तुला, मकर और कुम्भ राशियों पर स्थित शनि अधिक शुभ फलकारी होता है और वह अशुभ फल कम दिखाता है। किन्तु मेष, कर्क, सिंह और वृश्चिक राशियों पर अशुभ अधिक और शुभ कम होता है। शेष राशियों अर्थात् कन्या, धनु और मीन राशियों पर स्थित शनि सामान्य होता है।

□

राहु का शुभाशुभ फल-निर्देश

मकर राशि का अधिपति ग्रह

यह ग्रह मकर राशि का अधिपति है। यह स्वयं प्रकाशित न होने के कारण छाया ग्रह माना जाता है। वह ग्रह यदि शुभ हो तो जातक को सबल, शूरवीर बनाये रखता है। उसके फल स्वरूप जातक मल्ल विद्या में पारंगत पहलवान हो सकता है।

किन्तु अशुभ राहु जातक को चिन्तित अवस्था में डाल देता है। अनेक प्रकार से वह उसके दुर्भाग्य का कारण बन जाता है। बहुत बार पाप कर्मों का कारण भी यही होता है।

इसका स्थानानुसार शुभाशुभ फल जानना आवश्यक होगा, जिसका निरूपण इस प्रकार है—

प्रथम घर के राहु का प्रभाव

यदि राहु प्रथम घर में हो तो जातक को बहुत शक्तिशाली बना देता

है। उससे संघर्ष की सम्भावना देखकर शत्रु घबरा जाते हैं और मुकाबिले का साहस नहीं करते।

ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन अधिक सुखमय नहीं होता, क्योंकि पत्नी से विचार नहीं मिलते और परस्पर अनबन हो जाती है।

परिवार वालों से भी उसकी अनबन रह सकती है। माता को कष्ट होना चाहिए। स्वयं भी मस्तिष्क के किसी विकार या अपस्मार आदि से पीड़ित हो सकता है।

ऐसा जातक स्वावलम्बी नहीं होता। किसी भी कार्य के लिए उसे दूसरों का मुख देखना होता है।

विचारों में उच्चता नहीं होती, इसलिए दूसरों से सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता।

दूसरे घर के राहु का प्रभाव

राहु दूसरे घर में बैठा हो तो शुभ अशुभ दोनों प्रकार के परिणाम व्यक्त करता है।

ऐसा जातक धन और परिवार आदि से वंचित हो जाता है। यदि स्वयं धन का उपार्जन करता है तो व्यय अधिक होने के कारण बचा नहीं पाता। फिर भी कभी कोई ऐसा अवसर आ सकता है कि किसी प्रकार से धन की प्राप्ति हो जाय। यदि शुभ योग हो तो धन संचय की संभावना हो सकती है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐसा जातक आँतों के विकार से पीड़ित हो सकता है। फिर भी उसके शरीर में बल विद्यमान रहता है, इसलिए शत्रुओं से दबता नहीं।

क्रोध अधिक आता है। रूखे स्वभाव और कठोर बचनों के कारण शत्रुओं की संख्या बढ़ती जाती है। यदि कोई शुभ योग उस अवस्था में जातक को सहायता नहीं देता तो घातक योग बन सकता है और तब उसकी हत्या का भय हो सकता है।

तीसरे घर के राहु का प्रभाव

यदि राहु तीसरे घर में बैठा है तो उसे बहुत शक्तिशाली समझना होगा। वह जातक को अत्यन्त बलवान बना देता है।

ऐसा जातक साहसी होगा। साधारण स्थिति से उठकर नामी पहलवान हो सकता है। यदि सेना में हो तो जुम्मेदारी के पद पर पहुँच सकता है। पुलिस में भी उसकी ऐसी ही स्थिति होगी।

परिवार की दृष्टि से भी भरा-पूरा होगा। उसके अनेक भाई तथा बहुत से पुत्र हो सकते हैं। वे सब भी योग्य और शक्तिशाली शरीर के होने चाहिए।

ऐसा मनुष्य विवेकशील होते हुए भी धर्म में अधिक आस्था नहीं रखता। शुभ योग से उसके कष्ट दूर हो जाते हैं तथा वह परदेश में रहने लगता है।

चौथे घर के राहु का प्रभाव

यदि राहु चौथे घर में बैठा हो तो दुःखदायी बन जाता है। उसके कारण सुख की आशा धूमिल पड़ सकती है।

ऐसे जातक को मातृ सुख से शीघ्र वंचित होना पड़ सकता है। पिता के बाद जो भूमि, भवन, धन, वाहन आदि प्राप्त होता है वह भी शीघ्र ही नष्ट होने लगता है। आय घट जाती और व्यय बढ़ जातर है।

पाँचवें घर के राहु का प्रभाव

दाम्पत्य जीवन की दृष्टि से भी इसका सामान्य फल रहना चाहिए। किन्तु यदि कुछ अन्य शुभ योग हो तो उक्त फल में परिवर्तन की बहुत कुछ सम्भावना हो सकती है।

पाँचवें घर में बैठा हुआ राहु अस्थिरता उत्पन्न करता है। इस कारण जातक किसी भी विचार में स्थिर नहीं रह पाता। वह अपने उचित निश्चय को भी बार-बार बदल देता है। इस कारण उसका कोई भी कार्य सफल नहीं हो पाता।

शिक्षा की दृष्टि से जातक बहुत सफल नहीं हो पाता। उसे बीच में पढ़ाई छोड़ देनी होती है। यदि आगे भी पढ़ना चाहता है तो परिस्थितियाँ उसे वैसा नहीं करने देती।

गृहस्थ जीवन सामान्य रहता है। स्त्री दुबली-पतली किन्तु आकर्षक होती है। पुत्र अविवेकी और मुर्ख होते हैं, उनकी संख्या चार हो सकती है।

सामान्य रूप से पाँचवें घर का राहु अशुभ नहीं होता। वरन् अपने प्रभाव से जातक को सौभाग्यशाली बनाता है। जातक को नींद अधिक आती है और वह आलस्य में पड़ा रहकर अपनी उन्नति में स्वयं बाधक हो सकता है।

छठे घर के राहु का प्रभाव

यदि राहु छठे घर में स्थित हो तो शुभ-अशुभ दोनों प्रकार का परिणाम उपस्थित करता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से जातक बात रोगों से पीड़ित रहता है। कमर या पीठ आदि में दर्द तथा उदर रोग हो सकते हैं। अन्य परिवारीजन भी बदर रोग आदि से पीड़ित रह सकते हैं।

जातक साहसी तथा परिश्रमी होगा। वह बड़ी योजनाएँ बनाकर उनकी पूर्ति में जुट जाता है तथा उसे उसमें सफलता भी मिल जाती है। साथ ही जातक के विरोधी भी दब जाते हैं और फिर सिर उठाने का साहस नहीं करते।

शत्रुओं को जातक से अंकित रहना पड़ता है तथा गुण्डे भी उसके मित्र बनने का अवसर देखते हैं।

सातवें घर के राहु का प्रभाव

सातवें घर में बैठा हुआ राहु अधिक शुभ नहीं होता। वह जातक को कुछ परेशानियों में डाले बिना नहीं रहता।

स्वास्थ्य की दृष्टि से दुर्बल तथा बात रोग से पीड़ित होना चाहिए। पत्नी आये दिन रोग ग्रस्त होती रहेगी। सम्भव है कि उसे प्राणान्तक पीड़ा सहनी पड़े। क्योंकि जातक के एक से अधिक विवाहों का योग बनता है।

स्वभाव की दृष्टि से क्रोधी रूखे और खरे वचनों वाला तथा दूसरों की वृद्धि से ईर्ष्या करने वाला भी हो सकता है।

दाम्पत्य जीवन, सामान्य, वरन् खिन्नता प्रद रह सकता है। पत्नी से अनबन स्वयं के आचरण में दोष के कारण पत्नी की उपेक्षा आदि कारण ही पत्नी के लिए घातक सिद्ध होते हैं।

धन के मामले में आत्म निर्भर तो हो सकता है, किन्तु कृपणता से व्यय करना चाहेगा। जबकि उसे बुरे शौक उसे धन का अपव्यय करने की ओर प्रेरित करते रहेंगे।

आठवें घर के राहु का प्रभाव

यदि राहु आठवें घर में विराजमन हो तो वह शुभ कम और अशुभ अधिक होना चाहिए।

ऐसे जातक का स्वास्थ्य कुछ बहुत अच्छा नहीं रहता। वह उदर रोगों से पीड़ित रहने के कारण अधिक परेशानी में रहता है। आंत का कोई रोग, अग्निमांद्य, वायुगोला, रक्तार्श, कब्ज, कांच रोगादि की पीड़ा हो सकती है।

ऐसा व्यक्ति कामुक भी होता है। असंयम के कारण वीर्य दोषों का शिकार हो जाता है।

उसे पितृ-धन की प्राप्ति नहीं हो पाती तथा पारिवारीजनों से झगड़े फिसाद हो सकते हैं। ऐसा जातक परिश्रम से कभी पीछे नहीं हटता।

नवें घन के राहु का प्रभाव

यदि राहु नवें घर में बैठा है तो अशुभ नहीं होगा। यह जातक को सौभाग्यशाली बनाता है।

ऐसा जातक धार्मिक विचार धारा का होता है। दान, धर्म, तीर्थ यात्रा आदि में अधिक रुचि रखता है। उसके चित्त में उदारता होती है तथा वह परोपकार में सदा तत्पर रहता है।

आर्थिक मामलों में भी पीछे नहीं रहता। धनोपार्जन में उसे अच्छी सफलता मिलती है। पैसे की कभी तंगी नहीं रहती तथा अपने परिवारीजनों के पालन-पोषण में भी वह समर्थ होता है।

यदि शुभ योग नहीं होता तो अशुभ फल प्रकट कर सकता है। उस स्थिति में स्वभाव में दुष्टता आ जाती है और तब वह गुरुजनों का निरादर करने में भी नहीं चूकता।

किन्तु शुभ योग उसमें सद्गुणों की वृद्धि करता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कराता है।

दसवें घर के राहु का प्रभाव

यदि राहु दसवें घर में हो तो शुभ होता है। वह जातक को बहुत लाभकारी हो सकता है।

ऐसा जातक अच्छा रोजगार प्राप्त करता है। यदि नौकरी करता है तो दिनों दिन उन्नति होती जाती है और उच्च पद की प्राप्ति सम्भव होती है।

यदि व्यापार करता है तो भी उसे पूर्ण सफलता मिलती है और पर्याप्त लाभ होता है।

दाम्पत्य जीवन सामान्य होता है, किन्तु सुन्दर स्त्रियों को आकर्षित करने और उनका प्रेम प्राप्त करने में सफलता मिलती है। पौरुष की दृष्टि से भी सबल होता है।

उसे बुरे व्यक्तियों की संगति से बुरे शौक लग जाते हैं। इस कारण धन का अपव्यय भी खूब होता है।

यदि शुभ योग नहीं होता तो जुआ खेलने और शराब पीने की

आदत पड़ जाती है। इसके फलस्वरूप धन-नाश के साथ स्वास्थ्य भी चौपट हो जाता है।

ग्यारहवें घर में राहु का प्रभाव

ग्यारहवें घर में स्थिति हुआ राहु जातक सदा सावधान रखता है। इसके फलस्वरूप वह प्रत्येक कार्य में तथा प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सतर्क दृष्टि से रखता है।

आर्थिक मामलों में भी पीछे नहीं रखता। परिश्रम के बल पर धन प्राप्ति भी पर्याप्त मात्रा में होती है। उसका कभी कोई कार्य धन की कमी के कारण रुकता नहीं।

दाम्पत्य जीवन में सुखी रहता है। पुत्रों की प्राप्ति का योग रहता है। स्त्री सुन्दर, सुशील, आज्ञा मानने वाली, व्यवहार कुशल और विनम्र होती है।

ऐसा जातक भ्रमण में दिलचस्पी रखता है। प्राकृतिक दृश्यों और वस्तुओं से अधिक प्रेम होना चाहिए।

बारहवें घर में राहु का प्रभाव

यदि राहु बारहवें घर में वास करता है तो शुभ नहीं होता। वह जातक को परेशानियों में फँसाये रहता है।

ऐसा जातक शिक्षित, विवेक बुद्धि से सम्पन्न, अध्ययन और चिन्तनशील तथा धार्मिक ग्रन्थों में रुचि रखने वाला होता है। वह दान, धर्म में भी अधिक रुचि रखता है।

किन्तु अशुभ योग के कारण यदि दुष्टों की संगति में फँस जाता है तो धर्म-कर्म को भूल जाता तथा सज्जनों और गुरुजनों से द्वेष करने लगता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ऐसा जातक परेशान रहता है। उसे वात रोग, आंग रोग, पार्श्व शूल, अर्श, मलावरोध तथा उदर रोग आदि होने चाहिए।

ऐसा मनुष्य कामुक भी हो सकता है। यह सम्भव है कि उसे राजदण्ड भी भुगतना पड़े।

किन्तु साहसी और परिश्रमी भी होता है। इसलिए बुरे से बुरे समय को निकालने में सफल हो जाता है।

राहु का राशियों के अनुसार शुभाशुभ फल

मिथुन, कन्या, तुला, मकर और मीन राशियों पर स्थित राहु अधिक शुभ होता है, जबकि कर्क और सिंह राशियों पर स्थित राहु अधिक शुभ होता है, जबकि कर्क, सिंह, राशियों पर अशुभ माना जाता है। शेष राशियों पर उसकी स्थिति सामान्य फल वाली होती है। राहु ग्रह को शनि के समान फलकारी है।

□

केतु का शुभाशुभ फल-निर्देश

मंगल की कोटि का ग्रह

केतु भी इसी प्रकार का ग्रह है, जो कि क्रूर ग्रहों की कोटि में आता है इसका फल प्रायः मंगल ग्रह के समान मानते हैं। यदि केतु शुभ है तो मनुष्य अत्यन्त सौभाग्यशाली तथा वैभव सम्पन्न होता है, जबकि अशुभ केतु ग्रह जातक के लिए दुर्भाग्य का कारण रहता है। यदि अन्य ग्रह शुभ हों तो भी केतु के अशुभ होने की स्थिति में मनुष्य का भाग्य अधर में लटका रहता है।

प्रथम घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु प्रथम घर पर हो प्रायः अधिक शुभ नहीं होता। ऐसा जातक अनेक प्रकार की परेशानियों को अनुभव करता है।

शिक्षा की दृष्टि से उच्च शिक्षित हो तो भी उसमें विवेक की कमी होती है। उसका मन चंचल तथा बुद्धि अस्थिर होती है। इस कारण किसी भी कार्य को आरम्भ करके भी पूरा नहीं कर पाता।

ऐसे जातक में साहस की कमी होती है। शत्रुओं से ही नहीं, बन्धु, बान्धवों से भी भय रहता है। क्योंकि ये सभी उसे परेशान करते रहते हैं।

किन्तु यदि यह किसी शुभ राशि पर हो तो शुभ फल प्रकट करता है। उसके फल स्वरूप जातक धनवान, हृष्ट-पुष्ट तथा कार्य में मन लगाने वाला और परिश्रमी होता है।

दूसरे घर के केतु का प्रभाव

दूसरे घर पर स्थिति केतु शुभाशुभ फल व्यक्त करने वाला होता है। यदि वह शुभ राशि पर हो तो जातक को धन, सन्तान से सम्पन्न बनाता है।

शुभ राशि के केतु का फल यश के रूप में भी प्राप्त होता है। उस स्थिति में जातक को अपने मित्रों, सहयोगियों तथा अन्य व्यक्तियों के द्वारा सम्मान की प्राप्ति होती है।

यदि दूसरे घर का केतु किसी अशुभ योग के साथ हो तो अशुभ फल प्रदर्शित करता है। उसे धन के मामले में कष्ट उठाना होता है। पिता से तथा अन्य स्रोत से अधिक धन प्राप्त होने की आशा धूमिल हो जाती है। यदि धन मिलता भी है तो स्वकल्प अंश के रूप में। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी दुर्बल तथा मुख पाक आदि रोग से पीड़ित हो सकता है।

तीसरे घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु तीसरे घर में हो तो शुभ होगा। वह जातक को अत्यन्त पराक्रमी और सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। उसके पास धन की भी कमी नहीं होती।

परिश्रमी होने के कारण सभी कार्यों में उत्साह दिखाता है। उसे व्यापार, नौकरी आदि में उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। ऐसा उच्च पद की प्राप्ति में भी सफल रहता है।

उसके प्रभाव से शत्रु सिर नहीं उठा पाते। समाज में दबदबा बढ़ जाता है। सभी वर्ग के व्यक्ति सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

चौथे घर में केतु का प्रभाव

किन्तु अशुभ योग होने पर प्रभाव बदल जाता है। जातक को अकारण ही चिन्ता और भय की प्राप्ति हो जाती है। स्वभाव में चंचलता बढ़ जाती है तथा अस्थिरता के कारण बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं।

यदि केतु का चौथे घर में वास हो तो प्रायः अशुभ होता है। उसके कारण जातक को मातृ-सुख की प्राप्ति नहीं होती।

गृहस्थ जीवन में भी जातक सुखी नहीं होता। उसके मित्र द्वेषी हो जाते हैं। पत्नी से भी अनबन रह सकती है।

यद्यपि जातक का जन्म सम्पन्न घर में होता है, तो भी पिता का धन धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है।

वयस्क होने पर धनोपार्जन का प्रयत्न करने पर भी अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

किन्तु शुभ योग के साथ हो तो उसका अशुभ फल नष्ट हो जाता है तथा जातक को सुख की सम्भावना होती है।

पाँचवें घर में केतु का प्रभाव

यदि केतु का वास पाँचवें घर में है तो भी प्रायः अशुभ ही समझिये। ऐसा जातक अपनी उन्नति में समर्थ नहीं होता।

पारिवारिक जीवन में अशान्ति रहती है। भाइयों की ओर अवज्ञा और तिरस्कार का व्यवहार चित्त को और भी खिन्न बना देता है। दाम्पत्य जीवन भी सामान्य होता है तथा सन्तान बड़ी आयु में उत्पन्न हो पाती है।

विवेक की कमी रहती, इस कारण कोई उपयुक्त व्यवसाय नहीं चुन पाता। व्यापार में हानि तथा पराधीन रहना होता है। यह भी सम्भव है कि दूसरों की नौकरी करनी पड़े।

यदि पाँचवें घर में केतु को शुभ योग प्राप्त हो तो उक्त अशुभ फल में परिवर्तन हो सकता है।

छठे घर के केतु का प्रभाव

छठे घर में वास करता हुआ केतु अधिकांश में शुभ समझा जाता है। वह अर्थ के मामले में जातक को आत्म निर्भर बनाता है और रोग आदि को भी नष्ट करता है।

ऐसे जातक के स्वभाव में झगड़ालूपन होता है। बात-बात पर झगड़ना उसकी आदत बन जाती है। स्वभाव का रूखापन मित्रों को भी विरोधी बना देता है।

यदि वह शुभ राशि के साथ हो तो जातक को सुखी और सम्पन्न बनाता है। जबकि अशुभ राशि के साथ का केतु अशुभ फल प्रदर्शित करता है।

सातवें घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु का स्थान सातवाँ हो तो प्रायः अशुभ होता है। ऐसा जातक अधिक चिन्ता ग्रस्त रहना चाहिए।

दाम्पत्य जीवन सामान्य रहता है। स्त्री दुबली-पतली किन्तु सुन्दर होती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी दम्पत्ति सामान्य ही होते हैं।

किन्तु पति-पत्नी में मन-मुटाव रह सकता है। चित्त खिन्न रहता और व्यर्थ की चिन्ता सताती रहती है। जातक उस स्थिति से ऊब कर सब कुछ करने पर उतारू हो जाता है। ऐसे जातक के विषय में जल में कूद कर आत्मघात कर लेने की आशंका हो सकती है।

आठवें घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु आठवें घर में है तो वह अधिकांश में शुभ होना चाहिए वह जातक के जीवन को सुखी बनाने में सहायक होता है।

ऐसा जातक स्वास्थ्य की दृष्टि से सबल रहता है। कब्ज के साथ अर्श रोग सम्भव हो सकता है। यह भी सम्भव है कि जातक घोड़े आदि से गिर कर घायल हो जाय।

आर्थिक मामलों में ऐसा जातक कमजोर होता है, तो भी समाज में उसकी प्रतिष्ठा और कीर्ति रहती हैं। वह उदार मन का और परोपकारी होता है तथा सभी के दुःख-दर्द में काम आता है।

दाम्पत्य जीवन सामान्य होता है। स्त्रियों के प्रति अधिक लगाव न रखने के कारण कुछ अशान्ति भी बनी रहती है। यदि आठवें घर के केतु के साथ शुभ राशि का योग हो तो सुख की प्राप्ति सम्भव है।

नवें घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु नवें घर में हो तो वह जातक को भाग्यवान बना सकता है। वह किसी उच्च पदस्थ अथवा जन-नेता हो सकता है।

आर्थिक मामलों में पूर्ण रूप से सबल होता है। उसकी सम्पन्नता बढ़ती जाती है। धन की आमदनी अधिक और व्यय बहुत कम होता है। कृपणता के कारण धन संचित होता जाता है।

किन्तु, धार्मिक भावना के कारण ऐसा जातक दान, धर्म, परोपकार, तीर्थयात्रा आदि में व्यय करने से भी पीछे नहीं रहता। दूसरों को कष्ट में देखकर उनकी सहायता में तत्पर रहता है।

दसवें घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु दसवें घर में बैठा हो तो अधिक शुभ माना जाता है और वह अपने प्रभाव से जातक को सौभाग्यशाली बना देता है।

ऐसा जातक धन के मामले में आत्म निर्भर और सम्पन्न रहता है। उसे धन की कमी भी नहीं रहती।

दाम्पत्य जीवन में भी उसे सरसता मिलती है। पत्नी विनम्र और सुन्दरी होती हैं। सन्तानादि भी पर्याप्त रहती है। किन्तु अशुभ राशि पर हो तो विपरीत फल दिखाता है।

ग्यारहवें घर में स्थित केतु शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का फल व्यक्त करता है। ऐसा जातक सदा स्वस्थ रहता तथा किसी रोग से पीड़ित नहीं होता।

धन के मामले में भी आत्म निर्भर रहता है। उसे कभी अर्थ संकट परेशान नहीं करता।

गृहस्थ जीवन सामान्य रहता है। पुत्र आदि अशिक्षित और अविवेकी रहते हैं। पत्नी दुर्बल या कटु भाषिणी हो सकती है।

स्वास्थ्य सामान्य किन्तु उदर रोग से पीड़ित होना चाहिए। यदि शुभ योग के साथ है तो सुखी और अशुभ योग के साथ है तो जातक को दुःखी बना सकता है।

बारहवें घर के केतु का प्रभाव

यदि केतु बारहवें घर में है तो अधिक शुभ होगा। यह जातक को सम्पन्न और सौभाग्यशाली बनाता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य, कुछ दुर्बल, नेत्र रोग या रक्तचाप आदि से प्रभावित होना चाहिए। बाँह, कमर, पाँव आदि में दर्द रह सकता है। फिर भी सशक्त और मनोयोगी होगा।

पारिवारिक जीवन सुखी। अनेक सन्तानों से सम्पन्न, सुयोग्य पुत्र-पुत्रियाँ तथा स्नेहमयी पत्नी आदि के कारण मन में सदा हर्ष बना रहना चाहिए।

विद्या की दृष्टि से शिक्षित, विचारशील, विवेकी, यद्यपि सभी साहित्यिक विद्याओं में सफल लेखक तथा तेजस्वी होगा। साहित्यकार, पत्रकार आदि भी हो सकता है।

ऐसा जातक समाज में प्रतिष्ठित, उच्च पद पर आसीन हो सकता है। यदि किसी से विवाद हो तो मुकदमे से विजय की सम्भावना रहेगी।

धन का दुरुपयोग नहीं करेगा, यदि व्यय करेगा तो शुभ कार्यों में धन की कमी नहीं रहेगी, कोई कार्य नहीं रुकेगा, किन्तु यह भी सम्भव है कि जितना धन-लाभ हो, वह सब खर्च हो जाता है।

बारहवें घर का केतु शुभ योग के साथ हो तो जातक को सुखी बनाता है। किन्तु अशुभ योग के साथ का केतु विपरीत फल प्रदर्शित कर सकता है।

केतु का राशियों के अनुसार शुभाशुभ फल

मिथुन, कन्या, धन, मकर और मीन राशियों के साथ केतु अधिक शुभ फल देता है। यदि अन्य ग्रहों का अशुभ फल हो तो भी केतु के शुभ होने से दब जाता है। किंतु कर्क और सिंह राशियों का केतु अशुभ फल दिखाता है।

फिर भी अन्य शुभ ग्रहों का प्रभाव भी पड़ेगा ही। उनके बल के आगे केतु का अशुभ होना शुभ में परिवर्तित हो सकता है।

ग्रहों का मिश्रित योग

किसी भी लग्न कुण्डली को विवेचनात्मक दृष्टि से देखिये और सभी ग्रहों का एक-एक कर मिलान कीजिये तो शुभाशुभ फल का निश्चय बहुत कुछ हो सकता है।

अनेक कुण्डलियों में एक ही घर में एक से अधिक गृह उपस्थित रहते हैं। वे यदि सभी मित्र हैं तो बहुत ही सबल हो जाते हैं। किंतु यदि परस्पर शत्रु भाव रखते हैं तो एक दूसरे के कार्य में रोड़े अटकायेंगे और उसके प्रभाव को नष्ट करने की चेष्टा करेंगे।

यदि उक्त तथ्यों पर दृष्टि रखते हुए फलादेश का निश्चय करें तो वह बहुत कुछ सही बैठ सकेगा।

विश्व ओंकार परिवार की स्थापना

ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ व स्वाभाविक नाम है। इसे मन्त्र शिरोमणि, मन्त्र सम्राट, मन्त्र राज, बीजमन्त्र और मन्त्रों का सेतु उपाधियों से विभूषित किया जाता है। इसे श्रेष्ठतम, महानतम और पवित्रतम मन्त्र की संज्ञा भी दी जाती है। सारे विश्व में इसकी तुलना का कोई मन्त्र नहीं है। यह सभी मन्त्रों को अपनी शक्ति से प्रभावित करता है। सभी मन्त्रों की शक्ति ओंकार की ही शक्ति है। यह शक्ति और सिद्धिदाता है। भौतिक व आर्थिक उत्थान के लिए कोई भी दूसरी श्रेष्ठ व सरल साधना नहीं है।

सभी ऋषि मुनि ॐ की शक्ति और साधना से ही अपना आत्मिक उत्थान करते रहे हैं। परन्तु आज आश्चर्य है कि ॐ का अन्य मन्त्रों की तरह व्यापक प्रचार नहीं है। इस कमी को अनुभव करते हुए विश्व ओंकार परिवार की स्थापना की गई है। आप भी अपने यहाँ इसका प्रचार केन्द्र स्थापित करें। शाखा स्थापना का सारा साहित्य निःशुल्क रूप से प्रधान कार्यालय, बरेली से मंगवा लें। आपको केवल इतना करना है कि स्वयं ओंकारोपासना आरम्भ करके ४ अन्य मित्रों व सम्बन्धियों को प्रेरित करें और सभी संकल्प पत्र व शाखा स्थापना का प्रार्थना पत्र प्रधान कार्यालय को भिजवा दें। इस वर्ष ३३००० साधकों द्वारा १५०० करोड़ मन्त्रों के जप का महापुरश्चरण पूर्ण किया जाना है। आशा है कि ओंकार को जन-जन का मन्त्र बताने के श्रेष्ठतम आध्यात्मिक महान पुण्य के भागी बनेंगे।

ओंकार रहस्य, ओंकार दैनिक विधि, ओंकार चालीसा, ओंकार कीर्तन और ओंकार भजनावली नामक १५ पैसे मूल्य वाली सस्ती पुस्तिकाओं को अधिक से अधिक संख्या में वितरित करें।

विनीत :

विश्व ओंकार परिवार **चमनलाल गौतम**

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर बरेली—२४३००३ (उ० प्र०)

एक मौन व्यक्तित्व का मौन समर्पण

×

डा० चमनलाल गौतम—एक व्यक्ति का नहीं वरन् ऐसे विशाल धार्मिक संस्थान का नाम है जो सतत् २४ वर्षों से ऋषि प्रणीत आर्ष साहित्य के शीघ्र प्रकाशन और व्यापक साहित्य प्रचार का कार्य देश-विदेश में करते रहे हैं। यह उनकी तप साधना का ही परिणाम है कि किसी भी आर्थिक सहयोग के बिना वेद उपनिषद्, दर्शन, स्मृतियाँ, पुराण व मन्त्र-तन्त्र आदि साधनात्मक साहित्य की ३०० से अधिक पुस्तकों को प्रकाशित करके घर-घर में पहुँचाने की पवित्रतम साधना कर रहे हैं। मन्त्र-तन्त्र, योग, वेदान्त व अन्य धार्मिक विषयों पर १५० खोजपूर्ण ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन एक ऐसा अविस्मरणीय व असाधारण कार्य है जिस पर उनके अथक श्रम, गम्भीर अध्ययन, तप प्रतिभा और मौलिक सूझ-बूझ की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। ध्यान और त्राटक पर उनके वैज्ञानिक प्रयोग प्राचीन ऋषियों की तप साधना की याद दिलाते हैं। इन प्रयोगों और अनुभूतियों पर रचा साहित्य स्वयं में एक आश्चर्य है। स्वस्थ साहित्य की रचना और प्रचार का उनकी जीवन योजना का यह पहला चरण पूरा हुआ।

पिछले २४ वर्षों से लगातार चल रही आध्यात्मिक साधना के महापुरश्चरण का दूसरा चरण भी समाप्त हो रहा है। तीसरे चरण आध्यात्मिक साधनाओं और अनुभूतियों के विश्वव्यापी विस्तार का शुभारम्भ विश्व ओंकार परिवार की स्थापना के साथ बसन्त पंचमी की परम पवित्र वेला के साथ हो गया है। अतः उनका शेष जीवन तीसरे चरण की सफलता—ओंकर परिवार की शाखाओं के व्यापक विस्तार के माध्यम से करोड़ों व्यक्तियों को ओंकार साधना में प्रविष्ट करके उच्च आध्यात्मिक भूमिका के प्रशस्त करना, ओंकार अथवा उच्च आध्यात्मिक साहित्य की रचना व प्रसार को समर्पित है।

—स्वामी सत्य भक्त

खोजपूर्ण ज्योतिष साहि

१. मानसागरी (भा. टी.)	२४)
२. प्रारम्भिक ज्योतिष विज्ञान	७)५०
३. द्वादश ग्रह फलादेश विज्ञान	१२)
४. महादशा विज्ञान	७)५०
५. ज्योतिष योग रत्नाकर	६)५०
६. मुहूर्त ज्योतिष विज्ञान	५)
७. रोग, मृत्यु और ज्योतिष	६)५०
८. रत्न ज्योतिष विज्ञान	७)५०
९. ज्योतिष और ग्रह पीड़ा निवारण	४)५०
१०. सरल अंक ज्योतिष	५)५०
११. ज्योतिष और जन्म लग्न	४)५०
१२. भाग्य और आकृति विज्ञान	४)
१३. जन्मकुण्डली (निर्माण और अध्ययन)	३)७५
१४. हस्तरेखा महा-विज्ञान	१२)
१५. हस्तरेखायें	५)
१६. स्त्री जातक विज्ञान	१)५०
१७. भाग्य रेखायें	५)
१८. वर्षफल कैसे बनायें ?	४)५०
१९. प्रश्न ज्योतिष विज्ञान	६)५०
२०. स्वप्न ज्योतिष विज्ञान	४)५०
२१. राशि ज्योतिष विज्ञान	३)७५
२२. फलित ज्योतिष विज्ञान	४)
२३. शकुन ज्योतिष विज्ञान	३)७५
२४. ज्योतिष और आर्थिक समस्याएं	४)५०
२५. मुहूर्त चिन्तामणि (भा. टी.)	१०)
२६. आकस्मिक धन लाभ के योग	३)

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली-२४३००३ (उ० प्र०)